संस्कृत-धातु-कोषः

(विस्तृत-भाषार्थ-सहितः)

युधिष्ठिर मीमांसक

ओ३म्

संस्कृत-धातु-कोषः

(विस्तृत-भाषार्थ-सहितः)

सम्पादकः:-
युधिष्ठिरो मीमांसकः

प्रकाशक-
रामलाल कपूर ट्रस्ट
ग्राम रेवली, पो॰ शाहपुरतुर्क
जि॰ सोनीपत- १३१००१
(हरियाणा)

प्राप्ति-स्थान-
१. रामलाल कपूर एण्ड संस
पेपर मर्चेन्ट्स्, २५९६,
नई सड़क, दिल्ली।

२. गोविन्दराम हासानन्द
नई सड़क, दिल्ली

तृतीय वार- १०००
आश्विन, सं॰ २०५९,
सितम्बर, सन् २००२

मूल्यम् - ३०.००

मुद्रक-
कमाल प्रिंटिंग प्रेस
नई सड़क, दिल्ली

सम्पादकीय

संस्कृतभाषा के सभी शब्द आख्यातज (धातुओं से निष्पन्न) हैं, ऐसा निरुक्त-शास्त्र के प्रवक्ता यास्क आदि तथा वैयाकरणों में शाकटायन आचार्य का मत है[1]। वैदिक शब्द तो सभी आचार्यों के मत में धातुज ही हैं। लौकिक तथा वैदिक शब्दों की मूल प्रकृतियों (धातुओं) का निर्देश वैयाकरणों ने अपने-अपने धातुपाठों में किया है। सम्प्रति पाणिनीय धातुपाठ ही अधिक प्रचलित है। उसके भी कई पाठ हैं[2]। पाणिनि प्रभृति आचार्यों ने धातुओं के अर्थ संस्कृत भाषा में और वह भी सूत्रात्मक शैली में संक्षेप से दिये हैं। अतः उन का हिन्दी में क्या अर्थ है, वह बहुधा वैयाकरण जन भी बताने में असमर्थ रहते हैं। इतना ही नहीं, धातुएं अनेकार्थक हैं, जो अर्थ धातुपाठ में लिखे हैं, उन से भिन्न अर्थों में भी वे प्रयुक्त होती हैं[3]। इसके साथ ही उपसर्गों के योग से धातुओं के अर्थ भी बदल जाते हैं[4]। अतः संस्कृत भाषा के प्रयोग के लिये धातुओं को विविध अर्थों एवं उपसर्गों के योग से हुए भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध होना अत्यावश्यक है।

पाणिनि से भी प्राचीन काशकृत्स्न का धातुपाठ भी उपलब्ध हो गया है। उस में पाणिनीय धातुपाठ की अपेक्षा ८०० धातुएं भिन्न हैं। इस धात्वर्थ-

---

१. नामानि सर्वाण्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च। निरुक्त १।१२॥ नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्। महा० ३।३।१॥

२. विभिन्न पाठों के परिज्ञान के लिये हमारे द्वारा सम्पादित 'क्षीरतरङ्गिणी' का उपोद्घात पृष्ठ ११-१८ तथा 'संस्कृतव्याकरण शास्त्र का इतिहास' भाग २, पृष्ठ ५१-६२ देखें।

३. बह्वर्था अपि धातवो भवन्ति। तद्यथा—वपिः प्रकिरणे दृष्टः, छेदने चापि वर्तते—केशश्मश्रु वपतीति……। महा० १।३।१ तथा अन्यत्र।

४. यथा—तिष्ठति=ठहरना है, प्रतिष्ठति=जाता है, आतिष्ठति=स्वीकार करता है, सन्तिष्ठते=समाप्त होता है। इसी प्रकार भवति, संभवति, प्रभवति, आदि के भी पृथक्-पृथक् अर्थ हैं।

कोश में पाणिनीय धातुपाठ में उल्लिखित धातुओं का ही संग्रह किया है, परन्तु पाणिनीय धातुपाठ के सभी उपलब्ध पाठों का आश्रय लेने का प्रयत्न किया है।

संस्कृतभाषा में धात्वर्थों का निर्देश धातुवृत्तियों के अतिरिक्त आख्यात-चन्द्रिका, कविरहस्य, क्रियाकलाप, क्रियापर्यायदीपिका और क्रियाकोष नामक ग्रन्थों में भी उपलब्ध होता है। आर्यभाषा (हिन्दी) में धात्वर्थ ज्ञान के लिये बृहत्काय संस्कृत हिन्दी कोशों का आश्रय लेना पड़ता है, जो कि प्रत्येक संस्कृत प्रेमी के लिये उपलब्ध करना कठिन है।

इस कठिनाई को दूर करने के लिये ६४ वर्ष पूर्व 'संस्कृत-धातु-कोष' नाम का एक ग्रन्थ काले इत्युपाह्व काशीनाथात्मज पं० गणेश शर्मा ने बनाया था, और लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई से वि० सं० १९६३ में प्रकाशित हुआ था। यह ग्रन्थ भी लगभग २५-३० वर्षों से अप्राप्य है। लगभग २५ वर्ष पूर्व हमें इस की एक प्रति बड़ी कठिनाई से उपलब्ध हुई थी। तभी से मेरा इस प्रकार का एक संग्रह प्रकाशित करने का विचार था, परन्तु मैं यह कार्य न कर सका। अब श्री हरिकृष्ण जी मलिक न्यायाधीश देहली के सहयोग से मेरा चिरकालीन संकल्प मूर्तरूप धारण कर रहा है।

यद्यपि मेरे इस ग्रन्थ का प्रेरक एवं भाषार्थ का मुख्य आश्रयभूत उक्त 'संस्कृत-धातु-कोष' ही है, तथापि मैंने इस को अधिक उपयोगी बनाने के लिये पाणिनीय मूल धातुपाठानुसार प्रत्येक धातु का रूप और धात्वर्थ का निर्देश कर दिया है। इस कारण इस का स्वरूप पूर्व-मुद्रित ग्रन्थ से भिन्न स्वतन्त्र ग्रन्थवत् हो गया है। मूलधातु के आगे इत्संज्ञा और नुम् आदि कार्य करने पर धातु का जो व्यवहारोपयोगी अंश बनता है, उस का निर्देश पाणिनीय धातुरूप के आगे कोष्ठक में दिया है। उक्त धातु धातुपाठ में किस स्थान में पढ़ी है, इसका सरलता से ज्ञान कराने के लिये गणसंख्या के साथ-साथ धातुसूत्र संख्या भी दे दी है। धातुसूत्र संख्या 'क्षीरतरङ्गिणी' और 'माधवीया धातुवृत्ति' से पृथक्-पृथक् है[1]। मैंने रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत) द्वारा जो धातुपाठ प्रकाशित किया है, उसमें भी धातुसूत्रों की संख्या दी है। इस ग्रन्थ के अल्प मूल्य में सुलभ होने के कारण हमने

---

१. पाणिनीय धातुपाठ में धातुसूत्र संख्या का प्रथम बार निर्देश हमने स्व-सम्पादित 'क्षीरतरङ्गिणी' में किया था, इसी को उपजीव्य मान कर सायणीय धातुवृत्ति के सम्पादक स्वामी द्वारकाप्रसाद शास्त्री ने भी धातुसूत्र संख्या का निर्देश स्वसम्पादित संस्करण में किया है।

इसी के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ में धातुसूत्र संख्या दी है। धातुपाठ के विभिन्न पाठों में पाठान्तर रूप से विद्यमान धातुओं का भी इस में संग्रह कर दिया है। इस प्रकार हमने पूर्वमुद्रित ग्रन्थ को पाणिनीय धातुपाठानुसारी बनाने के लिये उस में अनेक स्थानों पर क्रम-परिवर्तन वा कुछ न्यूनाधिक्य भी कर दिया है। दूसरे शब्दों में हमने उक्त ग्रन्थ को एक नया रूप दे दिया है।

श्री हरिकृष्ण जी मलिक भारतीय वैदिक संस्कृति और उसके आश्रयभूत आर्षग्रन्थों के परम भक्त हैं। आपने भारतीय वैदिक संस्कृति तथा आर्षग्रन्थों के प्रचार-प्रसार के लिए एक धर्मार्थ न्यास (ट्रस्ट) बनाया है, उस के द्वारा आर्ष-ग्रन्थों की व्याख्या एवं प्रकाशन की व्यापक योजना बनाई जा रही है।

महाभाष्य आर्यभाषा (हिन्दी) व्याख्या

श्री मलिक जी की महाभाष्य की सरल हिन्दी व्याख्या प्रकाशित करने की इच्छा थी। मुझे वह गत ४-५ वर्षों में कई बार इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये कह चुके हैं, पर मैं इस कार्य को करने में असमर्थ रहा। अब १५ सितम्बर १९७० से उक्त कार्य आरम्भ हो गया है, और आशा है शीघ्र ही इसका मुद्रण भी आरम्भ हो जायेगा। इस ग्रन्थ की व्याख्या में यह ध्यान रखा गया है कि संस्कृत व्याकरण में कुछ प्रवेश रखने वाला व्यक्ति इस आर्यभाषा व्याख्या के आधार पर महाभाष्य को समझ सके। इस कारण कहीं कहीं व्याख्या विस्तृत भी करनी पड़ी[1]।

हमारा पूरा विश्वास है कि कर्तव्यनिष्ठा से आरम्भ किया गया यह न्यास देश-विदेश में भारतीय वैदिक संस्कृति और उस के आधारभूत आर्षग्रन्थों के प्रचार प्रसार द्वारा मानव कल्याण में अपना महत्त्वपूर्ण योग देगा।

जिज्ञासु-शोध-प्रतिष्ठान
रामलाल कपूर ट्रस्ट,
बहालगढ़ (सोनीपत)

विदुषां वशंवदः—
युधिष्ठिर मीमांसक

---

१. महाभाष्य की हिन्दी व्याख्या प्रथम द्वितीय अध्याय तीन भागों में छप चुकी है। ३-४ वर्ष से स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण इसे मैं समाप्त नहीं कर सका।—युधिष्ठिर मीमांसक

प्रकाशकीय वक्तव्य

पं० गणेश शर्मा ने वि० सं० १९६३ में संस्कृत-धातु-कोष नामक पुस्तिका की रचना करके बम्बई से प्रकाशित कराई थी। महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने अध्ययन काल में उससे लाभ उठाया था। वह पुस्तिका दुर्लभ हो गई थी और संस्कृत का अध्ययन करने वाले छात्रों को धातुओं के अर्थ एवं रूप का ज्ञान कराने वाली कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं हो रही थी। ऐसी स्थिति में श्रद्धेय मीमांसक जी ने श्री हरिकृष्ण मलिक, न्यायाधीश दिल्ली के आर्थिक सहयोग से संस्कृत-धातु-कोष के प्रकाशन का निर्णय किया।

श्री पण्डित जी ने अनेक व्यस्तताओं और स्वास्थ्य-बाधाओं के बावजूद उक्त पुस्तक को नया कलेवर प्रदान किया। पाणिनीय धातुपाठ के अनुसार धातुओं के रूप रखे गये और अर्थ निर्देश किये गये। धातुओं से बनने वाले व्यावहारिक रूपों के सन्निवेश के साथ हिन्दी भाषा में अर्थों का उल्लेख भी किया गया। इसके अतिरिक्त उपसर्ग लगने से धातु के अर्थों में होने वाले परिवर्तन को भी दर्शाया गया। इस प्रकार 'संस्कृत-धातु-कोष' अपने अभिनव रूप में प्रकट हुआ। इसका प्रकाशन रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से प्रथम बार विक्रमी संवत् २०४६ में हुआ।

यह पुस्तक अपनी विशेषताओं के कारण संस्कृत का अध्ययन करने वाले छात्रों में लोकप्रिय हो गई। इसलिए इस का प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया। श्री हरिकृष्ण मलिक और महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक परलोकवासी हो चुके हैं। उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए ट्रस्ट ने यह प्रयास किया है, इस पुस्तक को उत्तम कागज-छपाई-साज-सज्जा से युक्त करके प्रकाशित किया है। सभी वस्तुओं पर मंहगाई का प्रभाव होने के कारण मूल्य में वृद्धि करना अनिवार्य था। आशा है, पाठकवर्ग इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक से लाभान्वित होगा।

मन्त्री—

१३ मार्च १९९६ रामलाल कपूर ट्रस्ट

संस्कृत-धातु-कोषः

विस्तृत-भाषार्थ-सहितः

ग्रन्थ में प्रयुक्त संकेतों का विवरण

संख्याएं—धातु के आगे कोष्ठक में दी गई संख्याएं क्रमशः गण और उस गण के उस धातु-सूत्र की है, जिस धातु-सूत्र में वह धातु पढ़ी गई है। यथा—अकि (अङ्क्) कुटिलायां गतौ (१।५३८) अर्थात् अकि धातु धातु-पाठ में भ्वादिगण के ५३८ वें धातु-सूत्र में पठित है। धातु-सूत्र संख्या 'रामलाल कपूर ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित धातुपाठ के संस्करण के अनुसार है।

गण संख्या इस प्रकार समझें—

१. भ्वादि-गण	७. रुधादि-गण
२, अदादि-गण	८. तनादि-गण
३, जुहोत्यादि-गण	९. क्र्यादि-गण
४. दिवादि-गण	१०. चुरादि-गण
५. स्वादि-गण	११. कण्ड्वादि-गण
६. तुदादि-गण	

प०—परस्मैपद, आ०—आत्मनेपद, उ०—उभयपद।

धातु का मूल रूप—धातु-निर्देश में आरम्भ के कुछ पृष्ठों में अन्त्य स्वर या व्यञ्जन के लोप हो जाने पर धातु का जो मूल रूप बचता है, उस का निर्देश कोष्ठक में कराया हैं। जैसे—अंश (अश्) समाघाते। परन्तु आगे चल कर केवल इदित् धातुओं या जिन के अन्त्य के अनेक वर्णों का लोप होता है, उन्हीं का मूल दर्शाया है। जहां अन्त्य अ ई ञ् ङ् आदि का लोप होता है, उन का मूल रूप स्वयं समझ लेना चाहिये।

इदित्—जिन धातुओं का अन्त्य इकार का लोप होता है, उन को अन्त्य व्यञ्जन से पूर्व नुम्—'न्' का आगम होकर उसे पररूप हो जाता है। यथा—अकि=अन्क्=अङ्क्, अचि=अन्च्=अञ्च्।

ओ३म्

संस्कृत-धातु-कोषः

विस्तृत-भाषार्थ-सहितः

अ

अंश (अंश्) समाघाते (१०।३४५, पाठा०[1], उ० अंशयति, ते) १ विभाग करना, बांटना।

अंस (अंस्) समाघाते (१०।३४५, उ०, अंसयति, ते) १ विभाग करना, बांटना।

अक (अक्) कुटिलायां गतौ[2] (१।५३८, प०, अकति) १ जाना. २ टेढ़ा जाना।

अकि (अङ्क्) लक्षणे (१,६८, आ०, अङ्कते) १ चिह्न करना. २ टेढ़ा जाना। (१०, उ०, अङ्कयति[3], ते) १ चिह्न करना. २ गिनना. ३ निन्दा करना, दाग लगाना. ४ टहलना. ५ गोद में लेना।

अक्षू (अक्ष्) व्याप्तौ (१।४३७, प०, अक्षति; ५, प०, अक्ष्णोति[4]) १ व्याप्त होना. २ इच्छितार्थ प्राप्त होना. ३ पैठना, घुसना. ४ बटुरना, एकत्र होना।

अग (अग्) कुटिलायां गतौ[2] (१।५३८, प०, अगति) १ घूमना, टेढ़ा जाना. २ टेढ़े रास्ते से जाना. ३ जाना।

अगद (अगद्) नीरोगत्वे (११।३६, प०, अगद्यति) १ निरोग = स्वस्थ रहना।

अगि (अङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, अङ्गति) १ चलना, टहलना. २ समीप जाना।

अघ (अघ्) पापे (१०।३६६ सूत्रोदाहरण रूप[5], प०, अघयति) १ पाप करना, अपराध करना।

अघि (अङ्घ्) गत्याक्षेपे (१।७६, आ०, अङ्घते) १ गति करना.

---

१. तालव्य शकारवान् पाठ क्षीरतरङ्गिणी के अनुसार है।

२. 'गतौ' का असमस्त निर्देश होने से धातु का प्रयोग 'गमन' मात्र में भी होता है।

३. द्र० क्षीरतरङ्गिणी १०।२१३॥

४. स्वादिगण में इस धातु का क्वचित्क पाठ है।

५. द्र० क्षीरतरङ्गिणी १०।३२५, पृष्ठ ३२३।

२ आरम्भ करना. ३ जल्दी जाना. ४ जल्दी करना. ५ धमकाना, घुड़कना. ६ जुवा खेलना ।

अङ्क (अङ्क्) पदे लक्षणे च (१०।३५५, उ०, अङ्कयति, ते) १ चिह्न करना. २ गिनना. ३ निन्दा करना. ४ टहलना, अकड़ के चलना, ५ गोद में लेना ।

अङ्ख (अङ्ख्) गतिवैकल्ये (क्वानित्कः १०, उ०, अङ्खयति, ते) १ रेंगना, हाथ पांव से चलना. २ लटकना. ३ अटकाना ।

अङ्ग (अङ्ग्) पदे लक्षणे च (१०।३५६, उ०, अङ्गयति, ते) १ टहलना. २ चिह्न करना । **परि**—(पल्यङ्गयति) १ प्रवृत्त करना, जगाना, उकसाना। **विपरि**—(विपल्यङ्गयति) १ छिपाना, ढ़ांपना ।

अङ्घ (अङ्घ्) (१०।३५५ का पाठा०, उ०, अङ्घयति, ते) १ चिह्न करना. निन्दा करना ।

अचि (अञ्च्) गतौ याचने च (१।६०४, उ०, अञ्चति, ते) १ झुकना, टेढ़ा करना. २ जाना. ३ पूजा करना मान करना. ४ संवारना, शोभित करना. ५ मांगना, चाहना. ६ कुड़कुड़ाना, अस्पष्ट बोलना । **अव**—१ दक्षिण की ओर झुकना या जाना। **उद्**—१ उत्तर की ओर झुकना या जाना। **परा**—१ पीछे की ओर झुकना या जाना । **प्र**—पूर्व की ओर झुकना या जाना । **प्रति**—पश्चिम की ओर झुकना या जाना ।

अचु (अच्) गतौ याचने च (१।६०३, उ०, अचति, ते) १ जाना, चलना. २ आदर करना. ३ मांगना ।

अज (अज्) गतिक्षेपणयोः (१।१३६, प०, अजति) १ जाना. २ हांकना, दौड़ाना. ३ फेंकना ।

अजि (अञ्ज्) भाषार्थः (१०।२२४, उ०, अञ्जयति, ते) १ बोलना, स्पष्ट करना ।

अञ्चु (अञ्च्) गतिपूजनयोः (१।११५, प०, अञ्चति) १ जाना. २ पूजा करना. ३ संवारना ।

अञ्चु (अञ्च्) गतौ याचने अव्यक्ते शब्दे च (१।६०२, उ०, अञ्चति, ते) १ प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना. २ कुड़कुड़ाना, अस्पष्ट बोलना । **अप**—१ दूर करना, हटा देना । **आ**—१ झुकाना । **उप**—१ निकालना (जल आदि) । **परि**—१ घुमाना । **वि**—१ फैलाना, विस्तृत करना। **सम्**—१ एकत्र करना, बटोरना, जमा करना ।

अञ्चु (अञ्च्) विशेषणे (१०।२०७, उ०, अञ्चयति, ते) १ विशेषित करना, सम्मानित करना. २ हटाना, पृथक् करना ।

अञ्जू (अञ्ज्) व्यक्तिम्रक्षण-

कान्तिगतिषु (७।२०, प०, अनक्ति; क्वचित्—आ०, अङ्क्ते) १ जाना. २ साफ करना, स्वच्छ करना. ३ सराहना, विख्यात करना. ४ चमकना, प्रकाशित होना. ५ तैलमर्दन करना,अभ्यञ्जन करना. ६ संवारना, सजाना । **अभि**—१ अभ्यञ्जन करना, तैलमर्दन करना । **वि**—१ स्पष्ट करना. २ उत्पन्न करना । **अधि**—१ भरना, संवारना । **आ**—१ तेल मलना. २ चिकना करना. ३ मान करना । **नि**—१ तेल मलना. २ छिपना । **प्रति**—१ तेल मलना. २ संवारना, सजाना । **सम्**—१ तेल मलना. २ मान करना. ३. भरना. ४ एकत्र करना, जोड़ना. ५ खाना. ६ संवारना ।

अट (अट्) गतौ (१।१९२, प०, अटति; क्वचित्—अटते) १ घूमना, फिरना । **परि**—१ जाना, भटकना ।

अट्ट (अट्ट्) अतिक्रमणहिंसनयोः (१।१५५, आ०, अट्टते) १ अधिक होना. २ मार डालना. ३ दुःख देना ।

अट्ट (अट्ट्) अनादरे (१०।३१, प०, अट्टयति) १ अनादर करना, अपमान करना. २ सूक्ष्म होना ।

अठ (अठ्) गतौ (द्र०—सायण १।२२५, प० अठति) १ जाना ।

अठि (अण्ठ) गतौ (१।१६१, आ०, अण्ठते) १ जाना, चलना ।

अड[1] उद्यमे (१।२४७, प०, अडति) १ उद्यम करना, प्रयत्न करना । (५ क्वाचित्कः, प०, अड्नोति) १ उपभोग करना, अपने अधिकार में लाना । **वेदे**—१ फैलना, व्यापना ।

अड्ड अभियोगे (१।२३९, प०, अड्डति) १ सब ओर से जोड़ना, संयुक्त करना. २ वाक्यादिकों का प्रतिपादन करना. ३ हल्ला करना, घेर लेना. ४ प्रयत्न करना. ५ प्रार्थना (=फर्याद) करना ।

अण शब्दार्थः (१।३०३, प०, अणति) १ शब्द करना ।

अण प्राणने (४।६४, आ०, अण्यते) १ जीते रहना, जीना, श्वासोच्छ्वास करना. २ बलवान् होना । **प्र**—१ जीना ।

---

१. यहां से आगे अन्त्य स्वर (=अच्) वा व्यञ्जन की इत्संज्ञा वा लोप होकर धातु का जो मूल रूप बचता है उस का निर्देश कोष्ठक में नहीं करेंगे, क्योंकि अन्त्य स्वर वा व्यञ्जन का लोप होने पर धातु का अवशिष्ट स्वरूप सुगमता से ज्ञात हो जाता है । अतः आगे केवल इदित् धातुओं में नुम् का आगम होकर जो रूप बनता है या अन्त्य के अनेक वर्णों की जहां इत्संज्ञा होकर जो रूप अवशिष्ट रहता, उसका ही निर्देश कोष्ठक में करेंगे ।

अत सातत्यगमने (१।३१, प०, अतति) १ जाना. २ सदैव जाते रहना।

अति (अन्त्) बन्धने (१।५०, प०, अन्तति) १ बांधना. २ पाना, हासिल करना।

अद भक्षणे (२।१, प०, अत्ति) १ खाना, भक्षण करना. २ नष्ट करना। **णिच्**—(आदयति) १ खिलाना। **सन्**—(जिघत्सति[1]) १ खाने की इच्छा करना। **अव**— १ तृप्त होना. २ मुंह बन्द हो जाना. ३ खाना छोड़ देना। **आ**—१ खाना। **प्र**—१ खाना। **सम्**—१ खाना। **वि**—१ काटना, कुतर लेना, चबाना।

अदि (अन्द्) बन्धने (१।५०, प०, अन्दति) १ बांधना. २ प्राप्त करना।

अधर नीचैर्गमने (नामधातु, अधरयति) १ काम करना, न्यून करना. २ जीतना।

अन प्राणने (२।६३, प०, अनिति, ४।६४ पाठा० सायण, आ०, अन्यते) १ जीना. २ समर्थ होना. ३ जाना। **णिच्**—(आनयति) १ जिलाना।

अन्दोल (१०।३६६ उदा०, प०, अन्दोलयति) १ झुलाना, हिलाना।

अन्ध दृष्टयुपघाते (१०।३५३, उ०, अन्धयति, ते) १ अन्धा होना, दिखाई न देना. २ आंखें मूंदना।

अबि (अम्ब) गतौ (क्वाचित्कः १, प०, अम्बति) १ जाना।

अबि (अम्ब्) शब्दे (१।२६२, आ०, अम्बते) १ शब्द करना।

अभि (अम्भ्) शब्दे (१।२७०, आ०, अम्भते) १ शब्द करना।

अभ्र गत्यर्थः (१।३७५, प०, अभ्रति) १ जाना (मेघ की गति)।

अम गतिशब्दसंभक्तिषु (१।३१४, प०, अमति, वेदे – अमिति, अमीति) १ जाना. २ शब्द करना, बोलना. ३ सेवा करना. ४ खाना।

अम रोगे (१०।१८६, उ०, आमयति, ते) १ बीमार होना, रोगग्रस्त होना. २ अजीर्ण रोगयुक्त होना।

अम्बर संभरणे (११।४१, प०, अम्बर्यति) १ एकत्र करना, बटोरना।

अय गतौ (१।३२०, आ०, अयते; क्वचित्-अयति) १ जाना। **प्र**[2]—प्लायते) १ भाग जाना। **परा**— पलायते[2]) १ भाग जाना।

अरर आराकर्मणि (११।१७, प०, अरर्यति) १ आरे से काटना. २ नष्ट करना।

---

१. अष्टा० २।४।३७ से घस् आदेश। २. उपसर्गस्यायतौ (अष्टा० ८।२।१९) से प्र परा के रेफ को लकारादेश होता है।

अर्क स्तवने, तपन इत्येके (१०।११२, उ०, अर्कयति, ते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ तपाना, गरम करना।

अर्घ पूजायाम् (१।४६२ पाठा० क्षीर०, प०, अर्घति) १ पूजा करना, मान देना। २ कीमत पड़ना, मोल पड़ना, कीमती होना। **णिच्**—(अर्घयति, ते) १ पूजा करना. २ मंहगा करना।

अर्च पूजायाम् (१।१२०, प०, अर्चति; १०।२३२, उ०, अर्चयति, ते) १ पूजा करना. २ मान करना. ३ सेवा करना। **वेद में**—चमकना, प्रकाशित होना। **सन्**—(अर्चिचिषति) १ पूजने की इच्छा करना। **अनु**—जय-जय-कार करना या मान करना। **प्र**—१ पूजना। **सम्**—१ पूजना. २ स्थिर करना, संस्थापन करना।

अर्ज अर्जने (१।१३४, प०, अर्जति) १ सम्पादन करना, पाना. २ उठाना।

अर्ज प्रतियत्ने (१०।१६४, उ०, अर्जयति, ते) १ उद्योग करना. २ पदार्थ को संस्कृत करना. ३ तैयार करना। **अति**—१ जाने देना. २ दूर करना। **अनु**—१ जाने देना, मुक्त करना। **अन्वव**—१ पीछे से जाने देना. २ हराना। **अपि**—१ जोड़ना। **अभ्यति**—१ जोड़ना, मिलाना। **अव**—१ जाने देना, मुक्त करना। **उद्**—१ चलाना। **णिच्**—१ सम्पादन करना।

अर्थ उपयाच्ञायाम् (१०।३२६, आ०, अर्थयते, क्वचित् प०, अर्थयति) १ मांगना, याचना करना. २ चाहना। **प्र**—१ मांगना. २ चाहना. ३ ढूंढना. ४ पकड़ना, घेरना. ५ अर्जन करना. ६ विवाह में मांगना।

अर्द गतौ याचने च (१।४५, प०, अर्दति) १ मांगना, याचना करना. २ जाना।

अर्द हिंसायाम् (णिजभावे—१०।२५५, उ०, अर्दयति, ते; उ०, अर्दति, ते) १ मारना, वध करना. २ दुःख देना, सताना।

अर्ब गतौ (१।२८८, प०, अर्बति) १ जाना २ मार डालना।

अर्व हिंसायाम् (१।३८६, प०, अर्वति) १ मार डालना. २ दुःख देना, सताना।

अर्ह पूजायाम् (१।४६२, प०, अर्हति; १०।१६६, उ०, अर्हयति, ते; १०।२६७, आ०, अर्हयते) १ पूजा करना, सत्कार करना. २ पूजनीय होना, पूजा योग्य होना. ३ योग्य होना।

अल भूषणपर्याप्तिवारणेषु (१।३४५, प०, अलति) १ संवारना, भूषित करना. २ निवारण करना. ३ शक्तिमान् होना. ४ पूरा करना।

अव रक्षण—गति—कान्ति—प्रीति—तृप्ति—अवगम—प्रवेश—

अवन—स्वामी — अर्थ—याचन—क्रिया—इच्छा—दीप्ति—अवाप्ति—आलिङ्गन—हिंसा—आदान—भाव—वृद्धिषु (१।३९६, प०, अवति) १ संरक्षण करना, बचाना. २ जाना, घुमाना. ३ कामना करना. ४ प्यारा होना, प्यार करना. ५ सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना. ६ जानना, समझना. ७ प्रवेश करना, पैठना, घुसना, घंसना. ८ सुनना, सुनाना. ९ मालिक होना, प्रभु होना. १० आज्ञा मानना, हुक्म मानना. ११ मांगना. १२ कर्म करना. १३ कान्तियुक्त होना, चमकना, शोभित होना. १४ प्राप्त होना, मिलना, पाना. १५ आलिङ्गन करना, गले लगाना. १६ मार डालना या दुःख देना, सताना. १७ ग्रहण करना, लेना. १८ होना. १९ बढ़ना. २० शक्तिमान् होना। **अनेकार्थ—होने से.** २१ दहन करना, जलाना. २२ विभाग करना, हिस्सा करना, बांटना. २३ पहुचना। **अनु**—ढाढस देना। **उद्**—१ ध्यान देना. २ बाट जोहना। ३ प्रवृत्त करना। **उप**—१स्नेह करना। **सम्**—१ तृप्त करना. २ संरक्षण करना।

अवधीर अपमाने (नामधातु, उ०, अवधीरयति, ते) १ अपमान करना, तिरस्कार करना, घृणा करना।

अश भोजने (९।५४, प०, अश्नाति) १ खाना. २ भोगना। **अति**—१ अधिक खाना। **उप**—खाना. २ भोगना। **णिच्**—(आशयति) १ खिलाना. २ पिलाना. ३ तृप्त करना।

अशन भोजने (नामधातु, अशनायति) १ खाने की इच्छा करना, क्षुधित होना।

अशूङ् (अश्) व्याप्तौ संघाते च (५।१८, आ०, अश्नुते) १ फैलाना, व्यापना. २ पहुंचना. ३ पाना, प्राप्त करना. ४ संग्रह करना, बटोरना, राशि करना, ढेर करना। **अनु**—१ पहुंचना. २ समान होना। **आ**—१ पहुंचना. २ पाना, प्राप्त करना. ३ सौंपना। **उद्**—१ ऊपर को पहुंचना. २ पाना, प्राप्त करना. २ शासक होना। **उप**—१ पाना, प्राप्त करना, उपार्जन करना. ३ शासक होना। **परि**—१ पहुंचना. २ समाना, पूर्ण होना। **प्र**—१ पहुंचना. २ समाना, पूर्ण होना।

अष गतिदीप्त्यादानेषु (१।६२६, उ०, अषति, ते) १ जाना, टहलना. २ ग्रहण करना, लेना. ३ चमकना।

अस गतिदीप्त्यादानेषु (१।६२५, उ०, असति, ते) १ जाना. २ लेना. ३ चमकाना।

अस भुवि (२।५८, प०, अस्ति) १ होना, रहना।

असु क्षेपणे (४।९९, प०, अस्यति) १ फेंकना, बिखेरना,

उड़ाना । **अनु**—१ नीचे बैठना । **अप**—१ छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना । **नि**—१ रखना, घरना, स्थापित करना । **निर्**—१ निकाल देना, बहिष्कृत करना । **पर्युप**—१ चारों ओर घिर कर बैठना. २ उपासना करना । **प्र**—१ फैंकना, बिखेरना, उड़ाना. २ खण्डन करना, स्वीकार नहीं करना, मान्य नहीं करना । **वि**—१ विभाग करना, हिस्सा करना । **व्या**—१ फैलाना, विस्तृत करना. २ क्रम से लगाना, अनुक्रम से रखना । **सन्नि**—१ संन्यास धारण करना, प्रपञ्च छोड़ना, विरक्त होना । **सम्**—१ एकत्र करना, इकट्ठा करना, मिलाना ।

असु उपतापे (११।४, प०, असूयति) १ रोगी होना, बीमार होना ।

असू असूञ् उपतापे (११।५, प०,असूयति; ११।५, उ०,असूयति,ते) १ रोगी होना, बीमार होना ।

अस्त संघाते (सायण १०।८४, प०, अस्तयति) १ अस्त होना, कान्तिहीन होना, ग्रसित होना ।

अह व्याप्तौ (५।२७, प०, अह्नोति) १ फैलना, विस्तृत होना, व्यापना ।

अहि (अंह्) गतौ (१।४२३, आ०, अंहते) १ जाना ।

अहि (अंह्) भासार्थः[1] (१०।२२४, उ०, अंहयति, ते) १ प्रकाशित होना, चमकना ।

आ

आछि (आञ्छ्) आयामे (१।१२४, प०, आञ्छति) १ बढ़ाना, दीर्घ करना, लम्बा करना ।

आन्दोल उत्क्षेपे (क्षीर० १०।५५,उ०, आन्दोलयति,ते) १ झुलाना ।

आप्लृ (आप्) व्याप्तौ (५।१५, प०, आप्नोति) १ व्यापना । **अभिवि**—१ चारों ओर से व्यापना । **अव**—१ प्राप्त होना, मिलना, पाना । **उपसम्**—१ समीप प्राप्त होना, पास आना. २ ग्रन्थादिक की समाप्ति करना । **परि**—१ तृप्ति करना. २ पूर्ति करना । **परिवि**—१ चारों ओर से व्यापना । **प्र**—१ प्राप्त होना, पाना । **वि**—१ व्यापना । **संवि**—१ अच्छी तरह व्यापना ।

आप्लृ लम्भने (१०।२६५, उ०, आपयति, ते) १ प्राप्त होना, पाना । **अभिवि**—१ चारों ओर से व्यापना । **अव**—१ पाना । **परि**—१ चारों ओर से व्यापना । **परिसम्**—१ समाप्त करना, पूरा करना ।

आस् उपवेशने (२।११, आ०, आस्ते) १ बैठना. २ उपस्थित होना, विद्यमान होना. ३ जीना. ४. होना ।

---

[1] 'भाषार्थः' पाठान्तर में 'शब्द करना' अर्थ होगा ।

अधि—१ वास करना, रहना. २ ऊपर बैठना. ३ वस्तुसादृश्य के कारण इच्छित वस्तु को छोड़ के दूसरी वस्तु को लेना। **अभि**—१ अध्ययन करना, अभ्यास करना, सीखना। **उत्**—१ छोड़ना, त्यागना, उपेक्षा करना. २ हिलाना, कम्पित करना। **उप**—१ उपासना करना, भजन करना। **निर्**—१ बाहर निकाल देना, देश से निकाल देना।

इ

इ गतौ (सायण १।२१५, प०, अयति) १ जाना। **अभ्युत्**—१ ऐश्वर्यादि से प्रसिद्ध होना। **उत्** १उदय होना, उगना. २ ऊपर जाना। **परा**—१ पीछे लौटना। **पला**[1]—१ दौड़ना, भागना, भाग जाना।

इक् स्मरणे (२।४०, प०, अधि-पूर्वक—अध्येति) १ स्मरण करना, विचार करना।

इख गतौ (१।८८, प०, एखति) १ जाना।

इखि (इङ्ख्) गतौ (१।८८, प०, इङ्खति) १ जाना।

इगि (इङ्ग्) गतौ (१।८८, प०, इङ्गति) १ जाना।

इङ् अध्ययने (२।३६, आ०, अधिपूर्वक—अधीते) १ अध्ययन करना, अभ्यास करना, सीखना।

इट गतौ (१।२१२, प०, एटति) १ जाना।

इण् गतौ (२।३८, प०, एति) १जाना। **अति**—१ अतिक्रमण करना, समय विताना. अधिक श्रेष्ठ होना। **अनु**—१ पीछे जाना. २ अनुसरण करना. ३ अनुकरण करना, दूसरे के समान कार्य करना। **अप**—१ निकल जाना। **अभि**—१ सामने आना. २ सर्वत्र जाना। **अभ्युत्**—१ ऐश्वर्यादिक से प्रसिद्ध होना। **अभ्युप्**—१ अंगीकार करना, स्वीकार करना. २ संमुख आना, सामने आना। **अव**—१ जानना, समझना। **उत्**—१ उदय होना, उगना. २ ऊपर जाना। **उप**—१ सहायता करना. २ पास आना या जाना. ३ लेना। **निर्**—१ निकल जाना। **परि**—१ चारों ओर घुमाना, प्रदक्षिणा करना। **परा**—१ पीछे लौटना। **सम्**—१ संगत होना, मिलना। **समुप**—१ सामने आना। **वि**—१ व्यय करना, खर्च करना. २ विध्वंस करना, तहस नहस करना। **प्रति**—१ स्पष्ट होना. २ विश्वास रखना।

इदि (इन्द) परमैश्वर्ये (१।५१, प०, इन्दति) १ अमानवीय पराक्रम होना, ईश्वरी शक्ति होना, ऐश्वर्ययुक्त होना।

इन्धी दीप्तौ (७।११, आ०, इन्धे)

---

१. **उपसर्गस्यायतौ** (पा० ८।२।१९) से परा के रेफ को लत्व।

१ प्रदीप्त होना, जलना. २ प्रकाशित होना, चमकना ।

इम्भ संघाते (क्वचित्कः १०, आ०, इम्भयते) १ एकत्र करना, इकट्ठा करना, बटोरना ।

इरज ईर्ष्यार्थः (११।८, प०, इरज्यति) १ ईर्ष्या करना, मत्सर करना ।

इरज् (इर्) ईर्ष्यार्थः (११।८, उ०, इर्यति, ते) १ ईर्ष्या करना, मत्सर करना ।

इरस ईर्ष्यार्थः (११।८, प०, इरस्यति) १ ईर्ष्या करना, मत्सर करना ।

इल स्वप्नक्षेपणयोः (६।६७, प०, इलति) १ सोना, नींद लेना. २ जाना. ३ भेजना. ४ फेंकना, उड़ाना, बिखेरना ।

इल प्रेरणे (१०।१२६, उ०, एलयति, ते) १ प्रेरणा करना, प्रोत्साहित करना ।

इला विलासे (११।२७, प०, इलायति) १ विलास करना, खेलना, केली करना ।

इवस सन्तापे सेवने च (क्वचित्कः ११, प०, इवस्यति) १ चारों ओर सन्ताप होना. २ सेवा करना ।

इवि (इन्व्) व्याप्तौ प्रीणने च (क्षीर० १।३८६, ३८८, प०, इन्वति) १ व्यापना. २ तृप्त होना. ३ सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना ।

इष गतौ (४।१९, प०, इष्यति) १ जाना । अनु—१ ढूंढना, खोजना ।

इष आभीक्ष्ण्ये (९।५६, प०, इष्णाति) १ बार बार करना ।

इषु इच्छायाम् (६।६१, प०, इच्छति) १ इच्छा करना, चाहना । अनु—१ ढूंढना । प्रति—१ ग्रहण करना, लेना. २ प्रतिवचन देना ।

इषुध शरधारणे (११।२०, प०, इषुध्यति) १ बाण धारण करना, तरकस बांधना ।

ई

ई गतौ (सायण १।२१५, प०, अयति) १ जाना ।

ई गतिव्याप्तिप्रजननकान्त्यसनखादनेषु (२।४१ प्रश्लेषः० प०, एति) १ जाना. २ फैलना, व्यापना. ३ गर्भवती होना, गाभिन होना. ४ इच्छा करना, चाहना. ५ भक्षण करना, खाना. ६ उड़ाना, फैंकना. ७ भेजना, प्रेरणा करना ।

ईक्ष दर्शने (१।४०५, आ०, ईक्षते) १ देखना, अवलोकन करना । अप—१ प्रतीक्षा करना, बाट जोहना. २ अपेक्षा करना, चाहना । अभि—१ टक लगाना, टकटकी बांधना । अव—१ देखना, निहारना । उत्—१ ऊपर देखना । उप—

१ उपेक्षा[1] करना, छोड़ना, त्यागना। **निर्**—१ देखना, ताकना। **परि**—१ परीक्षा करना, शोधना, जांचना। **प्र**—१ देखना, निहारना. २ कबूल करना। **वि**—१ देखना, ताकना। **प्रति**—१ मार्ग देखना, प्रतीक्षा करना, वांट जोहना. २ पूज्य बुद्धि से आदर सत्कार करना, मानना। **प्रत्युत्**—१ दूसरे के देखने पर आप भी उसकी ओर टकटकी लगाके निहारना। **सम्**—१ तुलना करना, बराबरी करना।

ईख गतौ (१।८८, प०, ईखति) १ जाना।

ईखि (ईङ्ख्) गतौ (१।८८, प०, ईङ्खति) १ जाना।

ईङ् गतौ (४।३४, आ०, ईयते) १ जाना।

ईज् गतिकुत्सनयोः (१।११०, आ०, ईजते) १ जाना. २ दोष लगाना, निन्दा करना।

ईजि (ईञ्ज्) गतिकुत्सनयोः (१।११०, उ०, ईञ्जति, ते) १ जाना. २ दोष लगाना, निन्दा करना।

ईड स्तुतौ (२।६, आ०, ईट्टे; १०।१३७, उ०, ईडयति, ते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना।

ईति (ईन्त्) बन्धने (१।५० पाठा०, ईन्तति) १ बांधना, जकड़ना।

ईर क्षेपे (१०।२३४, उ०, ईरयति, ते) १ जाना. २ हांकना, प्रेरणा करना. ३ फैंकना। **उत्**—१ कहना, बोलना। **प्र**—१ भेजना। **सम्**—१ वायु के समान जाना।

ईर गतौ कम्पने च (२।८, आ०, ईर्ते) १ जाना. २ कांपना, थरथराना, हिलाना।

ईक्ष्य ईर्ष्यार्थः (१।३४१, प०, ईक्ष्यति) १ ईर्ष्या करना, मत्सर करना।

ईर्ष्य ईर्ष्यार्थः (१।३४१, प०, ईर्ष्यति) १ ईर्ष्या करना, मत्सर करना।

ईश ऐश्वर्ये (२।१०, आ०, ईष्टे) १ अधिकार होना, चाहे सो करने की शक्ति होना।

ईशुचिर् (दिवा०)—द्र० शुचिर्

ईष गतिहिंसादानेषु (१।४०६, आ०, ईषते) १ जाना. २ मार डालना या दुःख देना. ३ देखना, अवलोकन करना।

ईष उञ्छे (१।४६१, प०, ईषति) १ एक एक दाना उठाना, बीनना।

ईह चेष्टायाम् (१।४२१, आ०,

१. निरुक्त में तदेतेनोपेक्षितव्यम् (१।१५) इत्यादि में 'उप सामीप्येन ईक्षितव्यम्' सूक्ष्मता से विचार करना अर्थ भी होता है।

ईहते) १ प्रयत्न करना, उद्योग करना । सम्—१ इच्छा करना, चाहना ।

उ

उक्ष सेचने (१।४३६, प०, उक्षति) १ निर्मल करना, स्वच्छ करना, साफ करना. २ गीला करना, प्रोक्षण करना, सींचना. ३ भेजना । **वेद में**—१ दृढ़ होना वा करना । **प्र**—१ सींचना. २ जल सिञ्चन से संस्कृत करना. ३ मार डालना ।

उख गतौ (१।८८, प०, ओखति) १ जाना ।

उखि (उङ्ख्) गतौ (१।८८, प०, उङ्खति) १ जाना. २ पास जाना या आना. ३ अलंकृत करना, संवारना. ४ शुष्क होना, सूखना. ५ म्लान होना, मुर्झाना ।

उङ् शब्दे (१।६८२, आ०, अवते) १ शब्द करना ।

उच समवाये (४।११४, प०, उच्यति) १ एकत्र होना, इकट्ठा होना, २ एकत्र करना, इकट्ठा करना, बटोरना ।

उछि (उञ्छ्) उञ्छे (१।१३०; ६।१३, प०, उञ्छति) १थोड़ा थोड़ा एकत्र करना, थोड़ा थोड़ा बटोरना. २ बीनना, उञ्छन करना, चुनना ।

उछी विवासे (१।१३१; ६।१४, प०, उच्छति, **वि**—व्युच्छति) १ पूरा करना, समाप्त करना. २ छोड़ना, त्यागना. ३ बांधना, जकड़ कर बांधना । **प्र**—१ पोंछना ।

उछृदिर् (रुधा०)—द्र० छृदिर्

उज्ज आर्जवे (६।२०, पाठा०, प०, उज्जति) १ सीधी रीति से वर्ताव करना ।

उज्झ उत्सर्गे (६।२१, प०, उज्झति) १ छोड़ना, त्यागना । **प्र**—१ छूट जाना, मुक्त होना ।

उठ उपघाते (१।२२८, प०, ओठति; १।५००, आ०, ओठते) १ मारना, ठोकना, नीचे गिराना ।

उतृदिर् (रुधा०)—द्र० तृदिर्

उध्रस उञ्छे (६।५५, प०, उध्रस्नाति; १०।२११, उ०, उध्रासयति, ते) १ थोड़ा थोड़ा चुनना, बीनना ।

उध्रस् (क्र्या०)—द्र० ध्रस्

उध्रस् (चु०)—द्र० ध्रस्

उन्दी (उन्द्) क्लेदने (७।१६, प०, उनत्ति) १ आर्द्र होना, गीला होना ।

उबुन्दिर् (भ्वा०)—द्र० बुन्दिर्

उब्ज आर्जवे (६।२०, प०, उब्जति) १ सीधी रीति से चलना, सीधी रीति से वर्ताव करना. २ दबाना, दमन करना । **नि**—१ अधोमुख होना ।

उभ पूरणे (६।३२, प०, उभति) १ भरना, पूर्ण करना।

उम्भ पूरणे (६।३२, प०, उम्भति) १ भरना, पूर्ण करना।

उर गतौ (स्वाचित्कः १, प०, ओरति) १ जाना, चलना।

उरस बलार्थे (११।३७, प०, उरस्यति) १ बलवान् होना।

उर्द माने क्रीडायां च (१।१८, आ०, उर्दते) १ नापना, गिनना. २ क्रीडा करना, खेलना।

उर्वी हिंसार्थः (१।३८२, प०, उर्वति) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना।

उलडि (उलण्ड्) उत्क्षेपणे (१०।१९, पाठा०, उ०, उलण्डयति, ते) फेंकना, ऊपर फेंकना, उड़ाना, झोंकना।

उष दाहे (१।४६४, प०, ओषति) १ हिंसा करना. २ जलना।

उषस् प्रभातभावे (११।६, प०, उषस्यति) १ प्रभात होना, पौ फटना।

उहिर् (उह्) अर्दने (१।४९१, प०, ओहति) १ मार डालना, नष्ट करना. २ दुःख देना, सताना।

ऊ

ऊठ उपघाते (१।२२६, प०, ऊठति) १ मारना, ठोकना, नीचे गिराना।

ऊन परिहाणे (१०।३१३, उ०, ऊनयति, ते) १ कम करना, घटाना. २ संक्षेप करना. ३ नापना, गिनना।

ऊयी तन्तुसन्ताने (१।३२४, आ०, ऊयते) १ सीना, बुनना।

ऊर्ज बलप्राणनयोः (१०।१७, उ०, ऊर्जयति, ते) १ शक्तिमान् होना, पराक्रमी होना २ जीना. ३ जिलाना।

ऊर्णुञ् आच्छादने (२।३२, उ०, ऊर्णौति-ऊर्णोति, ऊर्णुते) १ आच्छादन करना, ढकना।

ऊर्द माने क्रीडायाञ्च (१।१८, पाठा०, आ०, ऊर्दते) १ नापना, गिनना. २ क्रीडा करना, खेलना।

ऊष रुजायाम् (१।४६०, प०, ऊषति) १ रोगी होना, बीमार होना. २ एकत्र होना, इकठ्ठा होना।

ऊह वितर्के (१।४३१, आ०, ऊहते) १ ऊहापोह करना, कल्पना करना, तर्क करना। **प्रवि**—१ कुछ काल तक ठहरना। **वि**—१ व्यूह रचना करना। **सम्**—१ एकत्र होना, इकठ्ठा होना।

ऋ

ऋ गतिप्रापणयोः (१।६७०, प०, ऋच्छति) १ जाना. २ सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना. ३ पहुंचाना।

ऋ गतौ (३।१६, प०, इयर्ति) १ जाना. २ फैलाना।

ऋ हिंसायाम् (५।३०, पाठा०, प०, ऋणोति) १ हिंसा करना, २ मार डालना।

ऋक्ष हिंसायाम् (५।३०, पाठा०, प०, ऋक्षणोति) १ मार डालना या दु:ख देने का यत्न करना।

ऋक्षि हिंसायाम् (५।३०, पाठा०, प०, ऋक्षिणोति) १ मार डालना या दु:ख देने का यत्न करना।

ऋच स्तुतौ (६।१६, प०, ऋचति) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ आच्छादित करना, ढकना. ३ चमकना।

ऋछ गतीन्द्रियमूर्तिप्रलयभावेषु (६।१५, प०, ऋच्छति) १ जाना. २ कठिन होना, सख्त होना, दृढ़ होना ३ इन्द्रिय का बल घट जाना।

ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (१।१०७, आ०, अर्जते) १ जाना. २ खड़ा रहना, स्थिर होना. ३ बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना. ४ जीना. ५. सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना।

ऋजि (ऋञ्ज्) भर्जने (१।१०८, आ०, ऋञ्जते) १ भूंजना।

ऋणु गतौ (८।५, उ०, अर्णोति, अर्णुते; पक्षान्तरे— ऋणोति, ऋणुते) १ जाना, गमन करना।

ऋत घृणायाम्[1] (सौत्र:, अष्टा० ३।१।२९, इयङ्, आ०, ऋतीयते)। १ निन्दा करना, दोष लगाना. २ कृपा करना, दया करना।

ऋधु वृद्धौ (४।१३१, प०, ऋध्यति; ५।२४, प०, ऋध्नोति) १ बढ़ना, वृद्धि होना. २ श्रीमान् होना. ३ बढ़ाना, वृद्धि करना. ४ आनन्दित करना. ५ पूरा करना।

ऋफ हिंसायाम् (६।३०, प०, ऋफति) १ मार डालना, दु:ख देना।

ऋम्फ हिंसायाम् (६।३०, प०, ऋम्फति) १ मार डालना, पीडा देना।

ऋषि गतौ (६।७, प०, ऋषति) १ जाना, आना. २ मार डालना. ३ ढकेलना। (क्वाचित्क: १, प०, अर्षति) १ ग्रहण करना, लेना. २ बहना।

ॠ

ॠ गतौ (९।२८, प०, ऋणाति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

ए

एजृ दीप्तौ (१।१०६, आ०, एजते) १ प्रकाशित होना, चमकना, झलकना।

एजृ कम्पने (१।१४३, प०, एजति) १ कांपना, थरथराना।

एठ विबाधायाम् (१।१६६, आ०, एठते) १ हरकत करना, रोकना. २ दु:ख देना, सताना।

---

१. 'घृणाजुगुप्साकृपयो:' वैजयन्ती, पृष्ठ २२१।

एध वृद्धौ (१।२, आ०, एधते) १ बढना।

एला विलासे (११।२६, प०, एलायति) १ क्रीडा करना, विलास करना, खेलना।

एषृ प्रयत्ने (१।४१२, आ०, एषते) १ समीप जाना या आना. २ चाहना. ३ दौड़ना. ४ रेंगना।

ओ

ओखृ शोषणालमर्थयोः (१।८६, प०, ओखति, प्र—प्रोखति) १ शुष्क होना, सूखना. २ कान्तिमान् होना. ३ संवारना, अलंकृत करना. ४ स्वीकार नहीं करना।

ओज शक्तौ (क्वचित्कः १, प०, ओजति; १०, उ०, ओजयति, ते) १ शक्तिमान् होना. २ जीना. ३ बढ़ना।

ओणृ अपनयने (१।३०५, प०, ओणति) १ ले जाना, दूर ले जाना।

ओप्यायी (भ्वा०)—द्र० **प्यायी**

ओलजी (तुदा०)—द्र० **लजी**

ओलडि (**ओलण्ड्**) **उत्क्षेपणे** (१०१९, प०, ओलण्डयति, [1]ओलण्डति) १ ऊपर उठाना. ऊपर फैंकना, ऊपर उठाना। ओकार के इत्संज्ञक पक्ष में—**'लण्डयति'** रूप होगा।

ओलडि (चु०)—द्र० **लडि**

ओलस्जी (तुदा०)—द्र० **लस्जी**

ओविजी (तु०)—द्र० **विजी**

ओविजी (रु०)—द्र० **विजी**

ओवै (भ्वा०)—द्र० **वै**

ओव्रश्चू (तुदा०)—द्र० **व्रश्चू**

ओहाक् (जु०)—द्र० **हाक्**

ओहाङ् (जु०)—द्र० **हाङ्**

क

कक लौल्ये (१।७१, आ०, ककते) १ गर्व करना. २ चञ्चल होना. ३ प्यासा होना।

ककि (**कङ्क्**) **गत्यर्थः** (१।७४, आ०, कङ्कते) १ जाना।

कक्क हसने (१।८५, पाठा०, प०, कक्कति) १ हंसना. मुस्कराना।

कक्ख हसने (१।८५, पाठा०, प०, कक्खति) १ हंसना, मुस्कराना।

कख हसने (१।८५, प०, कखति) १ हंसना, मुस्कराना।

कखे हसने (१।५३३, प०, कखति) १ हंसना, मुस्कराना।

कगे नोच्यते (१।५३७, प०, कगति) १ करना, बनाना। इसका विशेष अर्थ कुछ नहीं है।

कच बन्धने (१।१०१, आ०, कचते) १ बांधना. २ चमकाना, प्रकाशित होना. ३ शब्द करना। (क्वाचित्कः १, प०, कचति) १ पुकारना।

---

१. चुरादिषु इदित्करणात् पक्षे शवपि भवति। द्र० धातुवृत्तिः १०।२॥

कचि (कञ्च्) दीप्तिबन्धनयोः (१।१०२, आ०, कञ्चते) १ बांधना. २ चमकना, प्रकाशित होना।

कज मदे (क्षीर० १।१४४, प०, कजति) दुःख वा आनन्द से बेसुध होना. २ सुखी होना. ३ बढ़ना (सौ०). ४ पागल होना।

कटि (कण्ट्) गतौ (१।२१२ पाठा०, प०, कण्टति) १ जाना।

कटी गतौ (१।२१२, प०, कटति) १ जाना. २ कष्ट से दिन बिताना।

कटे वर्षावरणयोः (१।१६०, प०, कटति) १ बरसना. २ घेरना. ३ समीप जाना। **प्र — णिच्** — (प्रकटयति) १ प्रकट होना, दिखाई देना।

कठ कृच्छ्रजीवने (१।२२५, प०, कठति) १ कष्ट से दिन बिताना।

कठि (कण्ठ) शोके (१।१६३, आ०, कण्ठते) १ शोक करना, रोकना। (१०।२७४, उ०, कण्ठयति, ते; [1]कण्ठति) १ उत्कण्ठित होना. २ शोक करना. ३ स्मरण करना, याद करना। **उत्** — १ दुःख करना, शोक करना. २ उत्कण्ठित होना।

कड मदे (१।२४६, प०; ६।८८, प०, कडति) १ दुःख वा आनन्द में लीन होना।

कडि (कण्ड्) मदे (१।१८१, आ०, कण्डते; १।२५०, प०, कण्डति) १ दुःख वा आनन्द में लीन होना।

कडि (कण्ड्) भेदने (१०।४६, उ०, कण्डयति, ते; [2]कण्डति) १ तोड़ना, फोड़ना, अलग अलग करना. २ धान्यादिकों का छाल (भूसा) निकालना. ३ संरक्षण करना, पालना।

कडु कार्कश्ये (१।२४०, प०, कडुति) १ निष्ठुर होना, कठोर होना।

कण शब्दार्थः (१।३०३, प०, कणति) १ रोना. २ शब्द करना।

कण गतौ (१।५३६, प०, कणति) १ समीप जाना. २ छोटा होना।

कण्डूञ् गात्रविघर्षणे (११।१, उ०, कण्डूयति, ते) १ खुजलाना।

कण निमीलने (१०।१८४, उ०, कणयति, ते) आंखें मूंदना।

कत्थ श्लाघायाम् (१।३०, आ०, कत्थते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। **वि** - १ झूठी बड़ाई करना।

कत्र शैथिल्ये (१०।३३५, उ०, कत्रयति, ते) १ ढीला करना, छोड़ना, मुक्त करना।

कथ वाक्यप्रबन्धे (१०।२७६, उ०, कथयति, ते; [3]कथापयति, ते)

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) इस गणसूत्र में 'णिच्' विकल्प से होता है, पक्ष में शप्। २. इदित् होने से पक्ष में शप्।

३. मतान्तर में अकार को वृद्धि वा पुक् का आगम होकर।

१ कहना. २ व्याख्यान करना, बयान करना।

कद वैक्लव्ये वैकल्ये वा (१।५२४, आ०, कदते) १ भ्रमित होना, घबरा जाना, व्याकुल होना। (४ मतान्तरे, आ०, कद्यते) १ भ्रमित होना।

कदि (कन्द्) आह्वाने रोदने च (१।५८, प०, कन्दति) १ बुलाना. २ रोना।

कदि (कन्द्) वैक्लव्ये वैकल्ये वा (१।५२३, आ०, कन्दते) १ भ्रमित होना, घबरा जाना. २ घबराना. ३ मार डाला।

कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (१।३११, प०, कनति) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ चाहना, प्रीति करना. ३ समीप जाना या आना. ४ तृप्त होना।

कपि (कम्प्) चलने (१।२६१, आ०, कम्पते) १ हिलना, कांपना। अनु—१ दया करना।

कबि (कम्ब्) चलने (१ क्वाचित्कः, प०, कम्बति) १ जाना।

कबृ वर्णे (१।२६४, आ०, कबते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ रंग देना, रंगना।

कमु कान्तौ (१।३०२, आ०, कामयते) १ चाहना, इच्छा करना।

कर्क हसने (१ क्वाचित्कः, प०, कर्कति) १ हंसना।

कर्ज व्यथने ((१।१३७, प०, कर्जति) १ पीड़ा देना, सताना।

कर्ण भेदने (१०।३५२ पाठा०, उ०, कर्णयति, ते) १ बेधना, बींधना, छेदना, कोचना। आ—१ सुनना। समा—१ सुनना।

कर्त शैथिल्ये (१०।३३६, उ०, कर्तयति, ते) १ छोड़ना, मुक्त करना, ढीला करना।

कर्त्र शैथिल्ये (१०।३३६ पाठा०, उ०, कर्त्रयति, ते) १ छोड़ना, मुक्त करना, ढीला करना।

कर्द कुत्सिते शब्दे (१।४८, प०, कर्दति) १ कौवे के समान शब्द करना. २ पेट गुड़गुड़ाना, अन्त्रकूजन होना।

कर्ब गतौ (१।२८८, प०, कर्बति) १ जाना।

कर्व दर्पे (१।३८८, प०, कर्वति) १ गर्व करना, बडाई करना।

कल शब्दसंख्यानयोः (१।३३४, आ०, कलते) १ शब्द करना. २ गिनना।

कल क्षेपे (१०।७२, उ०, कलयति, ते) १ उड़ाना, फैंकना।

कल आस्वादने (१०।२०४, उ०, कलयति, ते) १ स्वाद लेना, निगलना।

कल गतौ संख्याने च (१०।२६०, उ०, कलयति, ते) १ जाना. २ गिनना। आ—१ बांधना. २ लेना। परि—१ याद रखना। वि—१ व्याकुल होना। सम्—१ सारांश निकाल के कहना, तात्पर्य कहना।

कल्ल अव्यक्ते शब्दे (१।३३५, आ०, कल्लते) १ अस्पष्ट शब्द करना. २ शब्द करना. ३ गूंगा होना।

कवृ वर्णे (१।२६४ पाठा०, आ०, कवते) १ कविता करना, वर्णन करना. २ तस्वीरें खींचना।

कश गतिशासनयोः (१ क्वाचित्कः, उ०, कशति, ते; २।१६ पाठा०, आ०, कष्टे) १ मार डालना, दुःख देना. २ दण्ड देना, शासन करना।

कष हिंसार्थः (१।४६२, प०, कषति; १० क्वाचित्कः, प०, कषयति) १ मार डालना, दुःख देना. २ सोना आदि परीक्षा के लिये घिसना। वि—१ सोने के रूपादि की परीक्षा करना।

कस गतौ (१।५६६, प०, कसति) १ हिलना, कांपना। वि—१ खिलना।

कस गतिशासनयोः (२।१५, आ०, कस्ते) १ जाना. २ नष्ट करना. ३ आज्ञा करना, हुक्म बजाना. ४ दण्ड देना, शासन करना।

कसि (कंस्) गतिशासनयोः (२।१४, आ०, कंस्ते) १ जाना. २ नष्ट करना. ३ आज्ञा करना. ४ शासन करना, दण्ड देना।

काक्षि (काङ्क्ष) काङ्क्षायाम् (१।४४६, प०, काङ्क्षति; आ—आकांक्षति) १ चाहना, इच्छा करना, लोभ करना।

काचि (काञ्च) दीप्तिबन्धनयोः (१।१०२, आ०, काञ्चते) १ बांधना. २ चमकाना, प्रकाशित होना।

काल उपदेशे (१०।३०५, उ०, कालयति, ते) १ उपदेश करना. २ काल की गिनती करना।

काशृ दीप्तौ (१।४३०, आ, काशते) १ चमकना. (४।५१, आ०, काश्यते) १ चमकना। निर्—(निष्) १ निकाल देना. २ छिपाना, लुकाना। ३ प्रकट करना।

कासृ शब्दकुत्सायाम् (१।४१४, आ०, कासते) १ खांसना, खखारना. २ चमकना।

कि ज्ञाने (३।१८, प०, चिकेति) १ जाना, समझना। नि—१ निश्चयपूर्वक जानना।

किट त्रासे (१।१६७, प०, केटति) १ सताना। **गतौ** (१।२१२, प०, केटति) १ डराना. २ जाना।

कित निवासे रोगापनयने च (१।७१६, प०, केतति; १० क्वाचित्कः, प०, केतयति) १ निवास करना, रहना। (सन्—चिकित्सति)

१ रोग का प्रतीकार करना, चिकित्सा करना. २ शासन करना. ३ नष्ट करना। वि —(सन्, प०) १ आशंका करना, विश्वास न करना।

कित ज्ञाने (३।१८ पाठा०, प०, चिकेत्ति) १ जानना।

किल श्वैत्यक्रीडनयोः (६।६३, प०, किलति) १ सफेद होना. २ क्रीडा करना, खेलना। (१० क्वाचित्कः, प०, केलयति) १ भेजना. २ उड़ाना।

कीट वरणे (१०।१०६, उ०, कीटयति, ते) १ रंगना, रंग में डुबोना. २ बांधना, बन्धन करना. ३ कीट लगना, जंग लगना. ४ लोह आदि को खा जाना।

कील बन्धने (१।३५१, प०, कीलति) १ बांधना, कीलों से मज-बूत करना।

कु शब्दे (२।३५, प०, कौति) १ शब्द करना. २ कविता करना।

कुक लौल्ये (१।७१, आ०, कोकते) १ ग्रहण करना, लेना २ ललचाना।

कुङ शब्दे (१।६८२, आ०, कवते; ६।१११, आ०, कुवते; ६ क्वाचित्कः, उ०, कुनाति-कुनीते) १ शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौंरे के समान शब्द करना।

कुच शब्दे तारे (१।११२, प०, कोचति) १ पक्षी के समान जोर से पुकारना।

कुच सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भ-विलेखनेषु (१।५६६, प०, कोचति) १ सम्पर्क करना. २ स्वच्छ करना, मांज के स्वच्छ करना. ३ स्पर्श करना, छूना. ४ जोतना, हल चलाना. ५ वक्र होना, टेढा होना. ६ लिखना, रेखा खींचना. ७ आकुञ्चित करना या होना. ८ कलह करना. ९ रोकना, अड़ाना, प्रतिबन्ध करना। सम्— १ संकुचित होना।

कुच संकोचने (६।७७, प०, कुचति) १ आकुञ्चित होना या करना। आ—१ आकुञ्चित करना या होना। सम्—१ सकुचित करना या होना।

कुजु स्तेयकरणे (१।११७, प०, कोजति) १ चुराना, चोरी करना।

कुञ्च गति कौटिल्याल्पीभावयोः (१।११३, प०, कुञ्चति) १ जाना. २ टेढा जाना. ३ टेढा होना या करना. ४ अल्प या कम होना या करना। आङ्—१ आकुञ्चित होना, अकड़ जाना।

कुजि (कुञ्ज) अव्यक्ते शब्दे (१।११९ पाठा०, प०, कुञ्जति) १ अस्पष्ट शब्द करना, गुञ्जारना।

कुट कौटिल्ये (६।७५, प०, कुटति) १ टेढा होना. २ ठगना, फंसाना।

कुट छेदने (१०।१६७, आ०, कोटयते) १ कतरना. २ गरम करना।

कुटि (कुण्ट) प्रतिघाते (१। २३४ मतान्तरे, प०, कुण्टति) १ कुंठित करना. २ दुःखादि से श्रमित होना।

कुटुम्ब धारणे (१०।१४८ मतान्तरे, आ०, कुटुम्बयते) १ परिवार का पालन करना।

कुट्ट छेदनभर्त्सनयोः (१०।२८, उ०, कुट्टयति, ते) १ कतरना. २ निन्दा करना, दोष लगाना. ३ रगड़ना।

कुट्ट प्रतापने (१०।१७१, आ०, कुट्टयते) १ गरम करना।

कुठि(कुण्ठ) प्रतिघाते (१।२३४, प०, कुण्ठति) १ कुण्ठित करना।

कुठि (कुण्ठ्) वेष्टने रक्षणे च (१०।५२, उ०, कुण्ठयति, ते) १ घेरना. २ कुण्ठित करना. ३ रक्षा करना।

कुड बाल्ये (६।९२, प०, कुडति) १ बालक के समान खेलना. २ खाना। (संघाते—पाठा०, सायण १।९२) ३ बटोरना, जमा करना।

कुडि (कुण्ड्) वैकल्ये (१।२१४, प०, कुण्डति) १ कुण्ठित करना. २ दुःखादि से कुण्ठित होना।

कुडि (कुण्ड) दाहे (१।१६६, आ०, कुण्डने) १ जलना।

कुडि (कुण्ड) रक्षणे (१०।५०, उ०, कुण्डयति, ते) १ रक्षा करना, संभालना।

कुण शब्दोपकरणयोः (६।४७, प०, कुणति) १ शब्द करना, २ दानादिक से संरक्षण करना, संभालना. ३ दुःख में रहना।

कुण आमन्त्रणे (१०।३१६, उ०, कुणयति, ते) १ उपदेश करना. २ बोलना. ३ बुलाना।

कुत्स अवक्षेपणे (१०।१६५, आ०, कुत्सयते) १ दोष लगाना, निन्दा करना. २ तिरस्कार करना।

कुथ पूतीभावे (४।१२, प० कुथ्यति) १ बदबू आना।

कुथ संश्लेषणे(६।४६ पाठा०,प०, कुथ्नाति) १ संलग्न होना, मिल के रहना. २ दुःखित होना, संकटग्रस्त होना।

कुथि (कुन्थ्) हिंसासंक्लेशनयोः (१।३६, प०, कुन्थति) १ मार डालना. २ दुःख देना. ३ दुःख भोगना, पीडित होना।

कुद्रि (कुन्द्र) अनृतभाषणे(१०।६, उ०, कुन्द्रयति, ते) १ झूंठ बोलना।

कुन्थ् संश्लेषणे (६।४६, प०, कुथ्नाति) १ मिलकर रहना. २ दुःख देना।

कुप क्रोधे (४।१२२, प०, कुप्यति) १ गुस्सा करना।

कुप भाषार्थः (१०।२२३, उ०, कोपयति, ते; भासार्थः—पाठा०) १ बोलना. २ चमकना।

कुपि (कुम्प्) आच्छादने (१।२६० पाठा०,प०, कुम्पति; १०।१२३पाठा०, प०, कुम्पयति) १ ढकना. २ फैलना।

कुबि (कुम्ब्) आच्छादने (१। २६०, प०, कुम्बति; १०।१२३, उ०, कुम्बयति, ते) १ आच्छादित करना, ढांपना।

कुभि (कुम्भ्) आच्छादने (१०। १२४, उ०, कुम्भयति, ते) १ आच्छादित करना, ढांपना।

कुमार क्रीडायाम् (१०।३०२, उ०, कुमारयति, ते) १ बालक के समान खेलना, क्रीडा करना।

कुमाल[1] क्रीडायाम् (१०।३०२ पाठा०, उ०,कुमालयति, ते)१ बालक के समान खेलना, क्रीडा करना।

कुर शब्दे (६।५२, प०, कुरति) १ शब्द करना।

कुर्द क्रीडायाम् (१।१६, आ०, कुर्दते) १ खेलना, क्रीडा करना।

कुल संस्त्याने बन्धुषु च (१।५८३, प०, कोलति) १ बटोरना. २ अपने के समान वर्तना. ३ सजातीयता से रहना. ४ गिनना। आ—१ तत्पर होना. २ व्याकुल होना।

कुश संश्लेषणे (४।१०८ पाठा०, प०, कुश्यति) १ गले लगाना, आलिंगन करना. २ लपेटना।

कुशि (कुंश्) भासार्थः[2] (१०। २२३, उ०, कुंशयति, ते; कुंशति[3]) १ चमकना. २ बोलना।

कुष निष्कर्षे (९।५०, प०, कुष्णाति) १ वाहर निकालना, रगड़ के निकालना. २ चमकना. ३ परीक्षा करना, कसौटी पर घिसके सोने आदि की परीक्षा करना। अव—१ सिद्ध या स्थापित करना। निस्—१ खेंच के वाहर निकालना।

कुषुभ क्षेपे (११।१२, प०, कुषुभ्यति) १ छोड़ना, फैंकना।

कुस संश्लेषणे (४।१०८, प०, कुस्यति) १ मिलना. २ घेरना।

कुसि (कुंस) भासार्थः[2] (१०। २२३, उ०, कुंसयति, ते; कुंसति[3]) १ चमकना. २ बोलना।

कुस्म नाम्नो वा (१०।१८०, आ०, कुस्मयते) १ विचार करके देखना[4]. २ अयोग्य रीति से हंसना।

अथवा—'कुस्म' नाम से 'णिच्' होता है।

---

१. कुमार के रेफ को लत्व (८।२।१८ वा०)।

२. 'भाषार्थः' पाठ होने पर 'शब्द करना'।

३. इदित् होने से पक्ष में शप्। ४. क्षीर० १।१५७ अन्त में द्र०।

कुह विस्मापने (१०।३२३, आ०, कुहयते) १ उगना. २ आश्चर्य या चमत्कार दिखाना. ३ मोहित करना।

कूङ् शब्दे (६।११०, आ०, कुवते; ९ क्वाचित्कः, उ०, कुनाति-कुनीते) १ दुःखकारक शब्द करना, विह्वल होना।

कूज अव्यक्ते शब्दे (१।१३३, प०, कूजति) १ अस्पष्ट शब्द करना. २ कूजना।

कूट अप्रदाने, अवसादने पाठा० (१०।१७०, आ०, कूटयते) १ नहीं देना. २ अस्पष्ट, गूढ़ या मालूम न हो ऐसा करना, कूट करना. ३ नीचे गिराना।

कूट परितापे परिदाहे च (१०।३१५, उ०, कूटयति, ते) १ दुःख देना. २ जलाना, दग्ध करना. ३ बुलाना, आमन्त्रण करना. ४ सलाह देना, उपदेश करना।

कूड घनत्वे (६ क्वाचित्कः, प०, कूडति) १ दृढ़ होना, कठिन होना. २ खाना।

कूण संकोचने (१०।१५७, आ०, कूणयते; १०।३१७, उ०, कूणयति, ते) १ संकुचित होना. २ ऐंठना।

कून संकोचने (१०।१५७ पाठा०, आ०, कूनयते) १ संकुचित होना. २ ऐंठना।

कूप अशक्तौ (१० क्वाचित्कः, प०, कूपयति) १ अशक्त होना. २ अशक्त करना. ३ छिपना[1]।

कूर्द क्रीडायाम् (१।१६ पाठा०, आ०, कूर्दते) १ खेलना, क्रीडा करना।

कूल आवरणे (१।३५२, प०, कूलति) १ आच्छादित करना, ढांपना. २ छिपाना। अनु—१ अनुकूल होना।

कृञ् हिंसायाम् (५।७, उ०, कृणोति, कृणुते) १ दुःख देना, सताना. २ मार डालना।

कृञ् करणे[2] (८।१०, उ०,

---

१. तु० कौपीनम् अकार्यम्, कूपमृच्छति (अष्टा० ५।२।२०)।

२. 'कृञ् करणे' धातु भ्वादिगण में भी पठित है (द्र० क्षीर० १। ६३६, पुरुषकार पृ० ३४, ३५, पाल्यकीर्ति, हेमचन्द्र, तथा दशपादी उणादि वृत्तिकार प्रभृति)। उसके करति करते रूप भी बनते हैं। सायणाचार्य ने ऋ० १।८२।१ के भाष्य में तथा धातुवृत्ति (१६२६ पृष्ठ २३४) में इसके भ्वादिपाठ का खण्डन किया है। भट्टोजिदीक्षित आदि ने सायण का ही अनुसरण किया है। पाणिनि के तनादिकृञ्भ्य उः (३।१।७९) सूत्र से प्रतीत होता है कि 'कृञ्' का मूल पाठ भ्वादि में ही था, तनादि में नहीं था, अतएव तनादि से पृथक् 'कृञ्' का ग्रहण किया। तनादि में ही पाठ मानने पर

करोति-कुरुते) १ करना। **अति**—(आ०[1]) १ अधिक करना। **अधि**—(आ०) १ जीतना, बढ़कर होना. २ अधिकार होना, चौकस होना. ३ शान्ति से सहन करना, दूसरे के अनुकूल करना। **अप**—(आ०) १ अपकार करना. २ झूठ बोलना, खराब करना। **आ**—(आ०) १ वेषान्तर करना, भेष बदलना। **उत्**—(आ०) १ मार डालना, मरणोन्मुख करना. २ बटोरना, जमा करना। **उदा**—(आ०) १ दूषण लगाना, छलना। **उप**—(प०) १ उपकार करना। **उपस्**[2]—(उ०) १ पलटना, बदलना। **उपस्**—(प०) १ स्वच्छ करना, संवारना. २ बटोरना, जमा करना. ३ उत्तर देना। **तिरस्**—(प०) १ अपमान करना, घृणा करना, तिरस्कार करना। **दुस्** (**दुष्**)—(प०) १ दुष्कर्म करना, काम खराब करना। **निरा**—(आ०) १ भर्त्सना करना, निन्दा करना, तिनके के समान मानना. २ त्यागना, छोड़ देना, निकाल देना. ३ नष्ट करना, विध्वंसित करना। **परिस्** (**परिष्**)—(प०) १ स्वच्छ करना, शोभित करना। **परा**—(प०) निराकरण करना. २ सदाचारपूर्वक रहना, अच्छी रीति से वर्तना। **प्र**—(आ०) १ प्रारम्भ करना. २ सेवा करना, नौकरी करना. ३ जल्दी करना. ४ बांटना. ५ भंग करना. ६ कहना, बोलना। **प्रति**—(आ०) १ प्रतीकार करना. २ बदला लेना. ३ उपाय करना। **प्रत्युप**—(आ०) १ प्रत्युपकार करना। **वि**—(आ०) १ ढूंढना. २ शब्द करना। **वि**—(प०) १ बदलना, रूपान्तर करना. २ सन्तापित करना, कंपित करना। **व्या**—(आ०) १ स्पष्ट करना, प्रकट करना. २ समझाना। **संस्**—(प०) १ स्वच्छ करना, बटोरना, एकत्र करना। **सु**—(प०) १ अच्छा करना।

कृड घनत्वे (६।६१, प०, कुडति)

कृञ् का पृथक् पाठ व्यर्थ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यजुः ३।५८ के भाष्य में लिखा है—'**डुकृञ् करणे**' **इत्यस्य भ्वादिगणान्तर्गतपाठाच्छब्विकरणोऽत्र गृह्यते, तनादिभिः सह पाठाद् उविकरणोऽपि इति**—अर्थात् भ्वादिगण में **डुकृञ् करणे** का पाठ होने से शब्विकरण होता है, और **तनादिकृञ्भ्य उः** (३।१।७९) सूत्र में तनादि के साथ कृञ् का पाठ होने से उविकरण भी होता है।

१. यहां 'आ०'=आत्मनेपद में, 'प०' परस्मैपद में समझें।

२. **उपस् परिस् संस्** निर्देशों में अष्टा० ६।१।१३२ सूत्र वा वार्तिक से होने वाले 'सुट्' का 'सकार' लगा कर रूप दर्शाया है—'उपस्कुरुते, परिष्करोति, संस्करोति' रूप जानने चाहियें।

१ दृढ या कठिन होना. २ जमना, जम जाना।

कृती छेदने (६।१४४, प०, कृन्तति) १ कतरना, काटना। (७। १०, प०, कृणत्ति) १ घेर लेना, वेष्टित करना।

कृप अवकल्कने (१०।२१८, उ०, कल्पयति, ते) १ कल्पना करना, विचार करना. २ मिश्रित करना. ३ चित्रित करना, रंगना।

कृप दौर्बल्ये (१०।२९३, उ०, कृपयति, ते) १ दुर्बल होना।

कृपू सामर्थ्ये (१।५१२, आ०, कल्पते) १ शक्तिमान् होना, समर्थ होना।

कृवि हिंसाकरणयोश्च (१।३९४, प०, [1]कृणोति) १ मार डालना. २ कतरना. ३ सताना. ४ दुःखित होना।

कृवि हिंसाकरणयोश्च (५ क्वाचित्कः, अनिदितश्च, प०, कृवि-णोति) १ मार डालना. २ सताना, दुःख देना।

कृश तनूकरणे (४।११७, प०, कृश्यति) १ कृश होना, सूक्ष्म होना।

कृष विलेखने (१।७१६, प०, कर्षति; ६।६, उ०, कृषति, ते) १ कृषिकर्म करना, जोतना, हल चलाना. २ रेखा करना। **अप**—१ स्राव करना, बहाना. २ हल्का या कमीना करना, हीन करना. ३ तिर-स्कृत करना, घृणा करना। **अव**—१ तिरस्कृत करना. २ निकालना, उद्धृत करना, बाहर निकालना, ऊपर उठाना। **आ**–१ आकर्षण करना, खींचना। **उत्**–१ उठाना, उद्धृत करना, उठा लेना. २ उत्तेजन देना। **सम्**—१ आकुञ्चित करना, समेटना. **सन्नि**—१ खैंच के समीप में लाना।

कॄ विक्षेपे (६।११८, प०, किरति) १ फैंक देना। **अप**–१ हल से रेखा करना. २ विरल करना, अलग करना. ३ उड़ाना, फैंकना। **अव**—१फैंकना। **आ**—१ भरना, भर डालना। **प्रति (ष्)** १ दुःख देना. २ हिंसा करना। **वि**—१ विरल करना, फैंकना। **सम्**—एकत्र करना, बटोरना। **अभि**—१ उलांघना, गर्तगत होना, नष्ट होना। **उप (स्)**—१ छेदन करना, हिंसा करना।

कॄ हिंसायाम् (९।२७, प०, कृणाति) १ दुःख देना, मार डालना।

कॄञ् हिंसायाम् (९।१४, उ०, कृणाति-कृणीते) १ दुःख देना. मार डालना।

कॄत संशब्दे (१०।१२१, उ०,

---

१. भ्वादि होने पर भी '**धिन्विकृण्व्योरच** (३।१।८०) सूत्र से 'श्नु' विकरण होता है।

कीर्तयति, ते) १ प्रसिद्ध करना. २ कीर्तित करना ।

केत आमन्त्रणे (१०।३१६पाठा०, उ०, केतयति, ते) १ बुलाना, आमन्त्रित करना. २ सलाह देना ।

केपृ कम्पने (१।२५७, आ०, केपते) १ जाना. २ कंपित होना ।

केला विलासे (११।२६, आ० केलायते) १ क्रीडा करना, खेलना ।

केलृ चलने (१।३६३, प०, केलति) १ जाना. २ कंपित होना ।

केवृ सेवने (१।३३८, आ०, केवते) १ सेवा करना ।

कै शब्दे (१।६५३, प०, कायति) १ शब्द करना, आवाज करना ।

क्नथ हिंसार्थः (१।५४२ पाठा०, प०, क्नथति; १०।२५२ पाठा०, प०, क्नथयति) १ दुःख देना. २ मार डालना ।

क्नसु ह्वरणदीप्त्योः (४।७, प०, क्नस्यति) १ मन से या शरीर से वक्र होना, २ चमकना ।

क्नसि (क्नंस्) दीप्तौ (१ क्वाचित्कः, प०, क्नंसति; १०, प०, क्नंसयति) १ चमकना ।

क्नूञ् शब्दे (९।८, उ०, क्नुनाति-क्नुनीते) १ शब्द करना, आवाज करना ।

क्नूयी शब्दे उन्दे च (१।३२६, आ०, क्नूयते) १ आवाज करना. २ आर्द्र होना, गीला होना, भीगना. ३ दुर्गन्ध आना, बदबू आना ।

क्मर हूर्च्छने (१।३७४, प०, क्मरति) १ शरीर या मन से टेढ़ा होना. २ वञ्चक होना, ठग बनना ।

क्रथ हिंसार्थः (१।५४२, प०, क्रथति; १०।२५२, उ०, क्रथयति, ते) १ मार डालना ।

क्रथ क्रीडायाम् (१० क्वाचित्कः, प०, क्रथयति) १ बार बार क्रीडा करना, आनन्द वा मनोरञ्जन करना ।

क्रद वैक्लव्ये, वैकल्ये वा (१।५२४, आ०, क्रदते) १ दुःखित होना. २ विकल होना. ३ घबरा जाना ।

क्रदि (क्रन्द्) आह्वाने रोदने च (१।५८, प०, क्रन्दति) १ पुकारना, जोर से बुलाना. २ रोना ।

क्रदि (क्रन्द्) वैक्लव्ये वैकल्ये वा (१।५२३, आ०, क्रन्दते) १ घबराना, दुःखी होना ।

क्रन्द सातत्ये (१०।१९६, उ०, आपूर्वक-आक्रन्दयति, ते) १ बुलाना, पुकारना ।

क्रप कृपायां गतौ च (१।५२२, आ०, क्रपते) १ जाना. २ दया करना ।

क्रमु पादविक्षेपे (१।३१९, आ०

क्रमते-क्रम्यते[1]) १ निर्भयता से जाना. २ रक्षण करना. ३ बढ़ना, वृद्धिगत होना। **आ**—१ उगना, उदित होना। **उप**—१ प्रारम्भ करना। **वि**—१ पग गिनते जाना। **व्या**—१ अतिक्रमण करना, आज्ञा भंग करना। (प०, क्रामति-क्राम्यति) १ जाना, चलना। **अति**—१ बाहर जाना। **आ**—१ जय पाना, अधिक होना। **उत्**—१ अतिक्रमण करना, आज्ञा भंग करना। **उप**—१ निकल जाना। **निस्**—१ आगे जाना। **परा**—१ पराक्रम करना। **प्र**—१ निकल जाना, समीप आना। **परि**—१ घूमना। **वि**—१ जीतना. २ ऊपर जाना। **सम्**—१ स्थानान्तर करना, अन्य जगह जाना।

क्रीञ् द्रव्यविनिमये (९।१, उ०, क्रीणाति-क्रीणीते) १ खरीदना. २ बदले में लेना. ३ जीतना। **वि**—१ बेचना।

क्रीडृ विहारे (१।२४१, प०, क्रीडति) १ खेलना. २ विहार करना. ३ उपहास करना. ४ मन बहलाना। **अनु**—(आ०) १ खेलना। **आ**—**परि**—**सम्**—(आ०) १ खेलना।

क्रुञ्च गतिकौटिल्याल्पीभावयोः (१।११३, प०, क्रुञ्चति) १ समीप जाना या आना. २ वक्र घूमना या जाना. ३ वक्र होना या करना. ४ अल्प होना या करना।

क्रुड निमज्जने (६।१०३, प०, क्रुडति) १ बालक के समान चेष्टा करना. २ डूबना. ३ खाना ४ दृढ होना।

क्रुथ संक्लेशे (९।४६ पाठा०, प०, क्रुथ्नाति) १ मार डालना।

क्रुन्थ संक्लेशे संश्लेषणे च (९।४६ पाठा०, प०, क्रुथ्नाति) १ दुःखित होना, विह्वल होना. २ चिपक के रहना, सटके रहना।

क्रुध क्रोधे (४।७८, प०, क्रुध्यति) १ क्रोध करना, गुस्सा करना।

क्रुश आह्वाने रोदने च (१।५६५, प०, क्रोशति) १ पुकारना. २ रोना। **अनु**—दया करना। **आ**—१ निन्दा करना, गाली देना। **उप**—१ दाग लगाना, दोष देना। **प्र**—१ जोर से पुकारना।

क्लेवृ सेवने (१।३३८ पाठा०, आ०, क्लेवते) १ लेना, सेवन करना. २ भजना।

क्लथ हिंसार्थः (१।५४२, प०, क्लथति) १ दुःख देना. २ मार डालना. ३ घूमना।

---

१. अष्टा० ३।१।७० से श्यन् विकरण। परस्मैपदी होते हुए अष्टा० १।३।३८-४३ तक जिन अर्थों मे आत्मनेपद होता है, उनका पहले निर्देश किया है, परस्मैपद के अर्थ आगे दिये है।

क्लद वैकल्ये वैक्लव्ये च (१। ५२४, आ०, क्लदते) १ घबराना. २ विह्वल होना, दुःखित होना ।

क्लदि (क्लन्द्) आह्वाने रोदने च (१।५८, प०, क्लन्दति) १ बुलाना, पुकारना. २ रोना ।

क्लदि (क्लन्द्) वैकल्ये वैक्लव्ये च (१।५२३, आ०, क्लन्दते) १ घबराना. २ दुःखित होना ।

क्लप अव्यक्तायां वाचि (१०। १२७, उ०, क्लपयति, ते) १ अस्पष्ट बोलना. २ क्रूरता से बोलना ।

क्लमु ग्लानौ (४।६७, प०, क्लाम्यति) १ श्रमित होना, थक जाना. २ कुम्हलाना ।

क्लव भये (१ क्वाचित्कः, आ०, क्लवते; ४, आ०, क्लव्यते) १ डरना ।

क्लिदि (क्लिन्द्) परिदेवने (१। १४, आ०, क्लिन्दते; १।५६ प०, क्लिन्दति) १ रोना, शोक करना ।

क्लिदू आर्द्रीभावे (४।१२८, प०, क्लिद्यति) १ आर्द्र होना, गीला होना ।

क्लिश उपतापे (४।५०, आ०, क्लिश्यते) १ दुःखी होना, दुःख सहन करना ।

क्लिशू विबाधने (९।५३, प०, क्लिश्नाति) १ क्लेश या दुःख देना. २ हरकत करना. ३ दुःख सहन करना ।

क्लीबृ अधाष्टर्ये (१।२६५, आ०, क्लीवते) १ दुर्बल होना, निर्बल होना, वीर्यरहित होना. २ लज्जालु या डरपोक होना ।

क्लीवृ अधाष्टर्ये (१।२६५ पाठा०, आ०, क्लीवते) १ दुर्बल होना, निर्बल होना, वीर्यरहित होना. २ लज्जालु या डरपोक होना ।

क्लुङ् गतौ (१।६८५, आ०, क्लवते) १ जाना ।

क्लेवृ सेवने (१।३३८ पाठा०, आ०, क्लेवते) १ सेवा करना ।

क्लेश अव्यक्तायां वाचि बाधने च (१।४०२, आ०, क्लेशते) १ अस्पष्ट शब्द करना. २ मार डालना. ३ बुरा व्यवहार करना. ४ दुःख देना, सताना ।

क्वण शब्दे (१।३०३, प०, क्वणति) १ शब्द करना. २ क्वण क्वण ऐसा शब्द करना ।

क्वथे निष्पाके (१।५८५, प०, क्वथति) १ उबालना, पकाना, काढा बनाना ।

क्ष्वेलृ कम्पने (१ क्वाचित्कः, प०, क्ष्वेलति) १ कम्पित होना, हिलना ।

क्षज गतिदानयोः (१।५२० पाठा०, आ०, क्षजते) १ जाना, सरकना. २ देना, दान करना, भेंट में देना ।

क्षजि (क्षञ्ज्) कृच्छ्रजीवने

(१०।८७, उ०, क्षञ्जयति,ते,क्षञ्जति[1] १ दुःख सहन करना, विपत्ति में रहना।

क्षणु हिंसायाम् (८।३, उ०, क्षणोति-क्षणुते) १ मारना, जान से मारना. २ दुःख देना, सताना. ३ तोड़ना।

क्षद भक्षणहिंसनयोः (१ क्वाचित्कः, प०, क्षदति) १ खाना, भक्षण करना. २ मुक्की मारना, कूटना. ३ ढकना. ४ मार डालना।

क्षप प्रेरणे (१०।३६६ उदाहरणरूपः, उ०, क्षपयति, ते) १ भेजना. २ सहन करना. ३ झुकना।

क्षप संयमे (१ क्वाचित्कः, उ०, क्षपति, ते) १ संयमी होना।

क्षपि (क्षम्प्) क्षान्त्याम् (१०।८६, उ०, क्षम्पयति, ते; क्षम्पते[1]) १ सहन करना, सहना. २ दया करना. ३ चमकना।

क्षमूष् (क्षम्) सहने (१।३०१, आ०, क्षमते; ४।६६, प०, क्षाम्यति) १ सहन करना, सहना. २ क्षमा करना. ३ समर्थ होना. ४ रोकना।

क्षर संचलने (१।५६०, प०, क्षरति) १ टपकना, सरना, झरना, चूना. २ गिरना, हिलना. ३ गिराना, हिलाना, ढहाना. ४ गलना. ५ अनुपयुक्त होना. ६ बहना। **सम्**— १ बहना। (१० क्वाचित्कः, आ०, आक्षारयते) १ दोष लगाना, निन्दा करना।

क्षल गतौ (१ क्वाचित्कः, प०, क्षलति) १ जाना, सरकना. २ कांपना, थरथराना।

क्षल शौचकर्मणि (१०।६४, उ०, क्षालयति, ते) १ स्वच्छ करना, पवित्र करना, धोना। **प्र**—१ धोना।

क्षि क्षये (१।१४५, प०, क्षयति) १ सूक्ष्म होना, ह्रास होना, कम होना. २ नष्ट करना।

क्षि हिंसायाम् (५।३०, प०, क्षिणोति; ६ क्वाचित्कः, प०, क्षिणाति) १ मार डालना, जान से मारना. २ दुःख देना, सताना. ३ क्षत विक्षत करना, घाव करना।

क्षि निवासगत्योः (६।११६, प०, क्षियति) १ जाना, चलना. २ निवास करना, रहना, वसना।

क्षिणु हिंसायाम् (८।४, उ०, क्षिणोति-क्षिणुते, क्षेणोति[2]-क्षेणुते[2]) १ मार डालना. २ दुःख देना, पीड़ा करना।

क्षिद अव्यक्ते शब्दे (१ क्वाचित्कः, प०, क्षेदति) १ अस्पष्ट शब्द करना. २ कराहना।

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप्।

२. मतान्तरे गुणः, द्र० माधवीया धातुवृत्तिः ८।" ऋणु धातु पर।

क्षिप प्रेरणे (४।१५, प०, क्षिप्यति) १ फैंकना, उड़ाना, भेजना। (६।५, उ०, क्षिपति, ते) १ फैंकना, उड़ाना, झोंकना. २ भेजना. ३ रखना, धरना. ४ मार डालना. ५ दोष लगाना. ६ नष्ट करना। **अधि**—१ दोष लगाना, आरोप लगाना। **अव**—१ नीचे फैंकना। **आ**—१ उपहास करना, ठट्ठा करना. २ आकर्षण करना, खींचना। **उत्**—१ उठाना, उठा लेना। **नि**—१ रखना। **पर्या**—१ बांधना। **प्र**—१ जोर से फैंकना। **वि**—१ फैलाना। **विनि**—१ देना. २ छोड़ना। **समा**—१ भेजना। **सम्**—१ संक्षेप करना. २ नष्ट करना. ३ आकर्षण करना, खींचना।

क्षिवु निरसने (१।३८१, प०, क्षेवति; ४ क्वाचित्कः, प०, क्षीव्यति) १ मुख से थूक बाहर निकालना, थूकना, कै करना।

क्षीज् अव्यक्ते शब्दे (१।१४६, प०, क्षीजति) १ अस्पष्ट शब्द करना. २ कराहना. ३ खीजना, दुःखी होकर बड़बड़ाना।

क्षीबृ मदे (१।२६६, आ०, क्षीबते) १ मदोन्मत्त होना, मस्त होना।

क्षीवृ मदे (१।२६६ पाठा०, आ०, क्षीवते) १ मदोन्मत्त होना, मस्त होना।

क्षीञ् हिंसायाम् (१ क्वाचित्कः, उ०, क्षयति, ते; ९।३९, प०, क्षीणाति) १ दुःख देना, पीड़ा करना. २ मार डालना।

क्षु शब्दे (२।२६, प०, क्षौति) १ छींकना. २ खखारना।

क्षुदिर् संपेषणे (७।६, उ०, क्षुणत्ति-क्षुन्ते) १ कूटना, पीसना, मुक्की मारना. २ कुचलना।

क्षुध बुभुक्षायाम् (४।७६, प०, क्षुध्यति) १ क्षुधित होना, भूख लगना।

क्षुभ संचलने (१।५०२, आ०, क्षोभते) १ मथना. २ क्रोध करना, गुस्सा होना। (४।१२६, प०, क्षुभ्यति; ९।५१, प०, क्षुभ्नाति) १ मथना।

क्षुर विलेखने (६।५५, प०, क्षुरति) १ कतरना, चीरना, छेदना. २ लकीर खींचना।

क्षेड अदने (१० क्वाचित्कः, उ०, क्षेडयति, ते) १ भक्षण करना, खाना।

क्षेवु निरसने (१।३८१, प०, क्षेवति) १ मदोन्मत्त होना, मस्त होना।

क्षै क्षये (१।६५२, प०, क्षायति) १ नष्ट होना, ह्रास होना, कम होना, म्लान होना।

क्षोट क्षेपे (१०।३००, उ०, क्षोटयति, ते) १ भेजना. २ फैंकना।

क्ष्णु तेजने (२।३०, प०, क्ष्णौति;

आ०, संक्ष्णुते) १ तीक्ष्ण करना, पैना करना, तेज करना।

क्ष्मायी विधूनने (१।३२७, आ०, क्ष्मायते) १ हिलना, कांपना. २ हिलाना, कपाना।

क्ष्मील निमेषणे (१।३४७, प०, क्ष्मीलति) १ पलक झपकना, पलक मारना।

क्ष्विड अव्यक्ते शब्दे (१ क्वाचित्कः, प०, क्ष्वेडति) १ अस्पष्ट शब्द करना।

क्ष्विडा स्नेहमोचनयोः (४।१३० पाठा०, प०, क्ष्विड्यति) १ तेल की मालिश करना, चुपड़ना।

क्ष्विदा स्नेहनमोचनयोः (१।४६७, आ०, क्ष्वेदते; ४।१३०, प०, क्ष्विद्यति) १ नहलाना, तेल की मालिश करना, चुपड़ना. २ मुक्त करना, छोड़ देना. ३ अस्पष्ट शब्द करना (क्वाचित्कः)।

क्ष्वेल चलने (१।३६३, प०, क्ष्वेलति) १ जाना. २ कांपना, थरथराना. ३ कूदना. ४ खेलना।

ख

खक्ख हसने (१।८५ पाठा, प०, १ हंसना।

खच प्रादुर्भावे (१ क्वाचित्कः, प०, खचति; ६।६१, प०, खच्नाति) १ मर्यादा होने पर भी देर से जन्म लेना. २ संपत्तियुक्त करना. ३ स्वेच्छया पवित्र पावन करना।

खच बन्धने (१० क्वाचित्कः, प०, खचयति) १ खैंच के बांधना. २ खरोचना।

खज मन्थे (१।१४१, प०, खजति) १ मथना, हिलाना, मन्थन करना।

खजि (खञ्ज्) गतिवैकल्ये (१। १४२, प०, खञ्जति) १ लंगड़ा होना, लंगड़ाना।

खट कांक्षायाम् (१।२०२, प०, खटति) १ चाहना. २ शोध करना, ढूंढना।

खट्ट संवरणे (१०।१००, उ०, खट्टयति, ते) १ आच्छादन करना, छिपाना, ढांपना।

खड भेदने (१०।४६, उ०, खाडयति, ते) १ टुकड़े करना, खण्ड करना।

खडि (खण्ड्) मन्थे (१।१८२, आ०, खण्डते) १ मथना, विलौना।

खडि (खण्ड) भेदने (१०।४६, उ०, खण्डयति, ते; खण्डति[1]) १ टुकड़े करना. २ विभाग करना, खण्डित करना।

खद भक्षणे स्थैर्ये हिंसायाञ्च

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप्।

(१।४०, प०, खदति) १ खाना. २ मार डालना. ३ सताना. ४ स्थिर रहना ।

खद आच्छादने (१० क्वाचित्कः, प०, खादयति) १ आच्छादित करना ।

खनु अवदारणे (१।६१८, उ०, खनति, ते) १ दुःख देना. २ खोदना ।

खर्ज व्यथने पूजने च (१।१३८, प०, खर्जति) १ दुःख देना, सताना. २ स्वच्छ करना, साफ करना. ३ आतिथ्य पूजन करना, सम्मान करना ।

खर्द दन्तशूके (१।४६, प०, खर्दति) १ चबाना, दांतों से काटना ।

खर्ब गतौ (१।२८८, प०, खर्बति) १ जाना. २ गर्व करना ।

खर्व दर्पे (१।३८८, प०, खर्वति) १ हठ करना. २ गर्व करना ।

खल संचलने संचये च (१।३६६, प०, खलति) १ स्थानान्तर करना, जाना. २ बटोरना ।

खव भूतप्रादुर्भावे (६।६२, प०, खौनाति) १ सम्पत्तियुक्त करना. २ स्वच्छ करना, पवित्र करना. ३ द्रव्य स्पष्ट करना. ४ मर्यादा होने पर भी बहुत देर से जन्म लेना ।

खष हिंसार्थः (१।४६२, प०, खषति) १ मार डालना, सताना ।

खादृ भक्षणे (१।३६, प० खादति) १ खाना ।

खिट त्रासे (१।१६७, प०, खेटति) १ डराना. २ दुःख देना, सताना ।

खिद त्रासे (क्वाचित्कः १, प०, खेदति) १ भय दिखाना, घबराना. २ सताना, दुःख देना ।

खिद दैन्ये (४।५६, आ०, खिद्यते; ७।१२, आ०, खिन्ते) १ खिन्न होना, दुःख सहन करना. २ दीनता प्रकट करना ।

खिद परिघाते (६।१४५, प०, खिन्दति) १ दुःख देना, सताना. २ रोकना ।

खिल उञ्छे[1] अवशेषे च (६ क्वाचित्कः, प०, खिलति) १ बीनना, उञ्छन करना. २ बचना, शेष रहना ।

खुङ् शब्दे (१।६८२, आ०, खवते) १ आवाज करना, शब्द करना ।

खुजु स्तेयकरणे (१।११७, प०, खोजति) १ चुराना, मूसना ।

खुड संवरणे संघाते च (१ क्वाचित्कः, प०, खोडति; ६।६७,६८,

---

१. इसी धातु से परिशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त 'खिल' शब्द निष्पन्न होता है, खिलपाठ भी उञ्छन के समान ही होते हैं। अवशेषार्थक खिल शब्द भी इसी धातु से बनता है। नखिल अखिल=अशेष=सम्पूर्ण ।

प०, खुडति; १० क्वाचित्कः, प०, खोडयति) १ छिपाना. २ मारना. ३ टुकड़े करना. ४ निकालना ।

खुडि (खुण्ड्) खण्डने (१०।५३, उ०, खुण्डयति, ते; खुण्डति[1]) १ टुकड़े करना, चीरना ।

खुडि (खुण्ड्) गतिवैकल्ये (१ क्वाचित्कः, आ०, खुण्डते) १ लंगड़ा कर चलना ।

खुर छेदने (६।५३, प०, खुरति) १ कतरना, चीरना. २ खुरचना ।

खुर्द क्रीडायाम् (१।१६, आ०, खुर्दते) १ खेलना, क्रीडा करना ।

खेट भक्षणे (१०।२६७, उ०, खेटयति, ते) १ खाना, भक्षण करना ।

खेड भक्षणे (१०।२६८, उ०, खेडयति, ते) १ खाना, भक्षण करना ।

खेलृ चलने गतौ च (१।३६३, ३६४, प०, खेलति) १ कम्पित होना. २ खेलना. ३ जाना ।

खेला विलासे (११।२६, प०, खेलायति) १ विलास करना, क्रीडा करना ।

खेवृ सेवने (१।३३८, आ०, खेवते) १ सेवा करना, नौकरी करना ।

खै खदने (१।६५१, प०, खायति) १ स्थिर रहना. २ मार डालना. ३ सताना. ४ दुःख करना. ५ खोदना ।

खोट भक्षणे (१०।२६६, उ०, खोटयति, ते) १ खाना, भक्षण करना. २ खोट मिलाना, सोने आदि में खोट मिलाकर चुराना । (क्वचित् क्षेपे—१०।३०) १ निन्दा करना. २ खोटे मार्ग पर चलना ।

खोड क्षेपे (१०।३०० पाठा०, प०, खोडयति) १ निन्दा करना. २ निन्दित मार्ग अपनाना ।

खोर्ऋ गतिप्रतिघाते (१।३७१, प०, खोरति) १ लंगड़ाना

खोलृ गतिप्रतिघाते (१।३७१, प०, खोलति) १ लंगड़ाना ।

ख्या प्रकथने (२।५३, प०, ख्याति) १ प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना. २ कहना, व्याख्यान करना । **अभि**—१ देदीप्यमान होना, चमकना । **आ**—१ कीर्तिमान् होना । **वि**—१ प्रख्यात करना । **सु**— पसन्द होना । **प्रत्या**—१ नाहीं करना, खण्डन करना । **सम्**—१ गिनना, संकलन करना । **समा**—१ संज्ञा देना, नाम रखना ।

खुङ् शब्दे (१।६८३, आ०, खवते) १ शब्द करना ।

ग

गग्घ हसने (१।६२ पाठा०, प०, गग्घति) १ हंसना ।

गज शब्दे मदे च (१।१५२,

[1] इदित् होने से पक्ष में शप् ।

१९३, प०, गजति) १ शब्द करना. २ मदोन्मत्त या बेसुध होना ।

गज शब्दार्थः (१०।११६, उ०, गाजयति, ते) १ शब्द करना ।

गजि (गञ्ज्) शब्दार्थः (१।१५२, प०, गञ्जति) १ शब्द करना ।

गड सेचने (१।५२७, प०, गडति; १० क्वाचित्कः, प०, गडयति) १ बहना, झरना. २ सींचना. ३ टपकाना ।

गडि (गण्ड) वदनैकदेशे (१।५३; २५१, प०, गण्डति) १ गालों में रोग होना, गण्डमाला होना ।

गण संख्याने (१०।२८१, प०, गणयति) १ गिनना, नापना. २ मानना, समझना । **अधि**—१ बखानना, स्तुति करना. २ गिनना ।

गद व्यक्तायां वाचि (१।४२, प०, गदति) १ स्पष्ट बोलना. २ बीमार होना[1] ।

गदी देवशब्दे (१०।२८५, उ०, गदयति, ते) १ मेघ की गर्जना ।

गद्गद वाक्स्खलने (११।२५, प०, गद्गद्यति) १ गद्गद् स्वर से बोलना, अतिहर्ष या अतिशोक से रुके हुये कण्ठ से बोलना ।

गध मिश्रणे (४ क्वाचित्कः, प०, गध्यति) १ मिश्रित होना, मिल जाना. २ मिश्रित करना, मिलाना ।

गन्ध अर्दने (१०।१५२, आ०, गन्धयते) १ दुःख देना. २ मार डालना. ३ जाना. ४ मांगना, याचना करना. ५ लजाना. ६ शोभित करना ।

गम्लृ गतौ (१।७०६, प०, गच्छति) १ जाना. २ इष्टार्थ सिद्ध होना । **अनु**—१ अनुसरण करना, दूसरे को देख के वैसा ही करना । **आ**—१ आना. २ बीच में या किसी ओर जाना । **अधि**—१ मिलना, प्राप्त होना. २ पुस्तकादि पढ़ना. ३ त्यागना, छोड़ देना । **अप**—१ लौट आना । **अव**—१ जानना । **उत्**—१ निकलना, ऊपर उठना । **उप**—१ नजदीक जाना २ पैदा करना. ३ अनुमोदन करना, सलाह देना । **उपा**—१ नजदीक जाना या आना । **दुर्**—१ दुःख से जाना । **नि**—१ ज्ञान प्राप्ति करना । **निर्**—१ आगे जाना. २ बाहर जाना । **पर्युत्**—१ ऊपर उठाना । **परि**—१ घेर लेना. २ बाहर जाना । **प्रत्या**—१ लौट आना । **वि**—१ शत्रु की ओर चढ़ जाना । **समा**—१ मिलना, एकत्र होना । **समुप**—१ स्वीकार करना, मान्य करना । **सु**—१ आनन्द से या

१. नञ्पूर्वक नीरोगार्थक '**अगद**' (धातु ११।३६) के प्रयोग में 'गद' का अर्थ 'रोग' स्पष्ट दिखाई देता है । अतः 'गद' धातु का अर्थ 'बीमार होना भी है ।

खुशी से जाना. २ पार जाना। सम्—(आ०) १ साथ जाना. २ मिलना, एकत्र होना. ३ (सकर्मक) जाना।

गर्ज शब्दे (१।१३५, प०, गर्जति; १०।१३३, उ०, गर्जयति, ते) १ शब्द करना, गर्जना करना।

गर्द शब्दे (१।४६, प०, गर्दति; १०।१३३, उ०, गर्दयति, ते) १ शब्द करना, गर्जना करना।

गर्ध अभिकांक्षायाम् (१०।१३४, उ०, गर्धयति, ते) १ चाहना करना, आशा करना।

गर्ब गतौ (१।२८८, प०, गर्बति) १ जाना।

गर्व दर्पे (१।३८८, प०, गर्वति) १ गर्व करना, हठ करना। **माने**— (१०।३२८, आ, गर्वयते) १ अभिमान करना।

गर्ह कुत्सायाम् (१।४२४, आ०, गर्हते; १०।२७२, उ०, गर्हयति, ते) १ दोष लगाना, निन्दा करना. २ दुःखित होना।

गल अदने (१।३६७, प०, गलति) १ निगलना. २ खाना. ३ भक्षण करना।

गल स्रवणे (१०।१६८, आ०, गलयते) १ टपकना। **अव**—१ नीचे गिरना। **वि**—१ जाना, नजदीक आना. २ मदद देना, साह्य करना। **परि**—१ टपकना. २ डूबना. ३ नष्ट होना. ४ गल जाना।

गल आस्वादने (१०।२०४, उ०, गालयति, ते) १ खाना। **नि**— १ निगलना।

गल्भ धाष्टर्चे (१।२७५, आ०, गल्भते) १ धैर्य रखना, साहस करना।

गल्ह कुत्सायाम् (१।४२४, आ०, गल्हते) १ दोष देना, निन्दा करना।

गवेष मार्गणे (१०।३०८, उ०, गवेषयति, ते; क्वचित्—गवेषते) १ ढूंढना, पता लगाना. २ प्रयत्न करना।

गह घनत्वे (१० क्वाचित्कः, प०, गहयति) १ घना होना, निबिड़ होना।

गा स्तुतौ (३।२३, प०, जिगाति) १ प्रशंसा करना, सराहना।

गाङ् गतौ (१।६८१, आ०, गाते) १ जाना, गमन करना।

गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च (१।४, आ०, गाधते) १ ढूंढना. २ ठहरना, रहना. ३ ग्रन्थ बनाना।

गाहू विलोडने (१।४३२, आ०, गाहते) १ नष्ट करना. २ मर्म भेद करना. ३ फेरना, हिलाना। **अव**— १ स्नान करना, अवगाहन करना। **वि**—१ स्नान करना. २ कांपना।

गु पुरीषोत्सर्गे (६।१०७, प०,

गुवति) १ हगना, झाड़ा होना, दस्त होना।

गुङ् अव्यक्ते शब्दे शब्दे वा (१। ६८०, ६८२, आ०, गवते) १ अस्पष्ट बोलना. २ शब्द करना।

गुज अव्यक्ते शब्दे (१।११६, प०, गोजति) १ अस्पष्ट बोलना।

गुज शब्दे (६।७८, प०, गुजति) १ शब्द करना. २ गुञ्जारव करना।

गुजि (गुञ्ज्) अव्यक्ते शब्दे (१।११६, प०, गुञ्जति) १ अस्पष्ट बोलना, गुञ्जारव करना (भौंरे की ध्वनि)।

गुठि (गुण्ठ्) वेष्टने रक्षणे च (१०।५२, उ०, गुण्ठयति, ते) १ घेरना, परदा डालना. २ रक्षा करना।

गुडि (गुण्ड्) वेष्टने रक्षणे च (१०।५१, उ०, गुण्डयति, ते) १ घेर लेना, घेरना. २ पीसना, चूर्ण करना. ३ संरक्षण करना।

गुड रक्षायाम्[1] (६।७६, प०, गुडति) १ संरक्षण करना, बनाना।

गुण आमन्त्रणे (१०।३१६, उ०, गुणयति, ते) १ बुलाना, आमन्त्रण करना. २ उपदेश करना. ३ गुणा करना, गुणन करना. ४ सलाह करना, विचार विमर्श करना।

गुद क्रीडायाम् (१।१६, आ०, गोदते) १ खेलना, क्रीडा करना।

गुध क्रीडायाम् (१।१६ पाठा०, आ०, गोधते) १ खेलना, क्रीडा करना।

गुध परिवेष्टने (४।१४, प०, गुध्यति) १ घेरना।

गुध रोषे (६।४६, प०, गुध्नाति) १ क्रोध करना, गुस्सा करना।

गुद्रि (गुन्द्र्) अनृतभाषणे (१०। ६ पाठा०, उ०, गुन्द्रयति, ते; गुन्द्रते[2]) १ अनृत बोलना, झूठ कहना।

गुप गोपने (१।६६७, आ०, जगुप्सते[3]) १ बचाना, संरक्षण करना. २ लुकाना, छिपाना. ३ दोष लगाना, निन्दा करना।

गुप व्याकुलत्वे (४।१२३, प०, गुप्यति) १ व्याकुल होना, भ्रान्त होना. २ व्याकुल करना, भ्रान्त करना।

गुप भासार्थः भाषार्थो वा (१। २२३, उ०, गोपायति, ते) १ प्रकाशना, चमकना. २ बोलना।

गुपू रक्षणे (१।२७६, प०, गोपति) १ रक्षा करना।

गुफ ग्रन्थे (६।३१, प०, गुफति) १ गूंथना, गुम्फन करना. २ रचना।

---

१. गुडतीति गोडः, गॉड **God**, तुलना करो अवति रक्षतीति ओम्।
२. इदित् होने से पक्ष में शप्। ३. निन्दार्थ में सन्(अष्टा० ३।१।५)।

गुम्फ ग्रन्थे (६।३१, प०, गुम्फति) १ गूंथना, गुम्फन करना. २ रचना।

गुर उद्यमने(१०।१६३,आ०, गोरयते) १ प्रयत्न करना, उद्योग करना। आ–निन्दा करना। अव–निन्दा करना। उप –समीप बुलाना।

गुरी उद्यमने (६।१०४, आ०, गुरते) १ प्रयत्न करना, उद्योग करना।

गुर्द क्रीडायाम् (१।१६, आ०, गूर्दते) १ क्रीडा करना, खेलना।

गुर्द निकेतने (१०।१३५, उ०, गुर्दयति, ते) १ रहना, वास करना, बसना. २ आमन्त्रण करना, बुलाना।

गुर्वी उद्यमने (१।३८३, प०, गूर्वति) १ प्रयत्न करना, उद्योग करना।

गुहू संवरणे (१।६३७, उ०, गोहति, ते) १ छिपाना, वस्त्रादि से ढांकना।

गू पुरीषोत्सर्गे (६।१०७ पाठा०, प०, गुवति) १ हगना, मल विसर्जन करना।

गूर उद्यमने (१०।१६३ पाठा०, आ०, गूरयते) १ प्रयत्न करना, उद्योग करना. २ भक्षण करना, खाना।

गूरी हिंसागत्योः (४।४४, आ०, गूर्यते) १ मार डालना, दुःख देना. २ जीर्ण होना, पुराना होना. ३ जाना, गमन करना। आ—१ निन्दा करना। अव—१ निन्दा करना। उप—१ समीप जाना।

गूर्द क्रीडायाम् (१।१६ पाठा०, आ०, गूर्दते) १ क्रीडा करना, खेलना।

गृ सेचने (१।६७१, प०, गरति) १ सींचना, गीला करना।

गृ विज्ञाने (१०।१७६ पाठा०, आ०, गारयते) १ समझना, जानना।

गृज शब्दार्थः (१।१५२, प०, गर्जति) १ गर्जना करना, पुकारना।

गृजि (गृञ्ज्) शब्दार्थः (१।१५२, प०, गृञ्जति) १ गर्जना करना, पुकारना।

गृधु अभिकाङ्क्षायाम् (४।१३२, प०, गृध्यति) १ चाहना।

गृह ग्रहणे (१०।३२१, आ०, गृहयते) १ लेना, स्वीकार करना।

गृहू ग्रहणे (१।४३३, आ०, गर्हते) १ लेना, स्वीकार करना।

गॄ निगरणे(६।११६,प०,गिरति-गिलति[1]) १ खाना, निगलना।

गॄ शब्दे (६।२६, प०, गृणाति) १ शब्द करना। नि-उत्- १ कै करना, वमन करना।

---

१. अचि विभाषा (८।२।२१) से विकल्प से 'र' को 'ल'।

गॄ विज्ञाने (१०।१७६, आ०, गारयते) १ समझना, जानना, २ समझाना, जताना । **समुत्**—१ जोर से पुकारना. २ ऊपर फेंकना ।

गेपृ कम्पने (१।२५७, आ०, गेपते) १ कांपना, हिलना. २ जाना, स्थलान्तर करना ।

गेवृ सेवने (१।३३७, आ०, गेवते) १ सेवा करना ।

गेषृ अन्विच्छायाम् (१।४०६, आ०, गेषते) १ ढूंढना, पता लगाना ।

गै शब्दे (१।६५३, प०, गायति) १ गाना । **उत्–प्र**—१ जोर से गाना या जोर से कहना । **वि**—१ निश्चयपूर्वक कहना ।

गोम उपलेपने (१०।३०१, उ०, गोमयति, ते) १ लीपना, पोतना ।

गोष्ट संघाते (१।१५८, आ०, गोष्टते) १ बटोरना ।

गोष्ठ संघाते (१।१५८ पाठा०, आ०, गोष्ठते[1]) १ मिलकर रहना, बटोरना ।

ग्रथि (ग्रन्थ्) कौटिल्ये (१।२६, आ०, ग्रन्थते) १ वक्र होना, टेढा होना. २ दुष्ट होना. ३ गांठ बांधना. ४ गूथना । **अव**—१ चादर आदि से मुख आदि का छिपाना ।

ग्रन्थ संदर्भे (९।४५, प०, ग्रथ्नाति; १०।२६४, प०, ग्रन्थयति) १ ग्रन्थ लिखना. २ सन्दर्भ लगाना ।

ग्रन्थ बन्धने (१०।२५१, प०, ग्रन्थयति) १ बांधना. २ गांठ लगाना । **उत्**—१ छोड़ देना, मुक्त करना ।

ग्रस ग्रहणे (१०।२२०, उ०, ग्रासयति, ते) १ घेर लेना. २ हरण करना ।

ग्रसु अदने (१।४२०, आ०, ग्रसते) १ खाना, निगलना ।

ग्रह उपादाने (९।६४, उ०, गृह्णाति-गृह्णीते) १ लेना, स्वीकार करना । **अनु**—(उ०) १ कृपा करना, अनुग्रह करना । **अव**—(उ०) १ अटकाना । **उत्**—(प०) १ विश्वास करना । **उप**—१ कृपा करना. २ भरना. ३ प्रतिबन्ध करना. अटकाव करना । **परि**—१ घरना, पकड़ना, लेना । **प्रति**—१ अनुमोदन देना, हां कहना. २ गले लगाना, आलिंगन करना. ३ जीतना. ४ प्रतिग्रह करना, लेना. ५ अंगीकार करना । **वि**-झगड़ना, अलग अलग करना । **सम्**—१ बटोरना, एकत्र करना ।

ग्राम आमन्त्रणे (१०।३१६,

---

१. 'गोष्ठी' मिलकर बातचीत करना । 'गोठ करना' (मारवाड़ी में) मिलकर विशेष भोजन करना ।

उ०, ग्रामयति, ते) १ बुलाना. २ बुद्धिपूर्वक कहना. ३ इकट्ठा होना[1]।

ग्रुङ् शब्दे (१।६८३, आ०, ग्रुवते) १ शब्द करना।

ग्रुचु स्तेयकरणे (१।११७, प०, ग्रोचति) १ चुराना, चोरी करना।

ग्लसु अदने (१।४२०, आ०, ग्लसते) १ खाना, हजम करना।

ग्लह ग्रहणे (१।४३४, उ०, ग्लहति, ते; १० कथाचित्कः, ग्लहयति) १ लेना, स्वीकार करना।

ग्लुचु स्तेयकरणे (१।११७, प०, ग्लोचति) १ चोरना, मूसना।

ग्लुञ्चु गतौ (१।११८, प०, ग्लुञ्चति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

ग्लेपृ दैन्ये कम्पने च (१।२५५, २५७, आ०, ग्लेपते) १ पराधीन होना. २ दरिद्र होना. ३ जाना. ४ हिलना, कांपना।

ग्लेवृ सेवने (१।३३७, आ०, ग्लेवते) १ सेवा करना।

ग्लेषृ अन्विच्छायाम् (१।४१०, आ०, ग्लेषते) १ ढूंढना, शोध करना।

ग्लै हर्षक्षये (१।६४४, प०, ग्लायति) १ म्लान होना, ग्लानियुक्त होना. २ जम्हाई लेना।

घ

घग्घ हसने (१।६२ पाठा०, प०, घग्घति) १ हंसना, उपहास करना।

घघ हसने (१।६२, प०, घघति) १ हंसना, उपहास करना।

घट चेष्टायाम् (१।५१४, आ०, घटते) १ होना. २ रचना करना।

घट संघाते (१०।१६१, उ०, घाटयति, ते) १ घोटना, हिलाना. २ बटोरना, एकत्र करना. ३ मार डालना। उत्—उद्घाटन करना।

घट भासार्थः (१०।२२३, उ०, घटयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना।

घटि (घण्ट) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, घण्टयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ शब्द करना, बोलना।

घट्ट चलने (१।१५६, आ०, घट्टते; १०।६८, उ०, घट्टयति, ते) १ जाना, स्थानान्तर करना। **परि**—१ फैलाना, घोटना। **वि**—१ मांजना, धोना. २ बिगाडना।

घण दीप्तौ (८।७, पाठा०, उ०, घणोति-घणुते) १ चमकना, प्रकाशित होना।

---

१. 'ग्राम' शब्द समूहार्थक भी है। इसी का निर्देश समूहार्थ में **गुणादिभ्यो ग्रामज् वक्तव्यः** (४।२।३७) वार्तिक से प्रत्यय रूप में किया है—**गुणग्रामः, इन्द्रियग्रामः**।

घर्ब गतौ (१।२८८ पाठा०, प०, घर्बति) १ जाना।

घष घर्षणे (१ क्वाचित्कः, आ०, घषते) १ घिसना. २ घिस के स्वच्छ करना।

घस्लृ अदने (१।४७४, प०, घसति) १ खाना।

घसि (घंस्) सेचने (१ क्वाचित्कः, आ०, घंसते) १ सींचना, प्रोक्षण करना।

घिणि (घिण्ण्) ग्रहणे (१।२९६, आ०, घिण्णते) १ लेना।

घुङ् शब्दे (१।६९२, आ०, घवते) १ आवाज करना।

घुट परिवर्तने (१।४९९, आ०, घोटते) १ लौटना, पीछे आना. २ बदलना, बदल देना।

घुट प्रतिघाते (६।९४, प०, घुटति) १ मारना, मन मसोस कर घुटते रहना. २ प्रतिकार करना. ३ प्रतिबन्ध लगाना. ४ रक्षण करना।

घुड प्रतिघाते (६।९४ पाठा, प०, घुडति) १ प्रतिकार करना. २ मार डालना।

घुण भ्रमणे (१।२९७, आ०, घोणते; ६।५०, प०, घुणति) १ चक्राकार फिरना, घूमना, लोटना।

घुणि (घुण्ण्) ग्रहणे (१।२९६, आ०, घुण्णते) १ लेना।

घुर भीमार्थशब्दयोः (६।५६, प०, घुरति) १ भयंकर होना. २ शब्द करना, आवाज करना. ३ घुर्राना, घूरना।

घुषि (घुंष्) कान्तिकरणे (१।४३५, आ०, घुंषते) १ स्वच्छ करना, साफ करना, चमकाना।

घुषिर् (घुष्) अविशब्दने[1] (१।४३६, प०, घोषति) १ चुपके काम करना।

घुषिर् (घुष्) विशब्दने (१०।१९५, उ०, घोषयति, ते) १ मन में विचार कर कहना. २ प्रशंसा करना, घोषित करना. ३ तरह तरह के शब्द करना। आ—१ मिलकर रोना. २ ढिंढोरा पीटना।

घुरी हिंसावयोहान्योः (४।४५, आ०, घूर्यते) १ हिंसा करना, दुःख देना. २ वृद्ध होना, पुराना होना।

घूर्ण भ्रमणे (१।२९७, आ०, घूर्णते; ६।५०, प०, घूर्णति) १ चक्राकार घूमना।

घृ सेचने (१।६७१, प०, घरति) १ गीला करना, तरडा देना, सींचना।

घृ क्षरणदीप्त्योः (३।१४, छान्दसः, प०, जिघर्त्ति) १ टपकना, क्षरित होना. २ चमकना, प्रकाशित होना।

घृ प्रस्रवणे (१०।११८, उ०,

---

१. काशिकाकारमते भ्वादावपि 'अशब्दने' एव। द्र० ७।२।२३॥

धारयति, ते) १ बूंद बूंद गिरना, टपकना।

घृणि (घृण्ण्) ग्रहणे (१।२९६, आ०, घृण्णते) १ लेना, स्वीकार करना।

घृणु दीप्तौ (८।७, उ०, घृणोति, घर्णोति[1]; घृणुते-घर्णुते[1]) १ चमकना, प्रकाशित होना।

घृषु संघर्षे (१।४७०, प०, घर्षति) १ पीसना. २ कूटना. ३ घिसना।

घोर्ऋ गतिचातुर्ये (१।३७२, प०, घोरति) १ चतुराई से चलना।

घ्रा गन्धोपादाने (१।६६०, प०, जिघ्रति[2]) १ सूंघना. क्वचित्— २ चूमना।

घ्रुङ् शब्दे (१।६८३, आ०, घ्रवते) १ शब्द करना।

ङ

ङुङ् शब्दे (१।६८२, आ०, ङवते) १ शब्द करना, आवाज करना।

च

चक तृप्तौ प्रतिघाते च (१।७३, प०, चकति) १ तृप्त होना, सन्तुष्ट होना. २ चकमा देना, धोखा देना।

चक तृप्तौ (१।५३२, आ०, चकते) १ तृप्त होना, सन्तुष्ट होना।

चकासृ दीप्तौ (२।६७, प०, चकास्ति; क्वचित्—आ०, चकास्ते) १ चमकना, प्रकाशित होना।

चक्क व्यथने (१०।६३, उ०, चक्कयति, ते) १ दुःख देना, दुःख पाना।

चक्षिङ् (चक्ष्) व्यक्तायां वाचि (२।७, आ०, चष्टे) १ साफ बोलना. कहना. २ देखना। आ—१ देखना।

चञ्चु गत्यर्थः (१।१९६, प०, चञ्चति) १ जाना. २ कूदना. ३ हिलना।

चट भेदने (१०।१६०, उ०, चाटयति, ते) १ मार डालना. २ तोडना। उत्—१ उच्चाटन करना।

चटे वर्षावरणयोः (१।१९१, प०, चटति) १ बरसना. २ ढांकना, कनात लगाना।

चडि (चण्ड्) कोपे (१।१७७, आ०, चण्डते; १०।५६, उ०, चण्डयति, ते) १ गुस्सा करना. २ घूंसा मारना।

चण् दाने गतौ च (१।५४०, प०, चणति) १ दान करना, देना. २ जाना. ३ शब्द करना (घुने हुए चनों के समान थोथा शब्द करना)।

---

१. 'पक्ष में गुण', द्र० धातुवृत्ति ८।५ की व्याख्या के अन्त में।

२. अष्टा० ७।३।७८ से 'जिघ्र' आदेश।

चते याचने (१।६०७, उ०, चतति, ते) १ मांगना, याचना करना. २ जाना ।

चदि (चन्द्) आह्लादने दीप्तौ च (१।५६, प०, चन्दति) १ चमकना. २ आनन्द पाना, खुश होना ।

चदे याचने (१।६०७, उ०, चदति, ते) १ मांगना. २ जाना ।

चन हिंसार्थः (१।५४३, प० चनति) १ दुःख देना, मार डालना २ शब्द करना ।

चन श्रद्धोपहननयोः (१०।२६७, उ०, चनयति, ते; पक्षे–चनति) १ भरोसा रखना, विश्वास करना. २ मारना, दुःख देना ।

चप सान्त्वने (१।२८३, प०, चपति) १ शान्त करना, समझाना ।

चप परिकल्कने (१०।९३, उ०, चपयति, ते) १ पीसना. २ कूटना. ३ ठगना ।

चपि (चम्प्) गत्याम् (१०।८५, उ०, चपयति, ते; चम्पति[1]) १ जाना ।

चमु अदने (१।३१७, प०, चमति; ५।२६, प०, चम्नोति) १ खाना. २ पाना । **आ**—(आचमति) १ आचमन करना, पतला पदार्थ मुंह में लाना । **वि**—(विचमति) १ खाना ।

चय गतौ (१।३२०, आ०, चयते) १ जाना ।

चर गतौ भक्षणे च (१।३७६, प०, चरति) १ जाना. २ खाना. ३ आचरण करना । **अति**—१ आज्ञा भंग करना । **अत्या**—१ अत्याचार करना । **अभि**—१ ठगना. २ जादू टोना करना[2]. ३ ध्यान देना । **अनु**—१ अनुसरण करना, नकल करना । **आ**—१ कर्म करना, आचरण करना । **उत्**-- (आ०) १ आज्ञा भंग करना. २ देश से निकाल देना । **उत्**—(प०) १ ऊपर जाना, उच्चारण करना । **उप**—१ सेवा करना, सम्मान देना. २ नजदीक जाना । **परि**—१ सेवा करना । **प्र**—१ प्रसिद्ध करना. २ आचरण करना । **व्यभि**—१ दुष्कर्म करना. व्यभिचार करना । **सम्**—(प०) १ साथ जाना । **सम्**—(आ०) १ ऊपर चढ़ना । **समा**—१ प्रसिद्ध करना. २ अच्छा आचरण करना । **वि**—१ घूमना ।

चर संशये (१०।२१४, उ०, चारयति, ते) १ संशय होना । **वि**—१ विचार करना. २ संशयरहित होना ।

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप् ।

२. जिन्हें आजकल जादू कहा जाता है, वह मूलरूप से मानसिक चिकित्सा के अंग थे, उत्तरकाल में इनका रूप विकृत हो गया ।

चरण गतौ (१।।२१, प०, चरण्यति) १ जाना।

चर्च परिभाषणहिंसातर्जनेषु (१।४७५; ६।१७, प०, चर्चति) १ बोलना, चर्चा करना. २ गाली देना, निन्दा करना. ३ दुःख देना. ४ विचारना. ५ ढूंढना।

चर्च अध्ययने (१०।१८१, उ०. चर्चयति, ते) १ पढ़ना, अध्ययन करना. २ पदच्छेद करना (चर्चा-पाठ = पदपाठ कहाता है)।

चर्व गतौ अदने च (१।२८८, २८६, प०, चर्वति) १ जाना. २ खाना. ३ चवाना।

चर्व अदने(१।३८६, प०, चर्वति; १० क्वाचित्कः, प०, चर्वयति) १ खाना. २ चवाना।

चल कम्पने (१।५७४, प०, चलति) १ हिलना, कांपना, चलना। **णिच्—कम्पन में-चलयति, गति में—** चालयति।

चल विलसने (६।६६, प०, चलति) १ खेलना, क्रीडा करना।

चल भृतौ (१०।७५, उ०, चालयति, ते) १ पालना, बढ़ाना।

चष भक्षणे (१।६२६, उ०, चषति, ते) १ खाना।

चह परिकल्कने (१।४८४, प०, चहति; १०।६२, उ०, चाहयति, ते) १ ठगना. २ दुष्कर्मी होना. ३ गर्वीला होना। (१०।२६१ अदन्त, उ०, चहयति, ते) १ पीसना, कूटना।

चायृ पूजानिशामनयोः (१।६२०, उ०, चायति, ते) १ पूजा करना, सम्मान करना. २ जानना, समझना।

चिञ् चयने(५।५, उ०, चिनोति, चिनुते; १०।६६, उ०, चपयति[1], ते; [1]चययति, ते; चयति[2], ते) १ ढूंढना. २ बटोरना, एकत्र करना।
अप—१ नाश करना, विध्वंस करना।
सम्—संचय करना. जोड़ना।
उप—सम्—१ पाना, प्राप्त करना।
निर्—१ निश्चय करना, ठहराना।
विनिर्—१ ठीक निश्चय करना।

चिक्क व्यथने (१०।६३ पाठा०, उ०, चिक्कयति, ते) १ पीडा करना, दुःख देना।

चिट परप्रैष्ये (१।२०८, प०, चेटति; १० क्वाचित्कः, प०, चेटयति) १ सेवक होना २ सेवक के समान आज्ञा का पालन करना।

चित संचेतने (१०।१४४, आ०, चेतयते) १ विचार करना, चिन्तन करना. २स्मरण करना, याद करना।

---

१. **चिस्फुरोर्णौ** (अष्टा० ६।१।५३) इति आत्वे पुक्, मित्त्वाद् ह्रस्वत्वम्। २. **ञित्वात् णिच् विकल्पेन।** द्र० मा० धा० वृ० १०।८१॥

चिति (चिन्त्; **स्मृत्याम्** (१०।२, उ०, चिन्तयति, ते; चिन्तति[1]) १ चिन्तन करना, स्मरण करना, याद करना. २ चिन्ता करना।

चिती संज्ञाने (१।३२, प०, चेतति) १ विचार करना, चिन्तन करना. २ होश में आना।

चित्र चित्रीकरणे (१०।३४४, उ०, चित्रयति, ते) १ तस्वीर खींचना, चित्र बनाना. २ आश्चर्य करना. ३ आश्चर्य से देखना।

चिरि हिंसायाम् (५।३०, प०, चिरिणोति) १ पीडा करना, दुःख देना।

चिल वसने (६।६५, प०, चिलति) १ कपड़े पहनना।

चिल्ल शैथिल्ये भावकरणे च (१।३६०, चिल्लति) १ मुक्त करना, ढीला करना. २ मन का भाव दिखाना. ३ कामबुद्धि से वर्तना।

चिह्न संकेते (१० क्वाचित्कः, प०, चिह्नयति) १ चिह्न करना, निशान करना।

चीक आमर्षणे (१०।२५४, उ०, चीकयति, ते; चीकति[2]) १ सहन करना, सहना. २ उतावला होना, असहिष्णु होना. ३ छूना, स्पर्श करना।

चीबृ आदानसंवरणयोः (१।६१६ पाठा०, प०, चीबति) १ लेना, स्वीकार करना. २ धारण करना, पहनना।

चीभृ कत्थने (१।२६८, प०, चीभति) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ व्याजस्तुति करना।

चीयृ आदानसंवरणयोः (१।६१६ पाठा०,उ०, चीयति, ते) १लेना, स्वीकार करना. २ धारण करना, पहनना।

चीव भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, चीवयति, ते) १ चमकना. २ बोलना।

चीवृ आदानसंवरणयोः (१।६१६, उ०, चीवति, ते) १ लेना. २ पहनना. ३ पकड़ना।

चुक्क व्यथने (१०।६३, उ०, चुक्कयति, ते) १ दुःख देना. २ दुःख होना।

चुच्य अभिषवे (१।३४३, प०, चुच्यति) १ अर्क निकालना. २ नहाना, स्नान करना।

चुट छेदने (१ क्वाचित्कः, प०, चोटति; ६।८६, प०, चुटति; १०।८०, उ०, चोटयति, ते) १ कतरना, चोट मारना. २ छोटा होना, कलाहीन होना।

---

१. इदित् होने से णिच् के अभाव में शप्। द्र० धातुवृत्तिः॥

२. आधृषाद्वा (१०।३३०) से विकल्प से णिच्, पक्ष में शप्।

चुटि (चुण्ट्) अल्पीभावे (१।२१६ पाठा०, प०, चुण्टति) १ अल्प होना, परिमित होना।

चुटि (चुण्ट्) छेदने (१०।१२८, प०, चुण्टयति) १ कतरना, तोड़ना. २ चूंटियां भरना, नोचना।

चुट्ट अल्पीभावे (१०।३०, उ०, चुट्टयति, ते) १ कम होना, अल्प होना. २ बटोरना।

चुडि (चुण्ड्) अल्पीभावे (१।२१६, प०, चुण्डति) १ कम होना, अल्प होना २ चुटकी भर परिमाण (द्र० 'चुण्डी भर' पंजाबी में)।

चुडि (चुण्ड्) छेदने (१०।१२८ पाठा०, प०, चुण्डयति) १ कतरना, तोड़ना।

चुड संवरणे (६।१०२, प०, चुडति)१ लपेटना,घेरना. २ छिपाना।

चुड्ड भावकरणे (१।२३८, प०, चुड्डति) १ वर्तना. २ कामक्रीडा करना. ३ अभिप्राय सूचित करना. ४ इशारा करना।

चुत् स्रवणे (१ क्वाचित्कः, प०, चोतति) १ गीला होना या करना. २ चूना।

चुद संचोदने (१०।६१, उ०, चोदयति, ते) १ प्रेरणा करना. २ पूछना, प्रश्न करना. ३ प्रार्थना करना।

चुप मन्दायां गतौ (१।२८६, प०, चोपति) १ धीरे धीरे चलना।

चुबि (चुम्ब्) वक्त्रसंयोगे (१।२९२, उ०, चुम्बति, ते) १ चूमना।

चुबि (चुम्ब्) हिंसायाम् (१०।१०१, उ०, चुम्बयति, ते) १ हिंसा करना, मार डालना।

चुर स्तेये (१०।१, उ०, चोरयति, ते) १ चुराना, मूसना।

चुरण चौर्ये (११।२२, प०, चुरण्यति) १ चुराना, मूसना।

चुल समुच्छ्राये (१०।६९, उ०, चोलयति, ते) १ बढ़ाना, ऊंचा करना. २ भिगोना, डुबोना।

चुलुम्प छेदने अन्तभावे च (वार्तिककारीय[1], प०, चुलुम्पति) १ कतरना. २ अन्तर्धान होना, नष्ट होना. ३ डोलना। उत्—१ भूलना।

चुल्ल भावकरणे (१।३८५, प०, चुल्लति) १ अपना अभिप्राय बताना।

चूरी दाहे (४।४७ आ०, चूर्यते) १ जलाना, भस्म करना।

चूर्ण संकोचने (१०।११०, उ०, चूर्णयति, ते) १ प्रेरणा करना.

---

१. 'कास्यनेकाच इति वक्तव्यं चुलुम्पाद्यर्थम्' (वा० ३।१।३५) इति वचनात्।

२ आकर्षण करना. ३ सिकुड़ना। सम्—१ टुकड़े टुकड़े कर देना।

चूर्ण प्रेरणे (१०।१६, उ०, चूर्णयति, ते) १ खींचना, संकोच करना।

चूर्ण पेषणे (नामधातु-अष्टा० ३।१।२५, उ०, चूर्णयति, ते) १ चूर्ण करना, पीसना, दबाना।

चूष् पाने (१।४५१, प०, चूषति) १ चूसना।

चृत संदीपने (१०।२४५ पाठा०[1], चर्तयति, चर्तति) १ प्रकाशित करना, जलाना।

चृती हिंसाग्रन्थनयोः (६।३५, प०, चृतति) १ पीडा करना, मार डालना. २ एकत्र करके बांधना. ३ गूंथना।

चृप संदीपने (१०।२४५, उ०, चर्पयति, ते; चर्पति) १ प्रकाशित करना, चमकाना।

चेलृ चलने (१।३६३, प०, चेलति) १ कम्पित होना, हिलना।

चेष्ट चेष्टायाम् (१।१५७, आ०, चेष्टते) १ चेष्टा करना।

च्यु हसने सहने च (१०।२१५, उ०, च्यावयति, ते) १ हंसना. २ सहना, सहन करना।

च्युङ् गतौ (१।६८४, आ०, च्यवते) १ गिरना, गिर पड़ना. २ भटकना. ३ जाना।

च्युतिर् (च्युत्) आसेचने (१।३३, प०, च्योतति) १ सींचना, भिगोना, बहना।

च्युस हसने सहने च (१०।२१६, उ०, च्योसयति, ते) १ हंसना. २ सहन करना. ३ मुक्त करना, छोड़ देना. ४ पीडा देना, मार डालना।

छ

छद संवरणे (१०।२४८, उ०, छादयति, ते) १ आच्छादित करना, ढकना। आ—१ ढकना।

छद अपवारणे (स्वरितेत्, १०।२६०, उ०, छादयति, ते; छदति, ते[2]; अदन्त—१०।३६२, उ०, छदयति, ते) १ हटाना. २ छिपाना. ३ बचाना।

छदि (छन्द्) संवरणे (१०।४६, उ०, छन्दयति, ते; छन्दति[3]) १ ढकना, आच्छादन करना, लपेटना।

छदिर् ऊर्जने (१।५५३, प०, छदति) १ बलवान् होना या करना।

छमु अदने (१।३१७, प०, छमति) १ खाना।

छर्द वमने (१०।५६, उ०, छर्द-

---

१. द्र० क्षीरतरङ्गिणी १०।२१३॥

२. आधृषाद्वा (१०।२३०) नियम से पक्ष में णिच्, स्वरितेत् होने से णिच् के अभाव में भी उभयपद। ३. इदित् होने से पक्ष में शप्।

यति, ते) १ वमन करना या होना, कै करना।

छष हिंसायाम् (१।६३०, आ०, छषते) १ मारना।

छिदिर् (छिद्) द्वैधीकरणे (७। ३, उ०, छिनत्ति-छिन्ते) १ छिन्न भिन्न करना, । आ—१ बलपूर्वक टुकड़े करना । उत्—१ हिंसा करना. २ कतरना । वि—१ अलग अलग करना या होना।

छिद्र कर्णभेदने (१०।३५२, उ०, छिद्रयति, ते) १ कानों को छिदवाना। 'भेदने' पाठ में—छेद करना।

छुट छेदने (६।८६, प०, छुटति; १० क्वाचित्कः, प०, छोटयति) १ कतरना, तोड़ना. २ छोटा करना।

छुड् संवरणे (६।६७, प०, छुडति) १ ढ़कना, आच्छादित करना।

छुप स्पर्शे (६।१२८, प०, छुपति) १ छूना, स्पर्श करना।

छुर छेदने (६।८१, प०, छुरति) १ कतरना, तोड़ना।

छृदिर् (छृद्) दीप्तिदेवनयोः (७।८, उ०, छृणत्ति-छृन्ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ क्रीडा करना, खेलना । उत्—१ कै करना, वमन करना।

छृदी संदीपने (१०।२४४, उ०, छर्दयति, ते; छर्दति[1]) १ जलाना, प्रज्वलित करना।

छृप संदीपने (१०।२४५, उ०, छर्पयति, ते; छर्पति[1]) १ जलाना।

छेद द्वैधीकरणे (१०।३६१, उ०, छेदयति, ते) १ कतरना. २ छेद करना । वि—पृथक् पृथक् करना।

छो छेदने (४।३७, प०, छ्यति) १ कतरना, छांटना।

ज

जक्ष भक्षहसनयोः (२।६४, प०, जक्षिति) १ खाना. २ हंसना।

जज युद्धे (१।१४६, प०, जजति) १ युद्ध करना,लड़ाई करना, मारना।

जजि (जञ्ज्) युद्धे (१।१४६, प०, जञ्जति[2]) १ युद्ध करना, लड़ाई करना, मारना।

जट संघाते (१।१६६, प०, जटति) १ जमा होना, एकत्र होना. २ हिंसा करना।

जन जनने (३।२२, प०, जजन्ति) १ उत्पन्न होना, प्रकट होना।

जनी प्रादुर्भावे (४।४०, आ०,

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) नियम से णिच् के अभाव में शप्।

२. फारसी का समझा जाने वाला 'जङ्ग' शब्द भी इसी से बना घञ्-प्रत्ययान्त शुद्ध संस्कृत शब्द है।

जायते) १ उत्पन्न होना, पैदा होना। णिच्–१ उत्पन्न करना, पैदा करना।

जप व्यक्तायां वाचि मानसे च (१।२८१, २८२, प०, जपति) १ स्पष्ट बोलना. २ जपना, जप करना. ३ मन में बोलना, नहीं सुन पड़े ऐसा कहना।

जभि (जम्भ्) गात्रविनामे (१। २७२ पाठा०, आ०, जम्भते) १ जम्हाई लेना।

जभि (जम्भ्) नाशने (१०।१८५, उ०, जम्भयति, ते) १ नष्ट करना।

जभी गात्रविनामे (१।२७२, आ०, जभते) १ जम्हाई लेना।

जमु अदने (१।३१७, प०, जमति) १ खाना, भक्षण करना।

जर्ज परिभाषणहिंसातर्जनेषु (१। ४७५; ६।१७, प०, जर्जति) १ बोलना, कहना. २ डराना. ३ हिंसा करना. ४ निन्दा करना, दोष लगाना. ५ ताड़ना करना।

जर्झ परिभाषणभर्त्सनयोः (६। १७ पाठा०, प०, जर्झति) १ बोलना, कहना. २ निन्दा करना, दोष लगाना. ३ बुरा भला कहना।

जल घातने (१।५७५, प०, जलति) १ तीक्ष्ण होना, तेजस्वी होना या करना, पैना करना. २ श्रीमान् होना, धनवान् होना, सम्पन्न होना।

जल अपवारणे (१०।१०, उ०, जालयति, ते) १ ढांकना, निवारण करना, जाल से ढांकना।

जल्प व्यक्तायां वाचि (१।२८१, प०, जल्पति) १ बोलना. २ बकना।

जष हिंसार्थः (१।४६२, प०, जषति) १ मार डालना, पीडा देना।

जसि (जंस्) रक्षणे मोक्षणे च (१०।१३६, उ०, जंसयति, ते) १ संरक्षण करना. २ मुक्त करना, छोड़ देना।

जसु मोक्षणे (४।१०१, प०, जस्यति) १ मुक्त करना, छोड़ देना।

जसु हिंसायाम् (१०।१३८, उ०, जासयति, ते) १ मार डालना, पीडा देना।

जसु ताडने (१०।१८७, उ०, जासयति, ते) १ ताड़ना करना. २ उपेक्षा करना।

जागृ निद्राक्षये (२।६५, प०, जागर्ति) १ जगना, नींद न लेना।

जि जये अभिभवे च (१।३७८, ६७८, प०, जयति) १ सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना. २ जीतना, पराभव करना। **वि—** (आ०) १ जीतना। **परा—** (आ०) १ पराजित होना, पराजय करना।

जिमु अदने (१।३१८, उ०, जेमति, ते) १ खाना, भक्षण करना, जेमना।

जिरि हिंसायाम् (५।३०, प०, जिरिणोति) १ हिंसा करना, दुःख देना।

जिवि (जिन्व्) प्रीणनार्थः (१। ३६२, प०, जिन्वति) १ संतुष्ट करना, प्रसन्न करना. २ आनन्द पाना. ३ मुक्त करना. छोड़ देना।

जिवि (जिन्व्) भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, जिन्वयति, ते) १ दीप्त होना, प्रकाशित होना. २ बोलना।

जिषु सेवने सेचने च (१।४६५, जेषति) १ सेवा करना. २ प्रोक्षण करना, सींचना।

जीव प्राणधारणे (१।३७६, प०, जीवति) १ जीना। **आ**—१ उदर निर्वाह के लिये कमाना। **उप**—उदर निर्वाह के लिये पराधीन होना, नौकरी करना। **सम् - प्र**—१ सुख से रहना, सुखी होना।

जुगि (जुङ्ग्) वर्जने (१।६१, प०, जुङ्गति) १ त्यागना, छोड़ देना. २ वर्जित करना. ३ जाति बहिष्कृत करना।

जुङ् गतौ (१।६८४ पाठा०, आ०, जवते) १ जाना. २ जल्दी जाना, भागना।

जुड गतौ बन्धने च (६।३७, ८७, प०, जुडति) १ जाना. २ जूड़ा बनाना, बांधना. ३ जोड़ना।

जुड प्रेरणे प्रेषणे च (१०।११५, उ०, जोडयति, ते) १ प्रेरणा करना, भेजना. २ चूर्ण करना, पीसना।

जुडि (जुण्ड्) प्रेरणे प्रेषणे च (१०। ११५, पाठा, प०, जुण्डयति) १ प्रेरणा करना, भेजना. २ पीसना, चूर्ण करना।

जुतृ भासने (१।२६, आ०, जोतते) १ प्रकाशित होना, चमकना।

जुन गतौ (६।३८, प०, जुनति) १ जाना. २ हिलना, कांपना।

जुष परितर्कणे (१०।२६१, उ०, जोषयति, ते; जोषति[1]) १ विचार करना. २ पीड़ा करना. ३ मार डालना. ४ चाहना, दुलारना।

जुषी प्रीतिसेवनयोः (६।८ आ०, जुषते) १ सेवा करना. २ प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना।

जूरी हिंसावयोहान्योः (४।४५, आ०, जूर्यते) १ जीर्ण होना. २ गुस्सा करना. ३ मार डालना, दुःख देना।

जूष हिंसायाम् (१।४५८, उ०, जूषति, ते) १ पीडा करना, मारना।

जृभि (जृम्भ्) गात्रविनामे (१। २७२, आ०, जृम्भते) १ जम्हाई लेना।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप् होता है।

२. द्र० सायणीया धातुवृत्तिः १०।७६।।

जॄ वयोहानौ (१०।२३८, उ०, जारयति, ते; जरति[२]) १ वृद्ध होना, जीर्ण होना।

जॄष् वयोहानौ (४।२१, प०, जीर्यति) १ जीर्ण होना, बृद्ध होना।

जेषृ गतौ (१।४१२, आ०, जेषते) १ जाना।

जेहृ प्रयत्ने (१।४२८, आ०, जेहते) १ उत्कण्ठापूर्वक यत्न करना. २ जाना।

जै क्षये (१।६५२, प०, जायति) १ क्षीण होना, ह्रास होना, कम होना।

ज्ञप अवबोधन–मारण–तोषण–निशामनेषु (१०।६०, उ०, ज्ञापयति, ते) १ जानना, समझना. २ सिखाना, समझाना. ३ आनन्दित करना, प्रसन्न करना. ४ मारना, ठोकना. ५ तीक्ष्ण करना, पैना करना. ६ देखना।

ज्ञा अवबोधने (६।४०, उ०, जानाति-जानीते) १ जानना, समझना। **अनु**—१ अनुमोदन करना, आज्ञा करना. २ स्वीकार करना, मान्य करना। **अप**—१ छिपाना, आच्छादित करना, लुकाना। **अप**—१ नहीं जानना। **अव**—१ अपमान करना, मान खण्डन करना। **उप**—१ प्रथम जानना, पहिले समझना। **परि**—१ जान लेना, परिज्ञान कर लेना। **प्र**—१ अच्छी तरह जानना। **सम्**—१ प्रतिज्ञा करना, प्रण करना, वचन देना. २ अंगीकार करना, स्वीकार करना. ३ अनुमोदन करना, आज्ञा करना। **प्रत्यभि**—१ पहिचानना। **वि**—१ स्पष्ट जानना। **सम्**—१ उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करना. २ अच्छी तरह जानना, समझना।

ज्ञा नियोगे (१०।२००, उ०, आज्ञापयति, ते) १ आज्ञा करना।

ज्या वयोहानौ (६।३०, प०, जिनाति) १ जीर्ण होना, वृद्ध होना. २ पुराना होना।

ज्युङ् गतौ (१।६८४, आ०, ज्यवते) १ नजदीक आना या जाना।

ज्युतृ भासने (१।२६ पाठा०[१], आ०, ज्योतते) १ कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना।

ज्रि अभिभवे (१।६७८, प०, ज्रयति) १ जीतना, जय पाना. २ कम होना, न्यून होना।

ज्रि वयोहानौ (१०।२३६ उ०, ज्राययति, ते; ज्रयति[२]) १ वृद्ध होना, जीर्ण होना।

१. 'ज्योतिस्' शब्दसाधक 'ज्युत' स्वतन्त्र धातु है। इसका निर्देश यास्कीय निघण्टु १।१६ तथा कौत्सव्य निघण्टु खं० २० में स्पष्ट मिलता है। विशेष द्र० क्षीरतरङ्गिणी (रा० ला० क० ट्र० सं०) पृष्ठ १६ पर हमारी टिप्पणी। २. 'आघृषाद्वा' (१०।२३०) से णिच् के अभाव में शप्।

ज्री वयोहानौ (९।२४ पाठा०, ज्रिणाति) १ वृद्ध होना, जीर्ण होना।

ज्वर रोगे (१।५२६, प०, ज्वरति) १ ज्वर आना, बीमार होना।

ज्वल दीप्तौ (१।५४५, ५७३, प०, ज्वलति) १ प्रकाशित करना या होना. २ जलाना या जलना। णिच्–(ज्वलयति[1]) १ जलाना. २ प्रकाशित करना।

झ

झट संघाते (१।१९९, प०, झटति) १ जुटाना, एकत्र होना. २ तलवार के एक वार से ही मारना, झटका करना।

झमु अदने (१।३१७, प०, झमति) १ खाना, भक्षण करना।

झर्झ परिभाषण–हिंसा–तर्जनेषु (१।४७५; ६।१७, प०, झर्झति) बोलना, कहना. २ निन्दा करना, दोष लगाना. ३ मार डालना, दुःख देना।

झष हिंसार्थः (१।४९२, प०, झषति) १ मार डालना, दुःख देना।

झष आदानसंवरणयोः (१।६३१, प०, झषति) १ ग्रहण करना, लेना. २ वस्त्रादि धारण करना, वस्त्र पहिरना।

झॄ वयोहानौ (९।२५, प०, झृणाति) १ वृद्ध होना, जीर्ण होना. २ नष्ट होना, झरना।

झॄष् वयोहानौ (४।२१, प०, झीर्यति) १ वृद्ध होना, जीर्ण होना. २ नष्ट होना, झरना।

ञ

ञिइन्धी (रु०) — द्र० इन्धी
ञिक्ष्विदा (भ्वा०)—द्र० क्ष्विदा
ञिक्ष्विदा (दि०)—द्र० क्ष्विदा
ञितृष (दि०) — द्र० तृष
ञित्वरा (भ्वा०) -- द्र० त्वरा
ञिधृषा (स्वा०) – द्र० धृषा
ञिफला (भ्वा०) – द्र० फला
ञिभी (जु०) — द्र० भी
ञिमिदा (भ्वा०)—द्र० मिदा
ञिमिदा (दि०)—द्र० मिदा
ञिष्वप् (अ०)—द्र० ष्वप
ञिष्विदा (भ्वा०) – द्र० ष्विदा
ञिष्विदा (दि०) — द्र० ष्विदा

ट

टकि (टङ्क्) बन्धने (१०।१०५, उ०, टङ्कयति, ते; टङ्कति[2]) १ बांधना, टांकना, जोड़ना।

टल वैक्लव्ये (१।५७६, प०, टलति) १ विह्वल होना, दुःखित होना, हृद्रोगी होना।

टिकृ गत्यर्थः (१।७४, आ०, टेकते) १ जाना. २ टिकाना।

---

१. धातुपाठ १।५४५ से मित्संज्ञा। २. इदित् होने से पक्ष में शप्।

टीकृ गत्यर्थ: (१।७४ आ०, टीकते) १ जाना. २ टिकना।

टुओश्वि (भ्वा०)—द्र० श्वि

टुओस्फूर्जा (भ्वा०)—द्र० स्फूर्जा

टुक्षु (अ०)—द्र० क्षु

टुदु (भ्वा०)—द्र० दु

टुनदि (भ्वा०)—द्र० नदि

टुभ्राजृ (भ्वा०)—द्र० भ्राजृ

टुभ्राशृ (भ्वा०)—द्र० भ्राशृ

टुभ्लाशृ (भ्वा०)—द्र० भ्लाशृ

टुमस्जो (तु०)—द्र० मस्जो

टुयाचृ (भ्वा०)—द्र० याचृ

टुवम (भ्वा०)—द्र० वम

टुवेपृ (भ्वा०)—द्र० वेपृ

ट्वल वैक्लव्ये (१।५७६, प०, ट्वलति) १ विह्वल होना, दु:खित होना।

ड

डप संघाते (१०।१४७, आ०, डापयते) १ एकत्र करना, बटोरना, राशि करना।

डिप क्षेपे (४।१२१, प०, डिप्यति; ६।८०, प०, डिपति; १०।१४२, उ०, डेपयति, ते) १ भेजना. २ फैंकना, उड़ाना. ३ निन्दा करना।

डिप संघाते (१०।१४७, उ०, डेपयति, ते) १ मारना. २ एकत्र करना, बटोरना।

डीङ् विहायसा गतौ (१।६६५, आ०, डयते; ४।२५, आ०, डीयते) १ आकाश में उड़ जाना. २ जाना। अव—१ आकाश से उतरना। उत्—१ ऊपर उड़ना। परि—१ चक्राकार उड़ना। प्र—१ चपलता से उड़ना। सम्—१ समूह के साथ उड़ना। समुत्—१ ठहर ठहर के धीरे धीरे उड़ना।

डुकृञ् (त०)—द्र० कृञ्

डुक्रीञ् (क्र्या०)—द्र० क्रीञ्

डुदाञ् (जु०)—द्र० दाञ्

डुधाञ् (जु०)—द्र० धाञ्

डुमिञ् (स्वा०)—द्र० मिञ्

डुल उत्क्षेपे (१० कश्चाचित्क:, उ०, डोलयति, ते) १ ऊपर फैंकना. २ झूले की तरह ऊपर नीचे होना।

डुलभष् (भ्वा०)—द्र० लभष्

डुवप (भ्वा०)—द्र० वप

ढ

ढुढि (ढुण्ढ्) अन्वेषणे (१ क्वाचित्क:[1], प०, ढुण्ढति) १ ढूंढना।

ढौकृ गतौ (१।७४, आ०, ढौकते) १ जाना, स्थानान्तर करना। उप—१ आगे आ समीप में रखना।

---

१. काशकृत्स्नधातुपाठे १।१६१ धातुरूपम्।

ण

निम्न णकारादि धातुओं को साथ में निर्दिष्ट नकारादि धातुओं में देखें।

णक्ष (भ्वा०)—द्र० नक्ष

णख (भ्वा०)—द्र० नख

णखि (भ्वा०)—द्र० नखि

णट (भ्वा०)—द्र० नट

णद (भ्वा०)—द्र० नद

णद (चु०)—द्र० नद

णभ (भ्वा०)—द्र० नभ

णभ (दि०)—द्र० नभ

णभ (क्या०)—द्र० नभ

णम (भ्वा०)—द्र० नम

णय (भ्वा०)—द्र० नय

णल (भ्वा०)—द्र० नल

णश (दि०)—द्र० नश

णस (भ्वा०)—द्र० नस

णह (दि०)—द्र० नह

णासृ (भ्वा०)—द्र० नासृ

णिक्ष (भ्वा०)—द्र० निक्ष

णिजि (अ०)—द्र० निजि

णिजिर् (जु०)—द्र० निजिर्

णिदि (भ्वा०)—द्र० निदि

णिदृ (भ्वा०)—द्र० निदृ

णिल (तु०)—द्र० निल

णिवि (भ्वा०)—द्र० निवि

णिश (भ्वा०)—द्र० निश

णिसि (अ०)—द्र० निसि

णीञ् (भ्वा०)—द्र० नीञ्

णील (भ्वा०)—द्र० नील

णीव (भ्वा०)—द्र० नीव

णु (अ०)—द्र० नु

णुद (तु०)—द्र० नुद

णू (तु०)—द्र० नू

णेदृ (भ्वा०)—द्र० नेदृ

णेषृ (भ्वा०)—द्र० नेषृ

त

तक हसने (१।८२, प०, तकति) १ उपहास करना. ठठ्ठा करना। सहने इत्येके—१ सहना, सहन करना। व्यति—१ उपहास प्रत्युपहास करना।

तकि (तङ्क्) कृच्छ्रजीवने (१। ८३, प०, तङ्कति) १ दुःख (तङ्गी) से दिन बिताना।

तक्ष त्वचने (१।४४६, प०, तक्षति) १ आच्छादित करना।

तक्षू तनूकरणे (१।४३८, प०, [1]तक्षति) १ छीलना। अनु—पैना करना, धार लगाना। सम्—१ टुकड़े करना. २ घाव करना।

तगि (तङ्ग) गत्यर्थः (१।८८,

[1]. तनूकरणे तक्षः (३।१।७६) से श्नु विकरण भी होता है—तक्ष्णोति।

प०, तङ्गति) १ जाना. २ कांपना, हिलना. ३ ठोकर लग के गिर पड़ना।

तञ्चु गत्यर्थः (१।११६, प०, तञ्चति) १ जाना।

तञ्चू संकोचने (७।२१, प०, तनक्ति) १ संकुचित होना, संकोच होना।

तट उच्छ्राये (१।२०१, प०, तटति)१ ऊंचा होना, वृद्धिगत होना।

तड आघाते (१०।४८, उ०, ताडयति, ते) १ मारना, ताड़न करना।

तड भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२५, उ०, ताडयति, ते)१ चमकना. २ धमकाना।

तडि (तण्ड्) ताडने (१।१७६, आ०, तण्डते) १ मारना, ताड़न करना।

तत्रि (तन्त्र्) कुटुम्बधारणे (१०।१४८, प०, तन्त्रयति)१ फैलाना २ कुटुम्ब पोषण करना. ३ प्रधान होना।

तनु विस्तारे(८।१, उ०, तनोति, तनुते) १ फैलाना. २ बढ़ाना।

तनु श्रद्धोपकरणयोः (१०।२६६, उ०, तानयति, ते; तनति[१])१ भरोसा करना. २ आश्रय देना, सहाय करना. ३ शब्द करना। **हनन इत्येके**—१ पीडा करना, दुःख देना। **उपसर्गाच्च दैर्घ्ये—वि—सम्** – बढ़ाना, लम्बा करना।

तन्तस् दुःखे (११।१४, प०, तन्तस्यति) १ दुःखी होना।

तप सन्तापे (१।७११, आ०, तपते, दाहे—१०।२४२, उ०, तापयति, ते) १ तप्त होना, जलना. २ जलाना, तप्त करना. ३ मन मे या शरीर में जलना। **अनु**—१ पश्चाताप करना। **परि—सम्**—१ प० पश्चाताप करना।

तप ऐश्वर्ये (४।४८, आ०, तप्यते) १ ऐश्वर्ययुक्त होना।

तमु काङ्क्षायाम् (४।९२, प०, ताम्यति) १ इच्छा करना, चाहना. २ मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना।

तय गतौ (१।३२०, आ०, तयते) १ जाना. २ संरक्षण करना।

तर्क भाषार्थः, भासार्थो वा (१०।२२३, उ०, तर्कयति, ते) १ बोलना, कहना. २ प्रकाशित होना, चमकना. ३ तर्क करना, कल्पना करना, वाद करना. ४ शंका करना।

तर्ज भर्त्सने संतर्जने वा (१।१३६, प०, तर्जति; १०।१५१, आ०, तर्जयते) १ दोष लगाना, निन्दा करना. २ डराना।

---

१. **आधृषाद्वा** (१०।२३०) से पक्ष में शप्।

तर्द हिंसायाम् (१।४७, प०, तर्दति) १ मार डालना, दुःख देना।

तल प्रतिष्ठायाम् (१०।६५, उ०, तालयति, ते) १ पूर्ण होना. २ स्थापन करना, बिठाना. ३ सिद्ध करना।

तसि (तंस्) अलंकारे (१०।१६८, उ०, तंसयति, ते) १ सजाना, अलंकृत करना। **अव**—१ सजाना, अलंकृत करना।

तसु उपक्षये (४।१०२, प०, तस्यति) १ फैंकना, उड़ा देना. २ भेजना. ३ खोदना. ४ कुम्हलाना।

तायृ सन्तानपालनयोः (१।३२६, आ०, तायते) १ संरक्षण करना. २ फैलाना, लम्बा करना।

तिक गतौ (५।२०, प०, तिक्नोति) १ जाना. २ हल्ला करना, चाल चलना. ३ मारने या दुःख देने का प्रयत्न करना।

तिकृ गत्यर्थः (१।७४, आ०, तेकते) १ जाना।

तिग गतौ (५।२०, प०, तिग्नोति) १ जाना. २ हल्ला करना, चाल चलना. ३ मारने या दुःख देने का प्रयत्न करना।

तिघ हिंसायाम् (५।२१ पाठा०, प०, तिघ्नोति) १ मार डालना, दुःख देना।

तिज निशाने (१।६६८, आ०, तेजते; १०।१२०, उ०, तेजयति, ते) १ तिक्ष्ण करना, पैना करना, धार लगाना. २ चमकाना। (१, आ०, तितिक्षते[1]) १ क्षमा करना, सहना।

तिपृ क्षरणार्थः (१।२५२, आ०, तेपते) १ प्रोक्षण करना, सींचना. झरना, चूना।

तिम आर्द्रीभावे (४।१७, प०, तिम्यति) १ आर्द्र होना, छिपना।

तिल गतौ (१।३६१, प०, तेलति) १ जाना।

तिल स्नेहने (६।६४, प०, तिलति; १०।७४, उ०, तेलयति, ते) १ तेल लगाना. २ स्निग्ध होना, चिकना होना।

तिल्ल गतौ (१।३६२, प०, तिल्लति) १ जाना।

तीकृ गत्यर्थः (१।७४, आ०, तेकते) १ जाना।

तीम आर्द्रीभावे (४।१७, प०, तीम्यति) १ आर्द्र होना, गीला होना।

तीर कर्मसमाप्तौ (१०।३३२, उ०, तीरयति, ते) १ पूर्ण करना, समाप्त करना. २ पार लगाना।

तीव स्थौल्ये (१।३८०, प०, तीवति) १ मोटा होना, तुन्दिल होना।

---

१. अष्टा० ३।१।५ से क्षमा अर्थ में सन्।

तु गतिवृद्धिहिंसासु (सौत्र, प०, तौति, तवीति[1]) १ जाना. २ बढना. ३ दुःख देना, मार डालना. ४ पूर्ण करना ।

तुज हिंसायाम् (१।१५०, प०, तोजति) १ दुःख देना, मार डालना ।

तुज हिंसाबलादाननिकतनेषु (१०।३५, उ०, तोजयति, ते) १ रहना, वसति करना, मुकाम करना. २ मजबूत या बलवान् होना. ३ ग्रहण करना, लेना. ४ चमकना, प्रकाशित होना. ५ मार डालना ।

तुजि (तुञ्ज) पालने हिंसायां च (१।१५१, प०, तुञ्जति) १ रक्षा करना, प्रतिपालन करना, संभालना. २ मार डालना ।

तुजि (तुञ्ज्) हिंसाबलादाननिकेतनेषु (१०।३५, उ०, तुञ्जयति, ते) १ मार डालना. २ बलवान् होना. ३ ग्रहण करना. ४ रहना, वसति करना, मुकाम करना. ५ चमकना, प्रकाशित होना ।

तुजि (तुञ्ज्) भासार्थः (१०। २२३, उ०, तुञ्जयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना ।

तुट कलहकर्मणि (६।८५, प०, तुटति) १ झगड़ना, झगडा करना. २ दुःख देना ।

तुड तोडने (१ क्वाचित्कः, प०, तोडति; ६।९५, प०, तुडति) १ तोड़ना, कतरना. २ दुःख देना ।

तुडि (तुण्ड्) तोडने (१।१७५, आ०, तुण्डते) १ तोड़ना, कतरना. २ दुःख देना. ३ दवाना ।

तुड्ट तोड़ने (१।२४२, प०, तोडति) १ तोड़ना, कतरना. २ दुःख देना ।

तुड्डु अनादरे (१ क्वाचित्कः, प०, तुड्डति) १ अपमान करना, अनादर करना ।

तुण कौटिल्ये (६।४४, प०, तुणति) १ टेढ़ा होना, वक्र होना. २ बुरी नीति से वर्तना ।

तुत्थ आवरणे (१० ३६६, सूत्रोदाहरणरूपः[2], उ०, तुत्थयति, ते) १ परदा डालना, आच्छादित करना. २ फैलाना. ३ स्तुति करना ।

तुद व्यथने (६।१, उ०, तुदति, ते) १ दुःख देना, पीडा करना, घाव करना ।

तुदि (तुन्द्) स्थौल्ये (१ क्वाचित्कः, प०, तुन्दति) १ मोटा होना, तुन्दिल होना ।

---

१. यह अष्टा० ७।३।९५ सूत्र में पठित सौत्र धातु है। शप् का लुक् होने से अदादि में व्याख्यान किया जाता है।

२. द्र० माधवीया धातुवृत्ति १०।३२८ ।

तुप हिंसार्थ (१।२८७, प०, तोपति; ६।२७, प०, तुपति) १ मार डालना, दुःख देना।

तुफ हिंसार्थः (१।२८७, प०, तोफति; ६।२७, प०, तुफति) १ मार डालना, दुःख देना।

तुबि (तुम्ब्) अर्दने (१।२९१, प०, तुम्बति; १०।१२५, उ०, तुम्बयति, ते) १ मार डालना, दुःख देना।

तुबि (तुम्ब्) अदर्शने (१०।१२५, उ०, तुम्बयति, ते) १ अन्तर्हित होना, गुप्त होना. २ नष्ट होना।

तुभ हिंसायाम् (१।५०३, आ०, तोभते; ४।१२७, प०, तुभ्यति; ९।५२, प०, तुभ्नाति) १ मार डालना, दुःख देना।

तुम्प हिंसार्थः (१।२८७, प०; ६।२७, प०, तुम्पति[1]) १ मार डालना, दुःख देना।

तुम्फ हिंसार्थः (१।२८७, प०; ६।२७, प०, तुम्फति[1]) १ मार डालना, दुःख देना।

तुर त्वरणे (३।१६, प०, तुतोर्ति) १ जल्दी जाना. २ त्वरा करना।

तुरण त्वरायाम् (११।२३, प०, तुरण्यति) १ जल्दी जाना. २ त्वरा करना।

तुर्वी हिंसार्थः (१।३८२, प०, तुर्वति, पक्षान्तरे—तूर्वति) १ मार डालना, दुःख देना।

तुल उन्माने (१ क्वाचित्कः, प०, तोलति; १०।६६, उ०, तोलयति, ते) १ तोलना, वजन करना।

तुष प्रीतौ (४।७३, प०, तुष्यति) १ सन्तुष्ट होना, खुश होना।

तुस् शब्दे (१।४७२, प०, तोसति) १ शब्द करना, आवाज करना।

तुहिर् (तुह्) अर्दने (१।४९१, प०, तोहति) १ मार डालना, दुःख देना।

तूड़ तोडने (१।२४३, प०, तूर्डति) १ अनादर करना. २ तोड़ना, कतरना।

तूण पूरणे (१०।१५८, आ०, तूणयते) १ भरना, पूर्ण करना।

तूरी गतित्वरणहिंसनयोः (४।४३, आ०, तूर्यते) १ जल्दी करना. २ दुःख देना, सताना।

तूल निष्कर्षे (१।३५४, प०, तूलति; [2]नामधातु उ०, तूलयति, ते) १ त्याग करना, निकाल देना।

तूष तुष्टौ (१।४५२, प०, तूषति) १ तृप्त होना. २ तृप्त करना, आनन्दित करना।

---

१. भ्वादि तुदादि में केवल स्वर भेद होता है। भ्वा०—तुम्पति, तुम्फति; तुदा०—तुम्पति, तुम्फति। २. अष्टा० ३।१।२५ सूत्र से णिच्।

तृक्ष गतौ (१।४४२, प०, तृक्षति) १ जाना।

तृणु अदने (८।६, उ०, तृणोति, तृणुते; पक्षे गुणः—तर्णोति, तर्णुते[1]) १ घास खाना. २ चरना।

तृदिर् (तृद्) हिंसानादरयोः (७।८, उ०, तृणत्ति, तृन्ते; १ क्वाचित्कः, प०, तर्दति) १ मार डालना, दुःख देना. २ अवज्ञा करना, अनादर करना. ३ देना, दान करना. ४ खाना, भक्षण करना।

तृप तृप्तौ (४।८४, प०, तृप्यति; ५।२६, प०, तृप्नोति; ६।२६, प०, तृपति; १०।२४३, उ०, तर्पयति, ते; तर्पति[2]) १ तृप्त होना, प्रसन्न होना. २ तृप्त करना, प्रसन्न करना।

तृप संदीपने (१०।२४५ पाठा०, आ०, तर्पयते; तर्पति[2]) १ प्रज्वलित करना, जलाना।

तृफ, तृम्प, तृम्फ तृप्तौ (६।२६, प०, तृफति, तृम्पति, तृम्फति) १ तृप्त होना या करना।

तृष पिपासायाम् (४।११८, प०, तृष्यति) १ प्यास लगना. २ इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना।

तृह हिंसायाम् (७।१८, प०, तृणेढि) १ मार डालना, दुःख देना।

तृंहु हिंसार्थः (६।६० पाठा०, प० तृहति[3]) १ मार डालना, दुःख देना।

तृहू तृंहू हिंसार्थः (६।६०, प०, तृहति[3]) १ मार डालना, दुःख देना।

तॄ प्लवनसंतरणयोः (१।६६६, प०, तरति) १ पार जाना, पर तीर को जाना. २ जल पर तैरना. ३ जीतना. ४ नौकादि साधन से जल के पार जाना। **अव**—१ उतरना। **आ**—१ भाड़ा देकर नाव पर चढ़ जाना। **उत्**—१ ऊपर से जाना. २ जवाब देना, उत्तर देना. ३ पार जाना। **दुस्**—१ संकट से पार जाना। **निस्**—१ सुख से तैर जाना. २ मुक्ति पाना। **प्र**— १ जीतना। **वि**—१ जाना. २ देना, धर्म करना। **सम्**—१ तैर के जाना।

तेज पालने (१।१४०, प०, तेजति) १ पालन करना, रक्षा करना।

तेपृ क्षरणार्थः, कम्पने च (१।२५२, २५४, आ०, तेपते) १ सींचना, प्रोक्षण करना. २ झरना, चूना. ३ छानना. ४ हिलना।

तेवृ देवने (१।३३६, आ०, तेवते) १ खेल करना, क्रीडा करना. २ रोना, शोक करना।

१. द्र० माधवीया धातुवृत्तिः ८।५। २. आधृषाद्वा (धा० १०।२३०) से णिच् के अभाव में शप्। ३. 'श' परे (अ० ६।४।२४) से न लोप, अन्यत्र 'तनृंह' आदि में अनुस्वार का श्रवण होता है।

त्यज हानौ (१।७१२, प०, त्यजति) १ छोड़ना, त्यागना, देना, दान करना।

त्रंकि (त्रङ्क्) गत्यर्थः (१।७४, आ०, त्रङ्कते) १ जाना, स्थानान्तर होना. २ हिलना।

त्रख गत्यर्थः(१।८६ प०, त्रखति) १ जाना, स्थानान्तर होना. २ हिलना।

त्रखि (त्रङ्ख्) गत्यर्थः (१।८६ पाठा०, प०, त्रङ्खति) १ जाना, स्थानान्तर होना. २ हिलना।

त्रदि (त्रन्द्) चेष्टायाम् (१।५७, प०, त्रन्दति) १ प्रयत्न करना, उद्यम करना. २ उद्यम में निमग्न रहना।

त्रपूष् (त्रप्) लज्जायाम् (१।२६०, आ०, त्रपते) १ लज्जित होना. २ डरना।

त्रस धारणग्रहणवारणेषु , (१०।२१०, उ०, त्रासयति, ते) १ पकड़ना. २ हरण करना, जबरन लेना. ३ मना करना, प्रतिबन्ध करना. ४ डराना।

त्रसि (त्रंस्) भाषार्थः, भासार्थो वा १०।२२३, उ०, त्रंसयति, ते) १ बोलना, कहना. २ चमकना।

त्रसी उद्वेगे (४।११, प०, त्रस्यति, त्रसति[1]) १ डरना. २ दौड़ जाना।

त्रुट छेदने (६।८४, प०, त्रुटति, त्रुटयति[2]; १०।१६६, आ०, त्रोटयते) १ कतरना, तोड़ना, टूटना. २ संशय निवारण करना।

त्रुप, त्रुफ, त्रुम्प, त्रुम्फ (१।२८७, प०, त्रोपति, त्रोफति, त्रुम्पति,त्रुम्फति) १ मार डालना, दुःख देना।

त्रैङ् पालने (१।६६२, आ०, त्रायते) १ संरक्षण करना, पोषण करना, बचाना।

त्रौकृ गत्यर्थः (१।७४, आ०, त्रौकते) १ जाना।

त्वक्षू तनूकरणे (१।४३८, प०, त्वक्षति) १ छीलना, रेतना, बारीक करना. २ कृश होना. ३ छाल निकालना।

त्वगि (त्वङ्ग्) गत्यर्थः कम्पने च (१।८८, ६०, प०, त्वङ्गति) १ जाना. २ कांपना हिलना।

त्वच संवरणे (६।१८, प०, त्वचति) १ आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना।

त्वच ग्रहणे (नामधातु, प०, त्वचयति[3]) १ ग्रहण करना. २ खाल खींचना. ३ चूंटिया भरना।

त्वञ्चु गत्यर्थः (१।११६, प०, त्वञ्चति) १ जाना।

---

१. अष्टा० ३।१।७० से पक्ष में शप्। २. अष्टा० ३।१।७० से पक्ष में श्यन्।
३. अष्टा० ३।१।२५ से ग्रहण अर्थ में णिच्।

त्वरा संभ्रमे (१।५२५, आ०, त्वरते) १ जल्दी करना. २ जल्दी जाना।

त्विष दीप्तौ (१।७२७, उ०, त्वेषति, ते) १ प्रकाशित होना, चमकना। **अव**–१ रहना. २ देना, दान करना।

त्सर छद्मगतौ (१।३७३, प०, त्सरति) १ टेढा जाना, कपटपूर्वक जाना, छिपकर जाना।

थ

थिपृ क्षरणार्थः (१।२५२, आ०, थेपते) १ सींचना. २ थेपना-थोपना।

थुड संवरणे(६।९६, प०, थुडति) १ आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना।

थुर्वी हिंसार्थः (१।३८२, प०, थूर्वति) १ मार डालना, दुःख देना।

थेपृ क्षरणार्थः (१।२५३, आ०, थेपते) १ सींचना. २ थोपना. ३ नई वस्तु चढाकर असली वस्तु को छिपाना।

द

दंश दशने (१।७१५, प०, दशति)१ डसना. २ दातों से काटना।

दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च (१।४०३, आ०, दक्षते) १ समृद्ध होना. २ शीघ्र कार्य करना. ३ चतुर (=दक्ष) होना।

दक्ष गतिहिंसनयोः (१।५२१, आ०, दक्षते) १ जाना. २ मार डालना।

दघ घातने पालने च (५।२८, प०, दघ्नोति) १ मारना, दुःख देना. २ संरक्षण करना, पोषण करना।

दघि (दङ्घ्) पालने (क्षीर० १।९४, प०, दङ्घति) १ त्याग करना, छोड़ देना. २ पालन करना, रक्षा करना।

दण्ड दण्डनिपातने (१०।३५४, उ०, दण्डयति, ते) १ शासन करना, दण्ड देना।

दद दाने (१।१६, आ०, ददते) १ दान करना, देना. २ त्याग करना।

दध धारणे (१।७, आ०, दधते) १ धारण करना. २ पालन करना. ३ देना, अर्पण करना।

दभ क्षेपे(क्षीर० १०।१२१, उ०, दाभयति, ते)१ निन्दा करना. २ आज्ञा करना।

दभि (दम्भ्) क्षेपे (क्षीर १०। १२१, उ०, दम्भयति, ते) १ निन्दा करना, २ आज्ञा करना।

दमु उपशमे (४।९३, प०, दाम्यति) १ शान्त करना. २ दमन करना. ३ जीतना, स्वाधीन करना. ४ सुलह करना।

दम्भु दम्भने (५।२३, प०, दम्नोति) १ ठगना, वञ्चना करना, ढोंग करना. २ चीरना, फाड़ना, तोड़ना।

दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु (१।३२२, आ०, दयते) १ दान देना, इनाम देना, देना. २ लेना. ३ जाना. ४ पालन करना, सम्भालना, दया करना. ५ मार डालना, दुःख देना।

दरिद्रा दुर्गतौ (२।६६, प०, दरिद्राति) १ दरिद्री होना. २ दुःखित होना. ३ कृश होना।

दल विशरणे विदारणे च (१।३६६, प०, दलति; १०।२२२, उ०, दालयति, ते) १ कुम्हलाना, म्लान होना. २ चीरना, फाड़ना, टुकड़े करना।

दवि (दन्व) गत्यर्थः (क्षीर० १।३६३ सूत्रे, प०, दन्वति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

दशि (दंश्) दंशनदर्शनयोः (१०।१४५, आ०, दंशयते) १ डसना, काटना, दंश मारना. २ देखना।

दशि (दंश्) भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, दंशयति, ते) १ चमकना, डंक मारने के समान बोलना। उप—१ संकट में पड़ना। सम्—१ नोचना।

दस, दसि (दंस्) दंशनदर्शनयोः (१०।१४६, आ०, दासयते, दंसयते) १ देखना. २ काटना, डसना।

दसि (दंस्) भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, दंसयति, ते) १ चमकना. २ बोलना, कठोर बोलना।

दसु उपक्षये (४।१०३, प०, दस्यति) १ नष्ट होना, २ नष्ट करना।

दह भस्मीकरणे (१।७१७, प०, दहति) १ जलाना. २ नष्ट करना. ३ दुःख देना. ४ दग्ध करना। परि—१ पूरी तरह जला देना।

दहि (दंह्) रक्षणे (क्षीर० १०।११५, पाठा०, प०, दंहयति) १ रक्षा करना।

दाञ् दाने (३।९, उ०, ददाति-दत्ते) १ देना. २ सौंपना. ३ लौटाना. ४ रखना। आ—१ लेना, अंगीकार करना। परि—१ देना, सौंपना. २ ऋण देना. ३ पुकार देना। प्र—१ देना। व्या—१ उघाड़ना, खोलना। समा—१ पसन्द करके लेना।

दाण् दाने (१।६६४, प०, यच्छति[1]) १ अर्थ 'दाञ् दाने' के समान।

दान खण्डने (१।७२०, उ०,

---

१. पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्० (अष्टा० ७।३।७८) से यच्छ आदेश।

दानति,ते; आर्जवे—सन्[1], उ०,दीदांसति, ते) १ खण्डन करना, तोड़ना. २ सीधा करना, सरल करना ।

दाप् लवने (२।५२, प०, दाति) १ काटना, कुतरना, तोड़ना ।

दायृ दाने (१।६२२ पाठा०, क्षीर० उ०, दायति, ते) १ देना, दान देना, पारितोषिक देना ।

दाशृ दाने (१।६२२, उ०, दाशति, ते; क्षीर० १०।१२५, आ०, दाशयते) १ देना. २ आहुति देना ।

दाशृ हिंसायाम् (५।३०, प०, दाश्नोति) १ मार डालना, दुःख देना ।

दासृ दाने (१।६३५, उ०, दासति, ते) १ देना, सौंपना ।

दिवि (दिन्व्) प्रीणनार्थः (१।३६२, प०, दिन्वति) १ प्रसन्न होना या करना, आनन्दित करना या होना ।

दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (४।१, प०, दीव्यति) १ लेना, क्रीडा करना. २ जीतने की इच्छा करना. ३ व्यापार करना, क्रय-विक्रय करना, खरीदना,बेचना. ४ तेजस्वी होना,चमकना. ५ प्रशंसा करना, स्तुति करना. ६ आनन्द करना, प्रसन्न होना या करना. ७ भूल जाना, गर्व आदि मनोविकार से दिवाना होना. ८ सो जाना, निद्रित होना. ९ चाहना, प्रीति करना. १० जाना ।

दिवु मर्दने (१०।१९३, उ०, देवयति, ते) १ मर्दन करना, पीस डालना, पीडा देना ।

दिवु परिकूजने (१०।१७५, आ०, देवयते) १ दुःखी होना, शोक करना. रोना, आक्रोश करना ।

दिश अतिसर्जने (६।३, उ०, दिशति, ते) १ दिखाना, समझाना. २ आज्ञा करना. ३ कहना, बोलना. ४ देना, पारितोषिक देना । **अप**—१ वेषान्तर करना । **आ**—१ आज्ञा करना. २ देखना. ३ बुलाना । **उत्**—१ प्रसिद्ध करना, प्रकट करना. २ दिखाना । **उप**—१ उपदेश करना । **निर्**—१ समझाना, विस्तारपूर्वक कहना. २ जोर से बोलना । **प्र**—१ नियत करना, मुकर्रर करना । **प्रतिसम्**—१ पीछे लौटाना, पीछे देना । **व्यप**—१ बहाना करना । **विनिर्**—१ साफ साफ कहना । **सम्**—१ स्पष्ट करना, दिखाना. २ खबर देना । **समा**—१ मान्य करना । **समुप**—१ दूर की वस्तु उङ्गली से दिखाना ।

---

१. अष्टा० ३।१।६ सूत्र से ।

दिह उपचये (२।५, उ०, देग्धि-दिग्धे) १ बढ़ना, जमाना. २ लीपना, पोतना ।

दीक्ष मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु (१।४०४, श्रा०, दीक्षते) १ क्षौर करना, मुण्डन करना. २ यज्ञ करना. ३ दीक्षा देना, उपदेश देना, उपनयन करना. ४ आत्म-निग्रह करना. ५ धर्म सिखाना. ६ आदेश देना ।

दीङ् क्षये (४।२४, श्रा०, दीयते) १ ह्रास होना, झरना ।

दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (२।६६, श्रा०, दीधीते) चमकना, प्रकाशित होना. २ खेलना, क्रीडा करना ।

दीपी दीप्तौ (४।४१, श्रा०, दीप्यते) १ प्रकाशित होना, चमकना ।

दु गतौ (१।६७७, प०, दवति) १ जाना ।

दु उपतापे (५।१०, प०, दुनोति) १ दुःख भोगना. २ जलना. ३ तप्त करना, जलाना ।

दुःख तत्क्रियायाम् (१०।३५७,उ०, दुःखयति, ते; ११।१५, प०, दुःख्यति) १ दुःख देना, छल करना ।

दुर्वी हिंसार्थः (१।३८२, प०, दूर्वति) १ दुःख देना, सताना ।

दुल उत्क्षेपे (१०।६७, उ०, दोलयति, ते) १ उचकना, उठाना, फेंकना. २ डोलना, हिलना. ३ झूला झुलाना ।

दुवस् परितापपरिचरणयोः (११।३४, प०, दुवस्यति) १ पीड़ित होना या करना. २ सेवा करना, परिचर्या करना ।

दुष वैकृत्ये (४।७४, प०, दुष्यति) १ दुष्टाचरण करना, दुष्ट रीति से वर्तना. २ दूषित होना । प्र— १ प्रसिद्ध होना, प्रकट होना ।

दुह प्रपूरणे (२।४, उ०, दोग्धि, दुग्धे) १ दूध निकालना, दोहना. २ रिक्त करना. ३ लेना. ४ खेंचना ।

दुहिर् (दुह्) अर्दने (१।४६१, प०, दोहति) १ पीड़ा करना, दुःख देना. २ हिंसा करना, मार जलाना ।

दूङ् परितापे (४।२३, श्रा०, दूयते) १ दुःख से जर्जर होना, दुःख सहन करना. २ दुःख देना, पीड़ा करना ।

दूष वैकृत्ये (४।७४ पाठा०, प०, दूष्यति) १ दूषित होना, दूषित करना ।

दृ हिंसायाम् (५।३०, प०, दृणोति) १ दुःख देना, मार डालना ।

दृङ् आदरे (६।१२०, श्रा०, आ—आद्रियते) १ सत्कार करना ।

दृप हर्षमोहनयोः (४।८५, प०, दृप्यति) १ आनन्दित होना, प्रसन्न होना. २ मोहित होना. ३ गर्वित होना ।

दृप उत्क्लेशे (६।२६, प०, दृपति) १ पीडा करना, दुःख देना ।

दृप संदीपने (१०।२४५, उ०, दर्पयति, ते; दर्पति[1]) १ उजाला करना ।

दृफ उत्क्लेशे (६।२८, प०, दृफति) १ पीडा करना. दुःख देना ।

दृभी ग्रन्थे (६।३४, प०, दृभति) १ पीडा करना, दुःख देना. २ रचना, गूंथना ।

दृभी भये (१०।२४६, उ०, दर्भयति, ते; दर्भति[1]) १ डरना. २ सम्बन्ध लगाना, सन्दर्भ लगाना ।

दृम्प दृम्फ उत्क्लेशे (६।२६, प०, दृम्पति, दृम्फति) १ पीडा करना, दुःख देना ।

दृशिर् (दृश्) प्रेक्षणे (१।७१४, प०, पश्यति[2]) १ देखना । उत्— १ ऊपर देखना. २ भविष्यद्विचार करना. ३ संशय करना, शंका करना ।

दृह दृहि (दृंह) वृद्धौ (१।४८८, प०, दर्हति, दृंहति) १ बढ़ना, वृद्धि-गत होना ।

दॄ विदारणे (६।२२, प०, दृणाति) १ चीरना, फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।

देङ् रक्षणे (१।६८६, आ०, दयते) १ संरक्षण करना, पोषण करना ।

देवृ देवने (१।३३६, आ०, देवते) १ खेलना, क्रीडा करना ।

दैप् शोधने (१।६५८, प०, दायति) १ शुद्ध करना ।

दो अवखण्डने (४।३६, प०, द्यति) १ कतरना, विभाग करना ।

द्यु अभिगमने (२।३३, प०, द्यौति) १ शत्रु पर आक्रमण करना. २ आगे जाना, समीप जाना ।

द्युत दीप्तौ (१।४६३, आ०, द्योतते) १ चमकना, प्रकाशित होना ।

द्यै न्यक्करणे (१।६४५, प०, द्यायति) १ धिक्कार करना, तिरस्कार करना ।

द्रम गतौ (१।३१५, प०, द्रमति) १ जाना ।

द्रा कुत्सायां गतौ (२।४७, प०, द्राति) १ भाग जाना. २ लज्जित होना, शरमाना. ३ निन्दा करना, दोष लगाना. ४ उड़ जाना ।

द्राक्षि(द्राङ्क्ष्) घोरवासिते काङ्क्षायाञ्च (१।४५०, प०, द्राङ्क्षति) १ कांव कांव शब्द करना. २ इच्छा करना, चाहना ।

द्राखृ शोषणालमर्थ्ययोः (१।८६,

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) नियम से णिच् के अभाव में शप् ।

२. पाघ्राध्मा० (अष्टा० ७।३।७८) से 'पश्य' आदेश ।

प०, द्राखति) १ सूख जाना, शुष्क होना. २ संवारना, शोभित करना. ३ शक्तिमान् होना. ४ निषेध करना, मना करना. ५ तृप्त करना।

द्राघृ सामर्थ्ये आयामे च (१।७८, ७९, आ०, द्राघते) १ शक्तिमान् होना. २ लम्बा करना, तानना।

द्राडृ विशरणे (१।१८५, आ०, द्राडते) १ चीरना, फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना. २ कुचल देना।

द्राहृ निद्राक्षये निक्षेपे च (१।४२९, आ०, द्राहते) १ जगना, जागृत रहना. २ गिरवी रखना।

द्रु गतौ (१।६७७, प०, द्रवति) १ जाना. अनुसरण करना। **अभि**—१ तैरना। **आ**—१ भाग जाना, विमुख होना। **वि**—१ मार डालना. २ भाग जाना। **समा**—१ एकत्र होकर भागना। **समुप**—१ भेंटना, मिलाप होना. २ भाग जाना।

द्रुण् हिंसागतिकौटिल्येषु (६।४९, प०, द्रुणति) १ पीडा करना, दुःख देना. २ समीप आना या जाना. ३ टेढ़ा करना, वक्र होना।

द्रुह जिघांसायाम् (४।८६, प०, द्रुह्यति) १ द्वेष करना, मारने के लिये प्रयत्न करना।

द्रूञ् हिंसायाम्[1] (९।१९, उ०, द्रूणाति, द्रूणीते) १ जाना, स्थानान्तर करना. २ चोट पहुंचाना, मार डालना।

द्रेकृ शब्दोत्साहयोः (१।६४, आ०, द्रेकते) १ शब्द करना, आवाज करना, २ बढ़ना, वृद्धिगत होना. ३ बडप्पन या आनन्द प्रकट करना।

द्रै स्वप्ने (१।६४६, प०, द्रायति, नि—निद्रायति) १ सोना, नींद लेना।

द्विष अप्रीतौ (२।३, उ०, द्वेष्टि, द्विष्टे) १ मत्सर करना, द्वेष करना, शत्रुता करना।

द्वृ वरणे[2] (क्षीर० १।६६६, प०, द्वरति) १ स्वीकार करना, अपनाना. २ आच्छादित करना. ३ रोकना. ४ अनादर करना।

ध

धक्क नाशने (१०।६२, उ०, धक्कयति,ते) १ नष्ट करना. २ हटाना, धक्का देना।

धण शब्दे (१।३०४, प०, धणति) १ शब्द करना।

---

१. हन्तेर्गतिः हिंसा चार्थः।

२. इस धातु के विषय में क्षीरतरङ्गिणी (रा० ला० क० ट्र० संस्क०) पृष्ठ १३९ टि० २ देखना चाहिये।

धन धान्ये (३।२१, प०, दधन्ति) १ उत्पन्न करना, पैदा करना. २ फलना, बौर लगना ।

धवि (धन्व्) गत्यर्थः (१।३६३, प०, धन्वति) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

धाञ् धारणपोषणयोः (३।१०, उ० दधाति, धत्ते) १ धारण करना, पहनना. २ पोषण करना, रक्षण करना. ३ देना[1], दान करना. ४ पास रखना । **अनुसम्**—१ अनुसंधान करना. २ ढूंढना । **अपि**—१ आच्छादन करना, ढांकना । **अभि**—१ प्रसिद्ध करना, प्रकट करना. २ दिखाना. ३ बोलना, कहना, सम्भाषण करना । **अभिसम्**—१ जीतना, पराजय करना । **सम्-अव**—१ सावधान रहना. २ ध्यान देना । **आ**—१ स्वीकार करना, अंगीकार करना. २ करना. ३ स्थापित करना । **उप**—१ सहायता करना । **नि**—१ ऊपर लेना, ऊपर करना. २ बीच में या ऊपर स्थापन करना. ३ उत्पन्न होना, पैदा होना. ४ धरना, धारण करना । **परि**—१ वस्त्रादि धारण करना, परिधान करना । **प्र**—१ मुख्य होना, प्रथम होना. २ प्रेरणा करना, भेज देना । **प्रणि**—१ धारण करना. २ स्वीकार करना, मान्य करना. ३ श्रेष्ठ पदवी पर चढ़ना. ४ गुप्त रहना, छिपकर रहना । **प्रतिवि**—१ प्रतिकार करना, निवारण करना । **वि**—१ कहना, धर्म सम्बन्धी कार्य करना. ३ पसन्द करना. ४ पूरा करना, पूर्ण करना. ५ आज्ञा करना. ६ वचन देना. ७ देना । **व्यव**—१ छिपाना । **सम्**—१ स्थापन करना, रखना. २ एकत्र करना, बटोरना. ३ लक्ष्य वेध करना, निशाना लगाना । **सम्प्र—प्रतिसम्**—१ चर्चा करना, वाद विवाद करना । **समा**—१ समाधान करना. २ सिखाना । **सन्नि**—१ समीप रखना, समीप आना ।

धावु गतिशुद्धयोः (१।३६७, उ०, धावति, ते) १ जाना. २ भागना. ३ स्वच्छ करना, मलरहित करना, धोना. ४ स्वच्छ होना । **अनु**—१ जाना, समझना. २ पीछे पीछे भागना । **अभि**—१ समीप आना या जाना । **आ**—१ उतरना, नीचे उतरना । **परि**—१ जल्द भागना । **वि**—१ प्रोक्षण करना, सींचना । **समुप**—१ भेंट के लिये दौड़ना ।

धि धारणे (६।११५, प०, धियति) १ पास रखना या होना. २ युक्त होना ।

धिक्ष सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु (१।३६८, आ०, धिक्षते) १ प्रदीप्त करना, जलाना. २ जीना, जीता रहना.

---

१. 'डुदाञ् दानधारणयोः' प्राचीनः पाठः ।

३ श्रान्त होना, थक जाना, नाक मे दम आना।

घिवि (घिन्व्) प्रीणनार्थः (१। ३९२, प०, घिनोति[1]) सन्तुष्ट होना या करना, प्रसन्न होना या करना. २ समीप जाना या आना।

घिष शब्दे(३।२०, प०, दिवेष्टि) १ शब्द करना।

धीङ् आधारे (४।२६, आ०, धीयते) १ धारण करना, आधारभूत होना. २ उपेक्षा करना। **अन्तर्**— १ गुप्त होना, छिप जाना।

धुञ् कम्पने (५।६, उ०, धुनोति, धुनुते) १ कांपना, हिलना, हिलाना।

धुक्ष सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु (१। ३९८, आ०, धुक्षते) १ प्रदीप्त करना, जलाना. २ जीना. ३ श्रान्त होना या थक जाना।

धुर्वी हिंसार्थः (१।३८२, प०, धूर्वति) १ मार डालना या दुःख देना।

धू विधूनने (६।१०६, प०, धुवति) १ कम्पित करना, कांपना।

धूञ् कम्पने (५।९ पाठा०, उ०, धूनोति-धुनुते; ९।१६, उ०, धुनाति-धुनीते; १०।२६२, उ०, धावयति, ते, धूनयति[2], ते; धवति-धवते[3]) १ कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना। **अव**—(धूनयति) १ नष्ट करना. २ जाना। **वि**— १ प्रकम्पित करना, क्षोभित करना।

धूप संतापे (१।२८०, प०, धूपायति[4]) १ गरम करना, तपाना।

धूप भासार्थः, भाषार्थो वा (१०। २२३, उ०, धूपयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना, सम्भाषण करना।

धूरी हिंसागत्योः (४।४४, आ०, धूर्यते) १ मार डालना या दुःख देना. २ समीप जाना या आना।

धूश धूष धूस कान्तिकरणे (१०। १०८, १०७, १०६, उ०, धूशयति, ते; धूषयति, ते; धूसयति, ते) १ शोभित होना, शृंगारयुक्त होना, अलंकृत होना।

धृङ् अवध्वंसने (१।६८७, आ०, धरते) १ गिर पड़ना. २ नष्ट होना।

धृङ् अवस्थाने (६।१२१, आ०, ध्रियते) १ रहना, स्थिर रहना. २ धारण करना, पास रखना, युक्त होना।

धृज धृजि (धृञ्ज्) गतौ (१।

---

१. अष्टा० ३।१।८० सूत्र से 'उ' विकरण।

२. नुक् पक्ष में। द्र० धातुवृत्ति क्षीर० १०।२२४।

३. आधृषाद्वा (१०।३३०) से पक्ष में शप्।

४. गुपूधूप० (अष्टा० ३।१।२८) सूत्र से आय प्रत्यय।

१३२, प०, धर्जति-धृञ्जति) १ जाना, स्थानान्तर होना।

धृज धारणे (१।६४१, उ०, धरति, ते; १० कथाचित्कः, उ०, धारयति, ते) १ धारण करना। अव—निर्—१ सत्य करके दिखाना।

धृष प्रहसने (१०।२७७, उ०, धर्षयति, ते; धर्षति[1]) १ जीतना, पराभव करना. २ अधीर होना, घबरा जाना।

धृषा प्रागल्भे (५।२२, प०, धृष्णोति) १ गर्व करना, अपने को बड़ा समझना।

धॄ विदारणे (९।२३, प०, धृणाति) १ नष्ट करना, टुकड़े करना।

धेट् पाने (१।६४३, प०, धयति) १ प्राशन करना, पीना।

धोर्ऋ गतिचातुर्ये (१।३७२, प०, धोरति) १ अच्छी रीति से गमन करना, चतुराई से चलना. २ जल्दी चलना।

ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः (१।६६१, प०, धमति[2]) १ फूंकना, मुंह से वशी आदि वाद्य बजाना. २ आग सुलगाना. ३ आग लगाना. ४ प्रदीप्त करना, जलाना।

ध्यै चिन्तायाम् (१।६४८, प०, ध्यायति) १ ध्यान करना, चिन्तन करना, मनन करना, विचार करना। नि—१ शोधना, ढूंढना।

ध्रज ध्रजि (ध्रञ्ज्) गतौ (१। १३२, प०, ध्रजति, ध्रञ्जति) १ जाना, स्थानान्तर होना।

ध्रण शब्दे (१।३१०, प०, ध्रणति) १ वाद्यादिकों का शब्द करना, बाजा बजाना।

ध्रस उञ्छे (९।५५, प०, ध्रस्नाति; १०।२११, उ०, ध्रासयति, ते) १ बीनना, एक एक करके चुगना. २ ऊपर फेंकना, उड़ा देना।

ध्राक्षि (ध्राङ्क्ष्) घोरवासिते काङ्क्षायाञ्च (१।४५०, प०. ध्राङ्क्षति) कौवे के समान कांव कांव शब्द करना. २ चाहना।

ध्राखृ शोषणालमर्थयोः (१।८६, प०, ध्राखति) १ शुष्क होना, सूखना. २ संवारना, सजाना, शृंगार करना, शोभित करना ३ मना करना, निषेध करना, निवारण करना. ४ पूरा करना, पूर्ण करना।

ध्राघृ सामर्थ्ये (१।७८, आ०, ध्राघते) १ योग्य होना, समर्थ होना।

ध्राडृ विशरणे (१।१८५, आ०, ध्राडते) १ चीरना, टुकड़े करना, फाड़ना।

ध्रुव गतिस्थैर्ययोः (६।१०८,

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप्।

२. पाघ्राध्मा० (अष्टा० ७।३।७८) से 'धम' आदेश।

१०९, प०, ध्रुवति) १ अचल होना, स्थिर होना. २ जाना, गमन करना ।

ध्रु स्थैर्ये (१।६७६, प०, ध्रुवति) १ अचल होना, स्थिर होना ।

ध्रेकृ शब्दोत्साहयोः (१।६४, आ०, ध्रेकते) १ शब्द करना, आवाज करना. २ बढ़ना, बहुत होना. ३ हर्षित होना, आनन्दित होना. ४ बडप्पन प्रकट करना, बड़ाई करना ।

ध्रै तृप्तौ (१।६४७, प०, ध्रायति) १ तृप्त होना, सन्तुष्ट होना ।

ध्वंसु अवस्रंसने गतौ च (१।५०४, ५०५, आ०, ध्वंसते) १ चूर्ण होना या करना. २ जाना. ३ नीचे गिरना. वि—१ नष्ट होना ।

ध्वज ध्वजि (ध्वञ्ज्) **गतौ** (१।३३२, प०, ध्वजति, ध्वञ्जति) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

ध्वण शब्दार्थः (१।३०३, प०, ध्वणति) १ शब्द करना, आवाज करमा ।

ध्वन शब्दे (१।५५६, ५७१, प०, ध्वनति; १०।३१४, उ०, ध्वनयति, ते; ध्वानयति[1], ते) १ शब्द करना, आवाज करना ।

ध्वाक्षि (ध्वाङ्क्ष्) **घोरवासिते काङ्क्षायाञ्च** (१।४५०, प०, ध्वाङ्क्षति) १ कांव कांव शब्द करना. इच्छा करना, चाहना ।

ध्वृ हूर्छने (१।६७२, प०, ध्वरति) १ टेढ़ा करना, नवाना, वक्र करना. २ मार डालना. ३ वर्णन करना ।

न

नक्क नाशने (१०।६२, उ०, नक्कयति, ते) १ उच्छेद करना, नष्ट करना ।

नक्ष गतौ (१।४४२, प०, नक्षति, प्र—प्रणक्षति) १ जाना, समीप जाना या आना, पहुंचना ।

नख नखि (नङ्ख) **गत्यर्थो** (१।८८, प०, नखति, नङ्खति; प्र—प्रणखति, प्रणङ्खति) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

नजी व्रीडायाम् (क्षीर० ६।१२ पाठा०, आ०, नजते) १ लज्जित होना ।

नट नृतौ (१।२०३, ५३०, प०, नटति) १ नत्य करना, नाचना ।

नट अवस्यन्दने (१०।१३, उ०, नाटयति, ते) १ नीचे गिरना, झरना, बहना. २ दिखाना । अवस्पन्दने—१ कम्पित होना, हिलना, धीरे धीरे सरकना ।

---

१. नान्ये मितोऽहेतौ (१०।९७) वचन से 'मित्' संज्ञा न होने पर ह्रस्व नहीं होगा ।

नट भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, नाटयति, ते) १ चमकना, २ अभिनय करना।

नड अवस्यन्दने (क्षीर० १०।१२ पाठा०, उ०, नाडयति, ते) १ गिरना, पतन होना।

नद अव्यक्ते शब्दे (१।४४, प०, नदति) १ शब्द करना, आवाज करना। **प्र— समुद्**- १ घण्टा या पशु के समान आवाज करना। **व्यनु**— १ निनादित करना, शब्दों से भर देना।

नद भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, नादयति, ते) १ चमकना. २ शब्द करना।

नदि (नन्द्) समृद्धौ (१।५५, प०, नन्दति) १ आनन्द पाना. २ वृद्धि होना, बढ़ती होना। **आ**- १ सुखी होना, आनन्दित होना। **अभि**— १ इच्छा करना, चाहना. २ प्रशंसा करना, स्वीकार करना। **प्रति**— १ उपकार मानना, धन्यवाद करना।

नभ हिंसायाम् (१।५०३, आ०, नभते, प्र—१ प्रणभते; ४।१२७, प०, नभ्यति; ६।५२, प०, नभ्नाति) १ नष्ट होना. २ दुःख देना या मार डालना।

नम प्रह्वत्वे शब्दे च (१।७०८, प०, नमति) १ नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना. २ शब्द करना। **अव— सम्— आ— प्र**— १ नमस्कार करना। **उत्**— १ खड़ा करना. २ ऊपर उठाना। **णिच्**— (नमयति, नामयति[1]) नमाना, झुकाना।

नय गतौ (१।३२०, आ०, नयते, प्र—प्रणयते) १ जाना, हिलना, पहुचना. २ संरक्षण करना।

नर्द शब्दे (१।४४, प० नर्दति, प्र—प्रणर्दति) १ शब्द करना।

नल गन्धे बन्धने च (१।५७६, प०, नलति, प्र—प्रणलति) १ सूंघना, वास आना. २ बांधना।

नल भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२५, उ०, नालयति, ते) १ चमकना. २ बोलना।

नश अदर्शने (४।८३, प०, नश्यति प्र—प्रणश्यति) १ खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना।

नस कौटिल्ये (१।४१७, आ०, नसते, प्र—प्रणसते) १ टेढ़ा होना, वक्र होना, नम जाना।

नह बन्धने (४।५५, उ०, नह्यति, ते; प्र—प्रणह्यति, ते) १ बांधना, अड़ाना। **सम्**—१ शस्त्र धारण करना, कवच पहनना। **उप**— १ लपेटना। **नि**—कस कर बांधना। **अभि**—सब ओर से बांधना।

---

१. धातुसूत्र १।५६१ से विकल्प से मित्संज्ञा।

नहि (नंह्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, नंहयति, ते) १ चमकना. २ बोलना ।

नाथृ याच्ञोपतापैश्वर्याऽऽशीःषु (१।६, उ०, नाथति, ते[1]) १ याचना करना, मांगना. २ रोगी होना, बीमार होना. ३ श्रीमान् होना । **आशीर्वादे** – (आ०, नाथते[2]) १ आशीर्वाद देना, स्वस्तिवाचन करना ।

नाधृ याच्ञोपतापैश्वर्याऽऽशीःषु (१।६, आ०, नाधते) १ याचना करना. २ रोगी होना. ३ श्रीमान् होना. ४ आशीर्वाद देना ।

नासृ शब्दे (१।४१६, आ०, नासते, प्र–प्रणासते) १ खुर्राटा मारना, घर्राटा मारना, नाक खरखराना ।

निक्ष चुम्बने (१।४४१, प० निक्षति, प्र–प्रणिक्षति) १ चुम्बन लेना, चूमना ।

निजि (निञ्ज्) शुद्धौ (२।१८, आ०, निङ्क्ते, प्र–प्रणिङ्क्ते) १ स्वच्छ करना, निर्मल करना ।

निजिर् (निज्) शौचपोषणयोः (३।११, उ०, नेनेक्ति, नेनिक्ते) १ शुद्ध करना, स्वच्छ करना. २ पालना ।

निदि (निन्द्) कुत्सायाम् (१।५४, प०, निन्दति, प्र—प्रणिन्दति) १ निन्दा करना, दोष लगाना, धिक्कारना ।

निदृ कुत्सासन्निकर्षयोः (१।६१२. उ०, नेदति, ते; प्र–प्रणेदति,ते) १ दोष लगाना, निन्दा करना. २ समीप जाना या पहुंचना ।

निल गहने (६।७०, प०, निलति, प्र— प्रणिलति) १ कुछ का कुछ समझना. २ घना होना, दृढ होना, जमना. ३ छिप जाना ।

निवि (निन्व्) सेचने सेवने च (१।३६१, प०, निन्वति, प्र— प्रणिन्वति) १ भिगोना, गीला करना, सींचना. २ सेवन करना ।

निवास आच्छादने (१०।३१०, उ०, निवासयति, ते) १ आच्छादित करना, लपेटना. २ ठहराना ।

निश समाधौ(१।४७८,प०,नेशति, प्र— प्रणेशति) १ शान्ति से विचार करना, मनन करना, ध्यान लगाना ।

निष प्रापणे (१ क्वाचित्कः[3],

---

१. आत्मनेपदिषु पाठे सत्यपि आशिषि नाथः (१।३।२१) वार्तिकेनाशिषि आत्मनेपदविधानादन्येष्वर्थेष्वस्य परस्मैपदित्वं ज्ञेयम् ।

२. आशिषि नाथः (१।३।२१ वा०) से आशीः अर्थ में आत्मनेपद ।

३. धात्वन्तरं नेषतिः, कथं ज्ञायते ? नेषतु नेष्टादिति दर्शनात् । महा० ३।२।१३५ ।

प०, नेषति) १ प्राप्त करना, ले जाना।

निष्क परिमाणे (१०।१५५, आ०, निष्कयते) १ मापना, तोलना, गिनना।

निसि (निंस्) चुम्बने (२।१७, आ०, निंस्ते) १ चूमना।

नीञ् प्रापणे (१।६४२, उ०, नयति, ते) १ पहुंचाना, प्राप्त होना. २ मार्ग दिखाना. ३ पाना, मिलना. ४ ले जाना। अनु—१ याचना करना, मांगना. २ नकल करना, कृपा करना। अप--१ ले जाना, हरण करना. २ आकर्षण करना, खींचना। अभि—१ चिह्नों से दिखाना, संकेत करना, अभिनय करना. २ कृपालु होना। आ—१ लाना। उत्—(आ०) १ ऊपर करना, ऊपर उठाना। उप—१ समीप ले जाना, (आ०) १ उपनयन संस्कार करना. २ मजदूरी देकर समीप ले जाना। दुर्—बुरी रीति से बर्तना। निर्—१ प्राप्त होना, मिलना, पाना. २ ठहराना, निश्चय करना परि १ विवाह करना. २ ढूंढना। प्र १ शिक्षा करना. २ प्रीति करना दुलारना, प्यार करना, चापलूसी करना। वि-१ ले जाना. २ नम्र होना, विनय करना. (आ०) १ ऋण चुकाना, ऋण देना २ धर्म के लिये व्यय करना। व्यप—१ विरल होना, फैलाना। विनिर्—१ न्याय से विचार करना, न्याय करना। सम्-१ एकत्र करना, बटोरना। समन्—१ प्रार्थना करना। समा—१ एकत्र करना, बटोरना।

नीच दास्ये[1] (११।१३, प०, नीच्यति) १ दासत्व करना।

नील वर्णे (१।३४६, प०, नीलति, प्र—प्रणीलति) १ रंगना. २ रंगाना. ३ नीलरंग लगाना।

नीव स्थौल्ये (१।३८०, प०, नीवति, प्र—प्रणीवति) १ मोटा होना, तुंदिल होना।

नु स्तुतौ (२।२७, प०, नौति, प्र—प्रणौति) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। आ—(आनुते[2]) १ दुःख से रोना।

नुद प्रेरणे (६।२, उ०, नुदति, ते; ६।१३५, प०, नुदति) १ भेजना, प्रेरणा करना. २ जाना। अप--१ दूर करना। निर् १ बाहर फैंकना, त्याग करना. २ स्वीकार करना, मान्य करना। वि—१ प्रसन्न करना। सम्—१ हांकना, चलाना।

---

१. नीचदास्ये इति पाठान्तरे 'नीच' इति पृथग् पदच्छेदे धात्वन्तरम्।

२. आङि नुप्रच्छयोरुपसंख्यानम् (१।३।२१वा०) इति वार्तिकेन आत्मनेपदम्।

नू स्तवने (६।१०५, प०, नुवति) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना ।

नृती गात्रविक्षेपे (४।१०, प०, नृत्यति) १ नाचना, नृत्य करना ।

नॄ नये (६।२६, प०, नृणाति) १ ले जाना ।

नेदृ कुत्सासन्निकर्षयोः (१।६१२, उ०, नेदति, ते) १ दोष लगाना, निन्दा करना. २ समीप जाना या आना।

नेषृ गतौ (१।४१२. आ०, नेषते) १ जाना, समीप जाना ।

प

पक्ष परिग्रहे (१।४४७, प०, पक्षति; १०। १८, उ०, पक्षयति, ते) १ ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना. २ एक पक्ष का स्वीकार करना, एक पक्ष का समर्थन करना, एक ओर होना ।

पचष् (पच्) पाके (१।७२२, उ०, पचति, ते) १ पकाना ।

पचि (पञ्च्) व्यक्तीकरणे (१। १०५, आ०, पञ्चते) १ प्रसिद्ध करना, विस्तारपूर्वक कहना ।

पचि (पञ्च्) विस्तारवचने (१०।११६, उ०, पञ्चयति, ते) १ फैलाना, पसारना ।

पट गतौ (१।१६२, प०, पटति) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

पट भासार्थः, भाषार्थो वा (१०। २२३, उ०, पाटयति, ते) १ चमकना. २ बोलना । उत्—१ समूल नष्ट करना, जड़ से उखाड़ना । वि—१ भाग जाना. २ विदारण करना, चीरना ।

पट ग्रन्थे (१०।२८३, उ०, पटयति, ते) १ गूंथना, लपेटना. हिस्से करना ।

पठ व्यक्तायां वाचि (१।२२२, प०, पठति) १ पढ़ना, सीखना ।

पडि (पण्ड्) गतौ (१।१८०, आ०, पण्डते) १ जाना स्थानान्तर करना ।

पडि (पण्ड्) नाशने (१०।८२, उ०, पण्डयति, ते) १ नष्ट करना ।

पण व्यवहारे स्तुतौ च (१।२६८, आ०, पणते) १ उद्योग करना या व्यापार करना । स्तुतौ—(पणायति[1]) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना ।

पत गतौ वा (१०।२८६, उ०, पतयति, ते; वा वचनात्, पतति) १ नीचे गिरना, जाना या उतरना ।

पत्लृ (पत्) गतौ (१।५८४, प०, पतति) १ नीचे जाना या गिरना या उतरना. २ अमानवी पराक्रम

---

१. अष्टा० ३।१।२८ सूत्र से स्तुति अर्थ में 'आय' प्रत्यय ।

करना, शक्तिमान् होना। अति—१ जीतना, श्रेष्ठ होना, वर्चस्वी होना। अभि—अव—१ उतरना। आ—१ जाना, प्राप्त होना, उपस्थित होना। उत्—१ ऊपर चढ़ना। नि—१ घटित होना. २ मिलना, प्राप्त होना। निर्—१ भाग जाना, छिपना, मुंह काला करना। परि—१ जल्दी जाना। प्रनि—१ साष्टाङ्ग नमस्कार करना। विनि—१ पीछे लौटना। सम्—१ साथ जाना. २ मिलना, पाना, प्राप्त होना। समा—१ शुद्ध करना, स्वच्छ करना। समुत्—१ भाग जाना, उड़ जाना। सन्नि—१ आगे या बाहर जाना।

पत ऐश्वर्ये (क्षीर० ४१४८ पाठा०, आ०, पत्यते) १ श्रीमान् होना, शक्तिमान् होना।

पथ प्रक्षेपे (१०।२३, उ०, पाथयति, ते) १ उडाना, फैंकना, त्याग देना।

पथि (पन्थ्) गतौ (१०।४४, उ०, पन्थयति, ते; पन्थते[1]) १ जाना, घूमना।

पथ गतौ (१।५८६, प०, पथति) १ जाना. २ फैंकना, त्यागना।

पद गतौ (४।५८, आ०, पद्यते; १०।३२०, अदन्त, आ०, पदयते) १ जाना, स्थानान्तर करना। अभि—१ देखना. २ जानना, समझना। अनु—१ अनुसरण करना। आ—१ होना, मिलना, प्राप्त होना. २ दुर्दैव का अनुभव करना. ३ गुणाकार करना. ४ आना. ५ पैदा करना, उत्पन्न करना। उप—१ उपपन्न होना. २ मिलना, प्राप्त होना. ३ समीप रहना, चिपक के रहना। प्र—१ प्राप्त करना, पैदा करना. २ प्रारम्भ करना, शुरू करना। प्रवि—१ ठहराना, स्थापन करना। प्रति—पाना. २ अनुमोदन देना, स्वीकार करना. ३ छोड़ देना, मुक्त करना। वि—१ दुःख अनुभव करना, विपत्तिग्रस्त होना। व्या—१ मार डालना या दुःख देना। व्युत्—१ मूल तत्व को ढूंढना, मनन करना। सम्—१ वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना. २ करना. ३ ढूंढना, मनन करना। समा—१ पहुंचना, उपस्थित होना. २ पूर्ण करना, समाप्त करना। उत्—१ उत्पन्न होना।

पन स्तुतौ[2] (१।२९९, आ०,

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप्।

२. धातुपाठे **'पण व्यवहारे स्तुतौ च, पन च'** इत्येवं पठ्यते। तत्र चकारेण स्तुतेरेव सम्बन्धः। केचन व्यवहारेऽपि पनिमिच्छन्ति। न तद् धातुसूत्ररचनानुसारं सम्भवति।

पनायति[1]) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना।

पम्पस् दुःखे (११।१४, प०, पम्पस्यति) १ दुःखी होना।

पय गतौ (१।३२०, आ०, पयते) १ जाना, बहना।

पयस् प्रसृतौ (११।३६, प०, पयस्यति) १ फैलाना, विस्तार करना।

पर्ण हरितीभावे (१०।३६६, उदाहरणरूप:[2] उ०, पर्णयति, ते) १ हरा करना, हरा होना।

पर्द कुत्सिते शब्दे (१।२४, आ०, पर्दते) १ अपान वायु छोड़ना।

पर्प, पर्ब गतौ (१।२८८, प०, पर्पति, पर्बति) १ जाना।

पर्व पूरणे (१।३८५, प०, पर्वति) १ पूरा करना. २ भरना।

पल गतौ (१।५८०, प०, पलति) १ जाना. २ भागना।

पल रक्षणे (१०।७६ पाठा०[3], उ०, पालयति, ते) १ रक्षा करना।

पल्पूल लवनपवनयोः (१०।३०६, उ०, पल्पूलयति,* ते) १ काटना, कतरना. २ शुद्ध करना, स्वच्छ करना. ३ गिराना[4]।

पल्यूल लवनपवनयोः (१०।३०६, पाठा०[5], उ०, पल्यूलयति, ते) १ काटना, कतरना. २ शुद्ध करना, स्वच्छ करना. ३ गिराना[4]।

पश बन्धने (१०।१८८, उ०, पाशयति, ते; १०।२८७ पाठा०[6], उ०, पशयति, ते) १ बांधना, बेड़ी डालना. २ गांठ बांधना, फांस लगाना. ३ जाना[7]।

पष् गतौ बन्धने च (१०।२८७, उ०, पषयति, ते) १ जाना[8]. २ बांधना, फांस लगाना।

पसि (पंस्) नाशने (१०।८२,

---

१. अष्टा० ३।१ सूत्र से 'आय्'। धातुगत आत्मनेपद लिङ्ग आर्धधातुक में 'आय्' के अभाव में चरितार्थ होने से आय् प्रत्ययान्त से परस्मैपद ही होता है। निघण्टु ३।१४ सूत्र में तथा क्षीरतरङ्गिणी में 'पनायते' आत्मनेपद का निर्देश मिलता है। २ द्र० क्षीरतरङ्गिणी १०।३२५ व्याख्या।

३. द्र० क्षीरतरङ्गिणी १०।६३।

* वेद में 'पल्पूल' धातु के ही रूप मिलते हैं। पल्पूलयति—काठक १४।६ (तै० सं० २।५।५।६)।

४. लवनपतनयोरिति दुर्गः (क्षीरतरङ्गिणी १०।२६७)।

५. क्षीरतरङ्गिणी १०।२६७। ६. क्षीरतरङ्गिणी १०।२५०।

७. 'गतौ' क्षीरतर० १०।२५०। ८. गतावित्यन्ये बन्धन इत्यन्ये।

पंसयति, ते; पंसति) १ नष्ट करना, तहस नहस करना।

पा पाने(१।६५६, प०, पिबति[1]) १ पीना, प्राशन करना. २ संरक्षण करना।

पा रक्षणे (२।४६, प०, पाति) १ रक्षा करना, पालन करना।

पार कर्मसमाप्तौ (१०।३३२, उ०, पारयति, ते) १ कार्य पूर्ण करना।

पाल रक्षणे (१०।७६, उ०, पालयति, ते) १ पालन करना, संरक्षण करना।

पि गतौ (६।११४, प०, पियति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

पिच्छ कुट्टने (१०।४५, उ०, पिच्छयति, ते) १ कूटना. २ कतरना, चीरना. ३ बहुत दुःख देना।

पिज पिजि (पिञ्ज्) हिंसाबलादाननिकेतनेषु (१०।३५, उ०, पेजयति, ते; पिञ्जयति, ते; पिञ्जति[2]) १ मार डालना या दुःख देना. २ बलवान् होना. ३ लेना, ग्रहण करना. ४ रहना, वसति करना।

पिजि (पिञ्ज्) भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, पिञ्जयति, ते) १ प्रकाशित करना, तपाना. बोलना।

पिजि (पिञ्ज्) वर्णे (२।२०, आ०, पिङ्क्ते) १ रंगना, चमकीला करना. २ घुंघरुओं का शब्द होना।

पिट शब्दसंघातयोः (१।२०४, प०, पेटति) १ शब्द करना. २ सशब्द मारना. ३ राशि करना, ढेर करना।

पिठ हिंसासंक्लेशनयोः (१।२३०, प०, पेठति) १ मार डालना या दुःख देना. २ दुःख पाना, दुःखानुभव करना।

पिडि (पिण्ड्) संघाते (१।१७३, आ०, पिण्डते; १०।१३६, उ०, पिण्डयति, ते; पिण्डति[2]) १ राशि करना, ढेर करना।

पिल क्षेपे (क्षीर १०।५६. उ०, पेलयति, ते) १ प्रेरणा करना, फैंकना, उड़ाना. २ किसी काम में लगाये रखना (पेलना—हिन्दी)।

पिवि (पिन्व्) सेवने सेचने च (१।३६१, प०, पिन्वति) १ सेवा करना. २ प्रोक्षण करना, भिगोना, सींचना, गीला करना।

पिश अवयवे (६।१४६, प०, पिशति) १ टुकड़े टुकड़े करना, चीरना. २ व्यवस्था करना। **वेदे—दीप्तौ**[3]—प्रकाश करना, उज्जवल होना।

---

१. अष्टा० ७।३।७८ सूत्र से 'पिब' आदेश। २. इदित् करण से पक्ष में शप्।

३. द्र० त्वष्टा रूपाणि पिंशतु (ऋ० १०।१८४।१) नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन् (ऋ० १०।६८।११)।

पिष्लृ संचूर्णने (७।१५, प०, पिनष्टि) १ चूर्ण करना, पीसना।

पिस गतौ (१०।३६, उ०, पेसयति, ते) १ जाना।

पिसि (पिंस्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, पिंसयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना।

पिसृ गतौ (१।४७६, प०, पेसति) १ जाना।

पीङ् पाने (४।३२, आ०, पीयते) १ पीना, प्राशन करना।

पीड अवगाहने (१०।१२, उ०, पीडयति, ते) १ प्रतिकूल होना. २ चेष्टा करना. ३ चेताना. ४ दुःख देना, पीडा करना।

पील प्रतिष्टम्भे (१।३४८, प०, पीलति) १ मूर्ख होना. २ थमाना, गतिरोध करना, रोकना।

पीव स्थौल्ये (१।३८०, प०, पीवति) १ मोटा करना, स्थूल होना, पुष्ट होना।

पुंस अभिवर्धने (१०।१०४, उ०, पुंसयति, ते) १ बढ़ना, वृद्धि होना. २ बढ़ाना, वृद्धि करना।

पुट मर्दने (१।२१५, प०, पोटति) १ मरोड़ना, नष्ट करना।

पुट संश्लेषणे (६।७६ प०, पुटति, संसर्गे—१०।३३३, उ०, पुटयति, ते) १ आलिंगन करना, गले लगाना, एक में एक अटकाना, गूंथना।

पुट भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, पोटयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना, भाषण करना।

पुटि (पुण्ट्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, पुण्टयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना।

पुट्ट अल्पीभावे (१०।३०, उ०, पुट्टयति, ते) १ घटना, कम होना, न्यून होना।

पुड उत्सर्गे (६।९३, प०, पुडति) १ छोड़ना, त्याग करना. २ आच्छादन करना, ढांकना।

पुडि (पुण्ड्) खण्डने (१।२१८, प०, पुण्डति) १ चूर्ण करना, पीसना, मलना।

पुण कर्मणि शुभे (६।४५, प०, पुणति) १ पवित्र होना, शुद्ध होना, धर्मकृत्य करना।

पुथ हिंसायाम् (४।१३, प०, पुथ्यति) १ दुःख देना, पीडा करना।

पुथ भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, पोथयति, ते) १ प्रकाशित होना, चमकना. २ बोलना।

पुथि (पुन्थ) हिंसासंक्लेशनयोः (१।३६, प०, पुन्थति) १ पीडा करना, दुःख देना. २ दुःख सहन करना।

पुर अभिगमने (६।५७, प०,

पुरति) १ अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना ।

पुर्व पूरणे (१।३८५, प०, पूर्वति) १ पूर्ण करना, भरना ।

पुर्व निकेतने (१०।१३५, उ०, पूर्वयति, ते) १ रहना, वसति करना. २ आमन्त्रण करना, बुलाना ।

पुल महत्त्वे (१।५८२, प०, पोलति; ६ क्वाचित्कः, प०, पुलति; १०।६८, उ०, पोलयति, ते) १ राशि होना, ढेर होना. २ बढ़ना, ऊंचा होना ।

पुष पुष्टौ (१।४६६, प०, पोषति; ४।७१, प०, पुष्यति; ९।५९, प०, पुष्णाति) १ पालन करना, पोषण करना । **परि—सम्**—१ उत्कृष्ट होना. २ पालन करना ।

पुष धारणे (१०।२२१, उ०, पोषयति, ते) १ धारण करना ।

पुष्प विकसने (४।१६, प०, पुष्प्यति) १ पुष्पयुक्त होना, फूलना ।

पुस्त आदरानादरयोः (१०।६०, उ०, पुस्तयति, ते) १ सत्कार करना, मान करना. २ तिरस्कार करना, अनादर करना. ३ बांधना. ४ लेपन करना ।

पूङ् पवने (१।६९३, आ०, पवते) १ पवित्र करना, स्वच्छ करना ।

पूज पूजायाम् (१०।१११, उ०, पूजयति, ते) १ पूजा करना, अर्चा करना. २ सम्मान करना । **सम्**—उत्तम प्रकार से आदर सत्कार करना ।

पूञ् पवने (९।१०, उ०, पुनाति—पुनीते) १ पवित्र करना, स्वच्छ करना ।

पूयी विशरणे दुर्गन्धे च (१।३२५, आ०, पूयते) १ तोड़ना, चीरना. २ दुर्गन्ध आना, बदबू आना ।

पूरी आप्यायने (४।४२, आ०, पूर्यते; १०।२२६, उ०, पूरयति, ते) १ तृप्त करना, आनन्द करना. २ पूर्ण करना, भरना. ३ सन्तोष होना, आनन्द होना. ४ पूर्ण होना ।

पूर्ण संघाते (१०।१०३, उ०, पूर्णयति, ते) १ एकत्र करना, ढेर करना, राशि करना ।

पूर्व निकेतने (१०।१३५ पाठा०, प०, पूर्वयति) १ रहना. २ आश्चर्य करना. ३ बुलाना ।

पूल संघाते (१।३५५, प०, पूलति; १०।१०२, उ०, पूलयति, ते) १ ढेर करना, बटोरना, सञ्चित करना ।

पूष वृद्धौ (१।४५३, प०, पूषति) १ बढ़ना, अधिक होना. २ पोषण करना, पालन करना ।

पॄ पालनपूरणयोः (३।४ पाठा०, प०, पिपर्ति) १ पालन करना, पोषण करना. २ पूर्ण करना, भरना ।

पृ प्रीतौ (५।१२, प०, पृणोति) १ तृप्त करना, सन्तुष्ट करना ।

पॄ पूरणे (१०।१६ पाठा, उ०, पारयति, ते; परति[1])१ पूर्ण करना, भरना ।

पृङ् व्यायामे (६।११२, आ०, व्याप्रियते) १ किसी कृत्य में आसक्त रहना ।

पृची संपर्चने (२।२३, आ०, पृक्ते; सम्पर्के—७।२४, प०, पृणक्ति) १ स्पर्श करना, छूना, २ संघर्ष करना, संयोग करना ।

पृच संयमने (१०।२३१, उ०, पर्चयति, ते; पर्चति[1]) १ स्पर्श करना, छूना. २ अटकाना, हरकत करना ।

पृजि (पृञ्ज्) वर्णे (२।२१, आ०, पृङ्क्ते)१ स्पर्श करना. २ संघर्ष करना ।

पृड सुखने (६।४०, प०, पृडति) १ आनन्द करना, सन्तोष पाना ।

पृण प्रीणने (६।४१, प०, पृणति) १ आनन्द करना, सन्तोष पाना ।

पृथ प्रक्षेपे (१०।२२, उ०, पर्थयति, ते)१ फैंकना, उड़ाना. २ प्रेरणा करना, भेजना ।

पृषु सेचने सहने च (१।४६८, ४६९, प०, पर्षति) १ प्रोक्षण करना, सींचना. २ सहन करना । केषाञ्चिन्मते (हिंसासंक्लेशनयोः)—१ पीड़ा करना, दुःख देना. २ थकना, पीड़ित होना ।

पॄ पालनपूरणयोः (३।४, प०, पिपर्ति) १ पालन करना, पोषण करना. २ पूर्ण करना, भरना ।

पॄ पूरणे (१०।१६, उ०, पारयति, ते, परति[2]) १ पूर्ण करना, भरना ।

पेलृ गतौ (१।३६४, प०, पेलति) १ जाना. २ हिलना ।

पेवृ सेवने (१।३३७, आ०, पेवते) १ सेवा करना, नौकरी करना ।

पेषृ प्रयत्ने (१।४११, आ०, पेषते) १ ठहराना, निश्चय करना. २ चपलता से यत्न करना ।

पेसृ गतौ (१।४७६, प०, पेसति) १ जाना ।

पै शोषणे (१।६५५, प०, पायति) १ सूखना, कुम्हलाना ।

पैणृ गतिप्रेरणश्लेषणेषु (१।३०९, प०, पैणति)१ आज्ञा करना. २ जाना. ३ स्पर्श करना. ४ आलिङ्गन करना ।

प्यायी वृद्धौ (१।३२८, आ०, प्यायते) १ बढना, बड़ा होना, फूलना ।

प्युष विभागे (४।१०५ पाठा०,

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप् ।

२. दीर्घ निर्देश सामर्थ्य से पक्ष में णिच् का अभाव ।

प०, प्युष्यति) १ पृथक् होना, विभाग होना।

प्यैङ् वृद्धौ (१।६६१, आ०, प्यायते) १ बढ़ना, बड़ा होना, फूलना।

प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (६।१२२, प०, पृच्छति) १ पूछना, जानने की इच्छा करना।

प्रथ प्रख्याने (१।५१६, आ०, प्रथते; १०।२१, उ०, प्रथयति, ते) १ प्रसिद्ध होना, जाहिर होना। वेदे—(विस्तारे[1])—१ फैलना. २ फैलाना।

प्रस विस्तारे (१।५१७, आ०, प्रसते) १ विस्तार करना, फैलाना. २ जनना।

प्रा पूरणे (२।५४, प०, प्राति) १ भरना।

प्रीङ् प्रीणने (४।३५, आ०, प्रीयते) १ प्रीति करना, दुलारना. २ तृप्त करना, सन्तुष्ट करना।

प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (९।२, उ०, प्रीणाति, प्रीणीते; तर्पणे— (१०।२६३, उ०, प्रीणयति, ते; मतान्तरे—प्राययति, ते) १ प्रीति करना. २ तृप्त करना. ३ कामना करना।

प्रुङ् गतौ (१।६८४, आ०, प्रवते) १ जाना. २ हिलना।

प्रुष स्नेहनसेचनपूरणेषु (९।५८, प०, प्रुष्णाति) १ सौम्य होना, स्निग्ध होना, चिकना होना. २ प्रोक्षण करना, सींचना. ३ पूर्ण करना, भरना।

प्रुषु दाहे(१।४६७, प०, प्रोषति) १ जलाना, भर्जन करना, भूंजना।

प्रेङ्खोल उत्क्षेपे (१०।३६६, उ०, उदाहरणरूप, द्र०, क्षीरत० १०।३२५, उ०, प्रेङ्खोलयति, ते) १ झुलना, झुलाना।

प्रेषृ गतौ(१।४१२, आ०, प्रेषते) १ जाना, आना. २ चेतना, भेजना।

प्रोथृ पर्याप्तौ (१।६०८, उ०, प्रोथति, ते) १ शक्तिमान् होना, योग्य होना. २ पूर्ण होना, भरना।

प्लक्ष अदने (१।६३४, उ०, प्लक्षति, ते) १ खाना।

---

१. प्रथ धातु का 'विस्तार' अर्थ भी है। '[यद्] **अप्रथयमत्तत् पृथिव्यं पृथिवीत्वम्**' (तै० ब्रा० १।१।३।६, ७) **तामप्रथयत् सा पृथिव्यभवत्** (शत० ६।१।१।१५)। इसीलिये स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लास तथा उणादिकोश (प्र० सं० द्र०) में कई स्थानों पर 'प्रथ' धातु का विस्तार अर्थ का निर्देश किया है।

प्लिह गतौ (१।४२७, आ०, प्लेहते) १ जाना।

प्ली गतौ(६।३५, प०, प्लिनाति) १ जाना।

प्लुङ् गतौ(१।६८४, आ०, प्लवते) १ जाना २ उड़ना. ३ तैरना। **उत्**— १ ऊपर उड़ना या कूदना। **वि**— १ डूबना, मज्जन करना. २ जलमय होना।

प्लुष स्नेहनसेचनपूरणेषु (६।५८, प०, प्लुष्णाति) १ स्निग्ध होना, २ चिकना होना. ३ स्निग्ध करना. ४ प्रोक्षण करना, सींचना. ५ पूर्ण करना, भरना।

प्लुष दाहे (१।४६७, प०, प्लोषति; ४।१०६, प०, प्लुष्यति) १ जलाना. २ भूंजना।

प्लुस विभागे दाहे च (४।६ पाठा०, प०, प्लुस्यति) १ जलाना. २ भाग करना, हिस्सा करना, बांटना।

प्सा भक्षणे (२।४८, प०, प्साति) १ भक्षण करना. २ संरक्षण करना।

फ

फक्क नीचैर्गतौ (१।८१, प०, फक्कति) १ धीरे धीरे जाना, मन्द गमन करना. २ रेंगना. ३ अनुचित आचरण करना, अयोग्य रीति से वर्तना।

फण गतौ (१।५६७, प०, फणति) १ जाना. २ तेजोहीन करना। **णिच्** — (गत्यर्थ में मित्— फणयति, ते) १ चलना. २ जाना. (गति से अन्यत्र—फाणयति, ते) १ तेज वस्तु में जल आदि डाल के अल्प तेज करना. २ उष्ण जल में कुटी हुई वस्तु डाल कर रस निकालना (= फाण्ट) बनाना।

फल निष्पत्तौ (१।३५७, प०, फलति) १ उत्पन्न करना. २ सफल करना।

फला विशरणे (१।३४६, प०, फलति) १ जाना. २ तोड़ना, चीरना, विभाग करना।

फुल्ल विकसने (१।३५६, प०, फुल्लति) १ फूलना, प्रफुल्लित होना।

फेलृ गतौ (१।३६४, प०, फेलति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

ब

बण शब्दे(१।३१०, प०, बणति) १ शब्द करना।

बद स्थैर्ये (१।४१, प०, बदति) १ निश्चल होना, स्थिर होना, स्वस्थ रहना।

बध बन्धने (१।७००, आ०, बधते; **संयमने**—१०।१५, उ०, बाधयति, ते) १ बांधना, बद्ध करना. २ हिंसा करना, मारना, बध करना, घृणा करना। **सन्**—(आ०, बीभ-

रसते) १ द्वेष करना, तिरस्कार करना ।

बन्ध बन्धने (९।४१, प०, बध्नाति) १ बांधना । **आ**—१ चारों ओर से बांधना । **अनु**—१ जोड़ना, चिपकाना, एकत्र करना. २ अनुसरण करना । **नि**—१ बन्धन मुक्त करना. २ इकट्ठा करना । **सम्**—१ मिलाप करना ।

बर्ब गतौ (१।२८८, प०, बर्बति) १ जाना ।

बर्ह प्राधान्ये (१।४२५, आ०, बर्हते) १ श्रेष्ठ होना ।

बर्ह हिंसायाम् (१०।१३२, उ०, बर्हयति, ते) १ मार डालना या दुःख देना ।

बल प्राणने (१०।९५, उ०, बालयति, ते) १ बलयुक्त होना या करना. २ स्पष्ट करना ।

बल प्राणने धान्यावरोधे च (१।५८१, प०, बलति, १० क्वाचित्कः, प०, बलयति) १ जीना, जीते रहना. २ धान्य सञ्चय करना. ३ द्रव्य को रोकना ।

बल्ह प्राधान्ये (१।४२५, आ०, बल्हते) १ श्रेष्ठ होना. २ फैलाना. ३ हिंसा करना ।

बस्त अर्दने (१०।१५२, आ०, बस्तयते) १ जाना. २ मांगना. ३ मार डालना या दुःख देना ।

बाधृ विलोडने (१।५, आ०, बाधते) १ रोकना, अटकाव करना. २ बाधा देना, दुःख देना ।

बाहृ प्रयत्ने (१।४२८, आ०, बाहते) १ यत्न करना ।

बिट आक्रोशे (१।२१०, प०, बेटति) १ शाप देना, आक्रोश करना, गाली देना ।

बिदि (बिन्द्) अवयवे (१।५२, प०, बिन्दति) १ अवयव होना ।

बिल संवरणे (६।६८, प०, बिलति) १ आच्छादित करना. २ छेद करना, चीरना ।

बिल भेदने (१०।७३, उ०, बेलयति, ते) १ फैंकना, उड़ाना. २ छेद करना, चीरना ।

बिस प्रेरणे (४।१०७, प०, बिस्यति) १ फैंकना, उड़ाना ।

बुक्क भषणे (१।८४, प०, बुक्कति; १०।१८२, उ०, बुक्कयति, ते) १ भौंकना, कुत्ते के समान शब्द करना ।

बुगि (बुङ्ग) वर्जने (१।९१, प०, बुङ्गति) १ छोड़ना, त्याग करना ।

बुध अवगमने (१।५९७, प०, बोधति; ४।६१, आ०, बुध्यते) १ जानना, समझना । **प्रति**—१ किसी को जानना. २ जागना. ३ बाट जोहना । **प्रतिवि**—१ जागना, जागृत

रहना। सम्—१ अच्छे प्रकार जानना। अव—१ जानना।

बुधिर् (**बुध्**) **बोधने** (१।६१४, आ०, बोधते) १ अर्थ बुध के समान।

बुन्दिर् (**बुन्द्**) **निशामने** (१।६१५, उ०, बुन्दति, ते) १ जानना, समझना, बूझना. २ सूक्ष्म दृष्टि से जानना।

बुल निमज्जने (१०।७१, उ०, बोलयति, ते) १ जल में या विचारों में डूबना। 'बूड़ना' इसी का भाषा में अपभ्रंश है[1]।

बुस उत्सर्गे (४।१०६, प०, बुस्यति) १ छोड़ना, त्याग करना। हिन्दी में 'भूसा' (अपभ्रंश) द्रव्यार्थक है।

बुस्त आदरानादरयोः (१०।६०, उ०, बुस्तयति, ते) १ आदर सत्कार देना, मान देना. २ अपमान करना, धिक्कारना।

बृह वृद्धौ (१।४८८, प०, बर्हति) १ बढ़ना, वृद्धि होना।

बृहि (**बृंह्**) **वृद्धौ शब्दे च** (१।४८८, ४८६, प०, बृंहति) १ बढ़ना, वृद्धि होना. २ हाथी का चिंघाड़ना[2]।

बृहिर् (**बृह्**) **वृद्धौ शब्दे च** (१।४६०, उ०, बर्हति, ते) 'बृहि' के समान अर्थ।

बृहू उद्यमने (६।५६, प०, बृहति) १ उठाना. २ उद्योग करना।

ब्युष् दाहे (४।८, प०, ब्युष्यति) १ जलना।

ब्रीङ् वरणे (४।३०, आ०, ब्रीयते) १ स्वीकार करना. २ ढांपना।

ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (२।३७, उ०, ब्रवीति, ब्रूते, आह*) १ कहना, बोलना।

ब्रूस हिंसायाम् (१०।१३२, उ०, ब्रूसयति, ते) १ मार डालना, दुःख देना।

भ

भक्ष अदने (१।६३३, उ०, भक्षति, ते; १०।२७, उ०, भक्षयति, ते) १ खाना।

भज सेवायाम् (१।७२४, उ०, भजति, ते) १ भजना, भजन करना. २ उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना।

भज विश्राणने[3] (१०।२०१, उ०,

---

१. डलयोरेकत्वस्मरणात्। * अष्टा० ३।४।८४ द्रष्टव्य।

२, बृंहितं करिगर्जितम्। अमर २।८।७६ ॥ बवयोरभेदेन।

३. विश्राणनं दानम्, विवेचनमित्यन्ये। (क्षीरतर० १०।१७६।

भाजयति, ते) १ देना, दान करना. २ पकाना[1], सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना. ३ अलग करना ।

भजि (भञ्ज्) भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, भञ्जयति, ते) १ प्रकाशित होना, चमकना. २ बोलना, कहना । वि—१ नापना । प्रवि—१ वाद करना ।

भञ्जो (भञ्ज्) आमर्दने (७। १६, प०, भनक्ति) १ नष्ट करना ।

भट भृतौ (१।२००, प०, भटति) १ धारण करना, पास रखना. २ भाड़े पर लेना ।

भट परिभाषणे (१।५२६, प०, भटति) १ बोलना, वाद विवाद करना ।

भडि (भण्ड्) परिभाषणे (१। १७२, आ०, भण्डते) १ उपहास करना, ठट्ठा करना. २ बोलना. ३ दोष लगाना, निन्दा करना ।

भडि (भण्ड्) कल्याणे (१०। ५८, उ०, भण्डयति, ते; भण्डते[2]) १ शुभ कर्म करना ।

भण शब्दार्थ (१।३०३, प०, भणति) १ स्पष्ट कहना, स्पष्ट बोलना. २ पढ़ना । प्रति—१ जवाब देना, उत्तर देना ।

भदि (भन्द्) कल्याणे सुखे च (१।११, आ०, भन्दते) १ शुभ कर्म करना. २ सुखी होना ।

भर्व हिंसायाम् (१।३८७, प०, भर्वति) १ मारना, हिंसा करना ।

भर्त्स संतर्जने (१०।१५१, आ०, भर्त्सयते) १ धिक्कार करना, निन्दा करना. २ डराना, घुड़कना ।

भल आभण्डने[3] (१०।१६६, आ०, निपूर्वः—निभालयते) १ निरूपण करना. २ वाद विवाद करना ।

भल भल्ल धारणे (१।३३३, आ०, भलते, भल्लते) १ धारण करना, २ बोलना, व्याख्यान करना ।

भष भर्त्सने[4] (१।४६३, प०, भषति) १ भोंकना, कुत्ते के समान शब्द करना ।

भस भर्त्सनदीप्त्योः' ['भक्षण

---

१. भाजी श्राणा=पक्वा चेत् । (अष्टा० ४।१।४२)', भाषायां 'भाजी' पक्वं पत्रशाकम् । 'भाजी देना'=बाहर से आई वस्तु को सम्बन्धियों में बांटना ।

२. इदित् करण से पक्ष में शप् ।

३. आभण्डनं निरूपणम् । क्षीर० १०।१४७ ।

४. कुत्सितशब्दकरणे, पैशुन्येन वचने । क्षीरतर० १।४५६ ।

दीप्त्योः''[1] इति प्राचीनाः] (३।१७, प०, बभस्ति) १ चमकना. २ दोष लगाना, निन्दा करना।

भा दीप्तौ (२।४४, प०, भाति) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ सुन्दर दीखना. ३ फूंकना, धौंकना। **वि—प्र**—१ विशेष प्रकाश करना।

भाज पृथक्कर्मणि (१०।३११, उ०, भाजयति, ते) १ टुकड़े टुकड़े करना।

भाम क्रोधे (१।३००, आ०, भामते; १०।२९५, उ०, भामयति, ते) १ घुड़कना, गुस्सा करना।

भाष व्यक्तायां वाचि (१।४०७, आ०, भाषते) १ बोलना। **परि**—१ निन्दायुक्त वचन बोलना। **सम्**—१ दूसरे से सम्भाषण करना. २ अच्छी रीति से बोलना।

भासृ दीप्तौ (१।४१५, आ०, भासते) १ चमकना, प्रकाशित होना। **प्रति**—१ अचानक किसी विषय में ज्ञान होना. २ दिखाई देना।

भिक्ष भिक्षायां लाभेऽलाभे च (१।४०१, आ०, भिक्षते) १ याचना करना, मांगना. २ प्राप्त करना, सम्पादन करना. ३ प्राप्त न होना।

भिदि (भिन्द्) अवयवे (१।५२, प०, भिन्दति) १ भाग करना, हिस्सा करना।

भिदिर् (भिद्) विदारणे (७।२, उ०, भिनत्ति, भिन्ते) १ चीरना, तोड़ना।

भिषज् चिकित्सायाम् (११।१८, प०, भिषज्यति) १ चिकित्सा करना।

भिष्णज् उपसेवायाम् (११।१९, प०, भिष्णज्यति) १ नौकरी करना, सेवा करना।

भी भये (३।२, प०, बिभेति) १ डरना, घबराना। १०, क्वाचित्कः, प०, भाययति; भयति) १ डरना।

भुज पालनाभ्यवहारयोः (७।१७, प०, पालने—भुनक्ति, अशने—भुङ्क्ते) १ संरक्षण करना, पालन करना. २ खाना, भक्षण करना।

भुजो कौटिल्ये (६।१२७, प०, भुजति) १ वक्र होना, टेढ़ा होना।

भुरण धारणपोषणयोः (११।२४, प०, भुरण्यति) १ पालन करना. २ धारण करना।

भू सत्तायाम् (१।१, प०, भवति) १ होना. २ रहना. ३ उत्पन्न होना,

---

१. द्र० सायण ऋग्भाष्य १।२८।७; **भर्त्सन इत्यर्थो नवीनः, भक्षण इति तु प्राचीनः**, दयानन्द ऋ० भाष्य १।२८।७। द्र० क्षीरत० ३।१९, अस्मदीया टिप्पणी।

पैदा होना। **अधि**—१ सत्ता चलाना, शासन करना। **अनु**—१ समझना, जानना। **अभि**—१ जीतना, पीड़ा देना। **उत्**—१ उत्पन्न होना। **परा**—१ पराभव करना, जीतना। **प्र**—१ जाना. २ दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना. ३ प्रकट होना. ४ शासन करना। **प्रति**—१ बदले में देना। **परि**—१ अपमान करना, तिरस्कार करना. २ घेरना। **वि**—१ आश्रय देना, पालन करना. २ देखना। **व्यति**—१ परस्पर मित्र होना। **सम्**—१ होना, उत्पन्न होना. २ समावेश होना. ३ हो सकना।

भू प्राप्तौ (१०।२७१, आ०, भावयते, प्राप्तेरन्यत्र—भावयति; भवते भवति[1]) १ प्राप्त होना, मिल जाना. २ एकत्र करना, बटोरना. ३ चिन्तन करना।

भूष अलंकारे (१।४५६, प०, भूषति, १०।१६८, उ०, भूषयति, ते) १ संवारना, अलंकृत करना।

भृजी भर्जने (१।१०८, आ०, भर्जते) १ भूंजना, तलना।

भृञ् भरणे (१।६३६, उ०, भरति, ते) १ पूर्ण करना।

भृञ् धारणपोषणयोः (३।५, उ०, बिभर्ति, बिभृते) १ धारण करना. २ पोषण करना।

भृशि (भृंश) भासार्थः, भावार्थो वा (१०।२२४, उ०, भृंशयति, ते) १ प्रकाशित होना, चमकना. २ बोलना, भाषण करना।

भृशु अधःपतने (४।११५, प०, भृश्यति) १ शरीर योग्यतादि से भ्रष्ट होना, च्युत होना. नीचे गिरना।

भॄ भर्त्सने भरणे च (६।२०, प०, भृणाति) १ घुड़कना, तिरस्कार करना. २ संरक्षण करना, पालन करना, धारण करना।

भेषृ भये गतौ च (१।६२३, उ०, भेषति, ते) १ डरना. २ जाना।

भ्यस भये (१।४१८, आ०, भ्यसते) १ डरना।

भ्रंशु अधःपतने (१।५०६, आ०, भ्रंशते; ४।११५, प०, [2]भ्रश्यति) १ भ्रष्ट होना, पतित होना, गिरना, नीचे गिरना।

भ्रंशु अवस्रंसने (१।५०४ पाठा०[3], आ०, भ्रंशते) १ भ्रष्ट होना, पतित होना, नीचे गिरना।

भ्रंसु अवस्रंसने (१।५०४, आ०, भ्रंसते) १ भ्रष्ट होना, पतित होना, गिरना, नीचे गिरना।

---

१. दीर्घपाठ सामर्थ्य से पक्ष में शप्।

२. अनिदितां (अष्टा० ६।४।२४) से कित् ङित् परे अनुनासिक का लोप। ३. क्षीरत० १।५०१।

भ्रक्ष अदने (१।६३२, उ०, भ्रक्षति, ते) १ खाना ।

भ्रण शब्दार्थः (१।३०३, प०, भ्रणति) १ शब्द करना ।

भ्रमु चलने (१।५८९, प०, भ्रमति, भ्रम्यति[1]) १ चक्राकार घूमना. २ इधर उधर घूमना, भटकना । वि—१ क्रीडा करना, खेलना । सम्—१ सम्मान करना, सत्कार करना. २ गड़बड़ होना ।

भ्रमु अनवस्थाने (४।९५, प०, भ्राम्यति, भ्रमति[2]) १ अस्थिर होना. भ्रमण करना. ३ भ्रान्त होना ।

भ्रशु अधःपतने (१।५०६, आ०, भ्रशते) अर्थ भ्रंशुवत् ।

भ्रस्ज पाके (६।४, उ०, भृज्जति, ते) १ पकाना, भूंजना ।

भ्राजृ दीप्तौ (१।१०६, ५७०, आ०, भ्राजते) १ चमकना, प्रकाशित होना ।

भ्राशृ दीप्तौ (१।५७०, आ०, भ्राशते, भ्राश्यते[1]) १ चमकना ।

भ्री भये भरणे च (९।३८, प०, भ्रीणाति, भ्रिणाति[3]) १ डरना. २ धारण करना, आश्रय देना. ३ पालन करना ।

भ्रुड निमज्जने (६।१०३, प०, भ्रुडति) १ डूबना । केषाञ्चिन्मते संवरणे—१ बटोरना, एकत्र करना. २ ढकना, आच्छादित करना ।

भ्रूण आशाविशंकयोः (१०।१५९, आ०, भ्रूणयते) १ आशा करना. २ भरोसा करना. ३ शंका करना. ४ गर्भ धारण करना[4] ।

भ्रेजृ दीप्तौ (१।१०९, आ०, भ्रेजते) १ प्रकाशित होना, चमकना ।

भ्रेषृ गतौ (१।६२३, उ०, भ्रेषति, ते) १ जाना. २ डरना ।

भ्लक्ष अदने (१।६३२, उ०, भ्लक्षति, ते) १ खाना ।

भ्लाशृ दीप्तौ (१।५७०, आ०, भ्लाशते, भ्लाश्यते[1]) १ प्रकाशित होना, चमकना ।

भ्लेषृ गतौ (१।६२४, उ०, भ्लेषति, ते) १ जाना. २ डरना ।

---

१. वा भ्राशभ्लाशभ्रमु० (अष्टा० ३।१।७०) सूत्र से पक्ष में श्यन् ।

२. वा भ्राशभ्लाशभ्रमु० (अष्टा० ३।१।७०) सूत्र से पक्ष में शप् ।

३. प्वादित्वं केषाञ्चिन्मते, तेन तन्मते ह्रस्वः ।

४. वस्तुतः भ्रूण—गर्भावस्था में आशा विशंका (=उत्पन्न होना या नष्ट होना, दोनों भावनाएं रहती हैं ।

म

मकि (मङ्क्) मण्डने (१।७०, ग्रा०, मङ्कते) १ संवारना, अलंकृत करना. २ जाना।

मख मखि (मङ्ख्) गत्यर्थौ (१।८८, प०, मखति, मङ्खति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

मगध परिवेष्टने, नीचदास्ये च (११।१३, प०, मगध्यति) १ घेरना. २ नीच की सेवा करना।

मगि (मङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, मङ्गति) १ जाना।

मघि (मङ्घ्) गत्याक्षेपे कैतवे च (१।७६, ७७, ग्रा०, मङ्घते) १ जाना. २ प्रारम्भ करना. ३ दोष लगाना, निन्दा करना. ४ ठगना. ५ जुग्रा खेलना।

मघि (मङ्घ्) मण्डने (१।६३, प०, मङ्घति) १ संवारना, भूषित करना, अलंकृत करना।

मच कल्कने (१।१०३, ग्रा०, मचते,) १ गर्व करना. २ दुराचारी होना. ३ बोलना. ४ पीसना, कूटना।

मचि (मञ्च्) धारणोच्छ्राय-पूजनेषु (१।१०४, ग्रा०, मञ्चते) १ धारण करना. २ ऊंचा उठाना, मचान बनाना. ३ पूजित होना।

मज शब्दार्थः (१।१५६, क्षीर०, प०, मजति) १ ग्रावाज करना २ कामातुर होकर ग्रावाज करना।

मठ मदनिवासयोः (१।२२४, प०, मठति) १ गर्वीला होना. २ रहना, वसति करना।

मठि (मण्ठ्) शोके (१।१६३, ग्रा०, मण्ठते) १ दुःख करना. २ उत्कण्ठित होना।

मडि (मण्ड्) भूषायाम् (१।२१३, प०, मण्डति, हर्षे च— १०।५७, उ०, मण्डयति, ते; मण्डति[1]) १ संवारना, ग्रलंकृत करना, २ ग्रानन्दित होना।

मडि (मण्ड्) विभाजने (१।१७१, ग्रा०, मण्डते) १ ग्रलग करना।

मण शब्दार्थः (१।३०३, प०, मणति) १ ग्रस्पष्ट शब्द करना। कहना।

मत्रि (मन्त्र) गुप्तपरिभाषणे (१०।१४६,ग्रा०, मन्त्रयते, मन्त्रति[1]) १ गुप्त भाषण करना। **ग्रा**— १ सत्कार करना, सम्मान करना। **नि**— १ ग्रामन्त्रण करना, बुलाना।

मथि (मन्थ्) हिंसासंक्लेशनयोः (१।३६, प०, मन्थति) १ हिंसा करना, मर्दन करना. २ दुःख देना, शोक करना, रोना।

मथे विलोडने (१।५८७, प०, मथति) १ मथना. २ विचार करना, मनन करना. ३ हिलना।

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप्।

मद तृप्तियोगे (१०।१७४, आ०, मादयते) १ तृप्त करना. २ समाधान करना ।

मदि (मन्द्) स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (१।१२, आ०, मन्दते) १ स्तुति करना. २ तुष्ट करना, आनन्द करना. ३ उन्मत्त होना. ४ सोना. ५ चाहना. ६ चमकना, प्रकाशित होना ।

मदी हर्षग्लेपनयोः (१।५५५, प०, मदति) १ हृष्ट होना, हर्षित होना. २ थकना, श्रान्त होना । **णिच्**—(मदयति[1]) १ हर्षित करना. २ बेहोश करना ।

मदी हर्षे (४।९८, प०, माद्यति) १ हृष्ट होना, हर्षित होना ।

मन ज्ञाने (४।६५, आ०, मन्यते) १ जानना, समझना. २ मान्य करना, स्वीकार करना. ३ विचार करना. ४ मानना । **अनु**—१ अनुमोदन करना. २ अनुमान करना । **अभि**—१ अभिमान करना. २ इच्छा करना, चाहना । **अव**—१ अपमान करना, भर्त्सना करना । **सम्**—१ अनुमोदन देना, कबूल करना ।

मन स्तम्भे (१०।१७८, आ०, मानयते) १ बन्द करना, स्थिर रहना. २ मन्द होना. ३ गर्वीला होना. ४ प्रतिकूल होना. ५ रुकना ।

मनु अवबोधने (८।९, आ०, मनुते) अर्थ 'मन' के समान ।

मन्तु अपराधे (११।२, उ०, मन्तूयति, ते) १ अपराध करना. २ क्रोध करना, गुस्सा करना ।

मन्थ विलोडने (१।३५, प०, मन्थति; ९।४४, प०, मथ्नाति) १ बिलोना. मथना. २ पीडा देना, हिंसा करना ।

मभ्र गत्यर्थः (१।३७५, प०, मभ्रति) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

मय गतौ (१।३२०, आ०, मयते) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

मर्च शब्दार्थः (१०।११७, उ०, मर्चयति, ते) १ शब्द करना ।

मर्ब गतौ (१।२८८, प०, मर्बति) १ जाना, चलना ।

मर्व पूरणे (१।३८५, प०, मर्वति) १ पूर्ण करना, भरना ।

मल मल्ल धारणे (१।३३२, आ०, मलते, मल्लते) १ पहनना. २ धारण करना, धरना. ३ पकड़ना. ४ चिपकाना. ५ लटकाना ।

मव बन्धने (१।३९५, प०, मवति) १ बांधना, रोकना ।

मव्य बन्धने (१।३४०, प०, मव्यति) १ बांधना, रोकना ।

---

१. घटादि पाठान्मित्, मित्वाद् ध्रस्वत्वम् ।

मश शब्दे (१।४७६, प०, मशति) १ शब्द करना. २ क्रोध करना ।

मष हिंसार्थः (१।४६२, प०, मषति) १ मार डालना, दुःख देना ।

मसी परिणामे (४।१११, प०, मस्यति) १ रूपान्तर करना, आकार बदलना । परिमाणे — १ नापना ।

मस्क गत्यर्थः (१।७४, आ०, मस्कते) १ जाना ।

मस्जो शुद्धौ (६।१२५, प०, मज्जति) १ स्नान करना, नहाना. २ धोना, स्वच्छ करना । नि— १ डूबना, डुबकी लगाना ।

मह पूजायाम् (१।४८५, प०, महति; १०।२६२, उ०, महयति, ते) १ सम्मान करना, पूजा करना ।

महि (मंह्) वृद्धौ (१।४२२, आ०, मंहते) १ बढ़ना ।

महि (मंह्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।१६७, क्षीरत० उ०, मंहयति, ते; मंहति[1]) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना, कहना ।

महीङ् पूजायाम् (११।३२, आ०, महीयते) १ पूजनीय होना ।

मा माने, माङ् माने शब्दे च (क्रमशः २।५५, प०, माति; ३।६, आ०, मिमीते; ४।३३, आ०, मायते) १ नापना, तोलना. २ समाना । **अनु**—१ तर्क से सिद्ध करना । **उप**—१ उपमा देना, तुलना करना, समानता दर्शाना । **परि**—१ नापना, गिनना, तोलना, परिमाण करना । **प्र**—१ प्रमाण होना ।

माक्षि (मांक्ष) कांक्षायाम् (१।४४६, प०, मांक्षति) १ इच्छा करना, चाहना ।

माङ् माने शब्दे च, माङ् माने— 'मा माने' के साथ देखें ।

मान पूजायाम् (१।६६६, आ०, मीमांसते[2]) १ ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा करना, शोध करना (१०।२७०, उ०, मानयति, ते; मानति[3]) १ सत्कार करना, मनाना । **प्र**— १ प्रमाण करना । **अप—अव**— १ अपमान करना, तिरस्कार करना ।

मार्ग अन्वेषणे, संस्कारे च (१०।२७३, उ०, मार्गयति, ते; मार्गति[3]) १ ढूंढना. २ स्वच्छ करना, शुद्ध करना ।

मार्ज शब्दार्थः (१०।११६, उ०, मार्जयति, ते) १ शब्द करना ।

माहृ माने (१।६३६, उ०, माहति, ते) १ नापना, गिनना, तोलना ।

मिछ उत्क्लेशे (६।१६, प०,

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप् ।

२. **माने जिज्ञासायाम्** (वा० ३।१।६) से सन् ।

३. **आधृषाद्वा** (१०।२३०) से णिच् के अभाव में शप् ।

मिच्छति) १ पीडा करना, दुःख देना. २ रोकना, निषेध करना।

मिजि (मिञ्ज्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, मिञ्जयति, ते; मिञ्जति[1]) १ चमकना, बोलना।

मिञ् प्रक्षेपणे (५।४, उ०, मिनोति, मिनुते) १ फेंकना. २ फैलाना।

मिथृ मेधाहिंसनयोः (१।६१०, उ०, मेथति, ते) १ समझना, जानना. २ पीडा करना, दुःख देना। **संगमे**— १ एकत्र करना, जोड़ना।

मिदा स्नेहने (१।४९५, आ०, मेदते; ४।१२६, प०, मेद्यति, १०।८ पाठा०, उ०, मेदयति, ते) १ स्निग्ध होना. २ पिघलना. ३ अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, पोतना. ४ प्रीति करना, प्यार करना. ५ नरम होना, मृदुल होना।

मिदि (मिन्द्) स्नेहने (१०।८, उ०, मिन्दयति, ते; मिन्दति[1]) १ स्निग्ध होना. २ पिघलना. ३ अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, पोतना. ४ प्रीति करना, प्यार करना. ५ नरम होना।

मिदृ मेधाहिंसनयोः (१।६०९, उ०, मेदति, ते) १ समझना, जानना. २ पीडा करना, दुःख देना, ३ हानि करना।

मिधृ मेधाहिंसनयोः, संगमे च (१।६११, उ०, मेधति, ते) १ समझना, जानना. २ पीडा करना, दुःख देना. ३ एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना।

मिल श्लेषणे, मिल संगमे (क्रमशः ६।७३, प०, मिलति; ६।१३८, उ०, मिलति, ते) १ मिलना, संयुक्त होना, जुड़ना।

मिवि सेवने सेचने च (१।३९१, प०, मिन्वति) १ सेवा करना, शुश्रूषा करना. २ सींचना, प्रोक्षण करना, गीला करना।

मिश शब्दे रोषकृते च (१।४७९, प०, मेशति) १ शब्द करना, आवाज करना. २ क्रोध करना, गुस्सा करना।

मिश्र सम्पर्के (१०।३४९, उ०, मिश्रयति, ते) १ मिश्रित करना, एकत्र करना।

मिष स्पर्धायाम् (६।६२, प०, मिषति) १ स्पर्धा करना, होड लगाना. २ झगड़ना, कलह करना।

मिषु सेचने (१।४६५, प०, मेषति) १ सींचना, प्रोक्षण करना, **नि**—१ पलक मारना। **उत्**— १ आंख खोलना।

मिह सेचने (१।७५८, प०, मेहति) १ गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना. २ पेशाब करना।

मी गतौ (१०।२५०, उ०,

१. इदित् होने से पक्ष में शप्।

मायति, ते; मयति[1]) १ समझना, जानना. २ जाना ।

मीङ् हिंसायाम् (४।२७, आ०, मीयते) १ मारना, देह त्याग करना ।

मीञ् हिंसायाम् (९।४, उ०, मीनाति, मीनीते) १ मार डालना या दुःख देना ।

मीमृ गतौ शब्दे च (१।३१५, ३१६, प०, मीमति) १ जाना. २ शब्द करना, आवाज करना ।

मील निमेषणे (१।३४७, प०, मीलति) १ आंखें मूंदना, पलक मारना । उत्—१ जगाना. २ खिलना. ३ फैलना । नि—१ बन्द करना या होना ।

मीव स्थौल्ये (१।३८०, प०, मीवति) १ मोटा होना, स्थूल होना ।

मुच कल्कने (१।१०३ पाठा०, आ०, मोचते) १ बोलना, कहना. २ पीसना. ३ ठगना ।

मुच प्रमोचनमोदनयोः (१०।२१२, उ०, मोचयति, ते) १ छोड़ना. २ द्रव्यादि देना. ३ प्रसन्न होना ।

मुचि (मुञ्च्) कल्कने (१।१०३, आ०, मुञ्चते) १ बोलना, कहना. २ पीसना, कूटना. ३ ठगना, फंसाना. ४ दुराचरणी होना. ५ गर्व करना । प्र—१ अतिदान करना, बहुत देना. २ समर्पण करना, देना ।

मुच्लृ मोचने (६।१३६, उ०, मुञ्चति, ते) १ मुक्त करना, छोड़ना २ त्याग करना ।

मुज मुजि (मुञ्ज) शब्दार्थौ (१।१५२, प०, मोजति, मुञ्जति) १ शब्द करना, आवाज करना ।

मुट मर्दने (१।२१५, प०, मोटति) १ घिसना, मर्दन करना २ दबाना, मुक्की मारना, मलना ।

मुट आक्षेपप्रमर्दनयोः (६।८३, प०, मुटति) १ निन्दा करना, दोष देना. २ घिसना, मर्दन करना ।

मुट संचूर्णने (१०।८१, उ०, मोटयति, ते) १ चूर्ण करना, मर्दन करना. २ गूंथना ।

मुटि (मुण्ट्) खण्डने (१।२२३, पाठा०, क्षीरत०, प०, मुण्टति) १ खण्ड खण्ड करना, टुकड़े करना ।

मुठि (मुण्ठ्) पालने (१।१६४, आ०, मुण्ठते) १ पालन करना, रक्षा करना । पलायने—१ उड़ना, उड़ जाना, भाग जाना ।

मुडि (मुण्ड्) खण्डने (१।२१७, प०, मुण्डति) १ चूर्ण करना. २ क्षौर करना, मुण्डन करना, हजामत करना ।

मुडि (मुण्ड्) मार्जने (१।१७४, आ०, मुण्डते) १ स्वच्छ करना. २ स्वच्छ होना. ३ डूबना ।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) सूत्र से पक्ष में शप् ।

मुण प्रतिज्ञाने (६।४६, प०, मुणति) १ प्रण करना, वचन देना।

मुद हर्षे (१।१५, आ०, मोदते) १ आनन्दित होना, प्रसन्न होना, अनु—अनुमोदन क ।

मुद संसर्गे (१०।२०६, उ०, मोदयति, ते) १ मिश्रित करना, एकत्र करना।

मुर संवेष्टने (६।५४, प०, मुरति) १ घेरना. २ लपेटना।

मुर्छा मोहसमुच्छ्राययोः (१।१२७, प०, मूर्च्छति) १ मुरझाना, मूर्छित होना. २ बढ़ना।

मुर्वी बन्धने (१।३८४, प०, मूर्वति) १ बांधना, रोकना।

मुल रोहणे (१०।५८ पाठा०, क्षीरतर०,उ०, मोलयति, ते) १ बोना, बीजारोपण करना।

मुष स्तेये (१।४५८, क्षीरतर०, प०, मोषति; ९।६०, प०, मुष्णाति) १ चुराना, चोरी करना।

मुस खण्डने (४।११०, प०, मुस्यति) १ टुकड़े टुकड़े करना, कतरना, तोड़ना, चीरना।

मुस्त संघाते (१०।९९, उ०, मुस्तयति, ते) १ ढेर करना, बटोरना, एकत्र करना, राशि करना।

मुह वैचित्ये (४।८७, प०, मुह्यति) १ पागल होना, बुद्धिभ्रष्ट होना।

मूङ् बन्धने (१।९९४, आ०, मवते) १ बांधना, जकड़ना।

मूञ् बन्धने (९।११, उ०, मुनाति, मुनीते) १ बांधना, जकड़ना।

मूत्र प्रस्रवणे (१०।३३०, उ०, मूत्रयति, ते) १ मूतना, पेशाब करना।

मूर्छा मोहसमुच्छ्राययोः (१।१२७, पाठा०, प०, मूर्च्छति) १ मूर्च्छित होना, मोहित होना, ज्ञान-रहित होना. २ बढ़ना।

मूल प्रतिष्ठायाम् (१।३५६, उ०, मूलति, ते) १ जड़ जमाना, दृढ़ बैठ जाना। रोहणे—(१०।७७, उ०, मूलयति, ते) १ बीजारोपण करना, बोना, कलम करना। उत्—१ जड़ से उखाड़ना।

मूष स्तेये (१।४५४, प०, मूषति) १ चोरी करना. २ चुराना, ३ मूसना।

मृक्ष संघाते (१।४४४, प०, मृक्षति) १ ढ़ेर करना, बटोरना, एकत्र करना।

मृग अन्वेषणे (४, गणान्ते क्षीरत०, प०, मृगयति; १०।३२२, आ०, मृगयते) १ मृगया करना, शिकार करना. २ ढूंढ़ना।

मृङ् प्राणत्यागे (६।११३, आ०, म्रियते) १ मरना, देहत्याग करना।

मृजू शौचालंकारयोः (१०।२७५, उ०, मार्जयति, ते,

मार्जति[1]) १ स्वच्छ करना, धोना, २ पवित्र होना. ३ संवारना, अलंकृत करना ।

मृजूष् (मृज्) शुद्धौ (२।५६, प०, मार्ष्टि) १ धोना, स्वच्छ करना. २ संवारना । **अप—प्र—**१ सफा करना, झाड़ना, बुहारना. २ स्वच्छ करना. पवित्र करना ।

मृड सुखने (६।३६, प०, मृडति) १ सुख देना, प्रसन्न करना. २ सुखी होना, प्रसन्न होना ।

मृड क्षोदे सुखे च (९।४८, प०, मृड्णाति) १ चूर्ण करना, कूटना, पीसना. २ सुख देना, प्रसन्न करना ।

मृण हिंसायाम् (६।४३, प०, मृणति) १ दुःख देना, पीड़ा करना ।

मृद क्षोदे (९।४७, प०, मृद्नाति) १ पीसना, कूटना, चूर्ण करना ।

मृधु उन्दने (१।६१३, उ०, मर्द्धति, ते) १ मार डालना या दुःख देना. २ आर्द्र करना, गीला करना, गीला होना ।

मृश आमर्शने (६।१३४, प०, मृशति) १ स्पर्श करना, छूना. २ देखना. ३ विचार करना । **परा—**१ बुद्धिपूर्वक कहना, सलाह देना । **वि—**१ विचार करना, मनन करना । **सम्—**१ स्पर्श करना ।

मृष तितिक्षायाम् (४।५३, उ०, मृष्यति, ते; १०।२७६, उ०, मर्षयति, ते, मर्षति[1]) १ सहन करना । **आ—**१ गुस्सा करना । **वि—**१ विपत्ति में पड़ना ।

मृषु सेचने (१।४६८, प०, मर्षति) १ प्रोक्षण करना, सींचना ।

मॄ हिंसायाम् (९।२१, प०, मृणाति) १ मार डालना या दुःख देना, पीछे देना । **प्रति—**१ बदलना ।

मेट्ट मेडृ उन्मादे (१।१८९ पाठा०, प०, मेटति, मेडति) १ पागल होना ।

मेथृ मेधाहिंसनयोः (१।६१०, उ०, मेथति, ते) १ समझना, जानना. २ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना । **संगमे—**१ इकट्ठा करना ।

मेदृ मेधाहिंसनयोः (१।६०९, उ०, मेदति, ते) १ समझना, जानना. २ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना ।

मेधा आशुग्रहणे (११।११, प०, मेधायति) १ शीघ्र समझना, जल्दी जान लेना ।

मेधृ मेधाहिंसनयोः संगमे च (१।६११, उ०, मेधति, ते) १ समझना, जानना. २ मार डालना या दुःख देना. ३ इकट्ठा करना, सङ्गति करना, मेल करना ।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) वचन से पक्ष में शप् ।

मेपृ गतौ (१।२५८, आ०, मेपते) १ जाना. २ सेवा करना ।

मेवृ सेवने (१।३३७, आ०, मेवते) १ सेवा करना ।

मोक्ष असने (१०।१७७, क्षीरत०, प०, मोक्षयति) १ मुक्त करना, छोड़ देना ।

म्ना अभ्यासे (१।६६३, प०, मनति[1]) १ विचार करना, मनन करना ।

म्रक्ष संघाते (१।४४५, प०, म्रक्षति) १ बटोरना, एकत्र करना, ढ़ेर करना. २ लेपन करना, लीपना ।

म्रक्ष म्लेच्छने (१०।१३० पाठा०, उ०, म्रक्षयति, ते) १ मिश्रित करना. २ अशुद्ध करना ।

म्रछ म्लेच्छने (१०।१३०, उ०, म्रच्छयति, ते) १ मिश्रित करना. २ अशुद्ध बोलना ।

म्रद मर्दने (१।५१८, आ०, म्रदते) १ मर्दन करना, पीसना, कूटना ।

म्रुचु म्रुञ्चु गतौ (१।११६, प०, म्रोचति, म्रुञ्चति) १ जाना, स्थानान्तर करना ।

म्रेटृ उन्मादे (१।१८९ पाठा०, प०, म्रेटति) १ पागल होना ।

म्रेडृ उन्मादे (१।१८९, प०, म्रेडति) १ पागल होना ।

म्लक्ष संघाते (१।४४५ पाठा०, प०, म्लक्षति; म्लेच्छने—१०।१३०, उ०, म्लक्षयति, ते) १ मिश्रित करना, एकत्र करना, २ अशुद्ध बोलना, असंबद्ध बोलना ।

म्लुचु म्लुञ्चु गत्यर्थौ (१।११६, प०, म्लोचति, म्लुञ्चति) १ जाना, स्थानान्तर करना । अभिनि—१ नीचे जाना, अस्त होना ।

म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे–अव्यक्तायां वाचि वा (१।१२१, प०, म्लेच्छति; १०।१३१ उ०, म्लेच्छयति, ते) १ अस्पष्ट या अशुद्ध बोलना. २ असंबद्ध सम्भाषण करना, बोलना. ३ म्लेच्छ भाषा बोलना, जंगली भाषा बोलना ।

म्लेटृ उन्मादे (१।१८९, प०, म्लेटति) १ पागल होना ।

म्लेडृ उन्मादे (१।१८९ पाठा०, प०, म्लेडति) १ पागल होना ।

म्लेवृ सेवने (१।३३७, आ०, म्लेवते) १ सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना ।

म्लै हर्षक्षये (१।६४४, प०, म्लायति) १ थकना, श्रान्त होना. २ निरुत्साह होना. ३ नष्ट होना. ४ मुरझाना, कुम्हलाना ।

य

यक्ष पूजायाम् (१०।१६१, उ०,

---

१. पाघ्राध्मास्थाम्ना० (अष्टा० ७।३।७८) से 'मन' आदेश ।

यक्षयति, ते) १ आराधना करना, पूजा करना, सत्कार करना ।

यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (१।७२८, उ०, यजति, ते) १ यज्ञ करना, हवन करना. २ देवपूजा करना. ३ अर्पण करना, देना. ४ संगति करना, संयोग करना ।

यती प्रयत्ने (१।२५, आ०, यतते) १ यत्न करना, उद्योग करना. २ निश्चय करना, ठहराना ।

यत निकारोपस्कारयो: (१०।२०३, उ०, यातयति, ते) १ दुःख देना. २ मारना, ठोकना, चपेटना. ३ आज्ञा करना. ४ एकत्र करना, टोरना. ५ मना करना, रोकना । **निर्**—१ बदला चुका लेना, वैर शुद्धि करना. २ देना, दान देना. ३ अपने पास दूसरे की जो वस्तु हो सो लौटा या वापिस देना. ४ माल बाहर भेजना । **वि**—१ धृष्टता करना ।

यत्रि (यन्त्र्) संकोचने (१०।३, उ०, यन्त्रयति, ते, यन्त्रति[1]) १ स्वाधीन रखना. २ संकुचित करना ।

यभ मैथुने (१।७०८, प०, यभति) १ मैथुन करना, संयोग करना ।

यम उपरमे (१।७१०, प०, यच्छति[2]) १ प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना । **नि**—१ दौड़ाना, भगाना. २ कुलाचार करना. ३ आकलन करना, आकर्षण करना, खींचना. ४ नियम में बांधना । **उत्**—(उ०[3]) १ यत्न करना, उद्योग करना. २ ऊपर उठाना. ३ ऊपर चढना । **व्या**—(आ०[4]) १ कष्ट करना, मेहनत करना. २ व्यवहार करना. ३ अपना उद्योग करना । **सन्नि**—(प०) १ प्रतिरोध करना, रोकना । **आ**—(आ०[4]) १ हाथ पसारना, (प०) १ जाना. २ बलात्कार से लेना । **सम्**—(उ०[3]) १ अपनी वस्तुओं को एकत्र करना, ढेर करना. (प०) १ संयोग करना, मेल करना । **उप**—(उ०[3]) १ विवाह करना, व्याहना, शादी करना. २ मान्य करना, स्वीकार करना. ३ विद्या से जीतना, विद्या के बल से स्वाधीन रखना ।

यम परिवेषणे (१०।९१, उ०, यमयति, ते; **परिवेषणादन्यत्र**—यामयति) १ स्वाधीन रखना, काबू में रखना. २ पोषण करना, खाने को देना ।

यसु प्रयत्ने (४।१००, प०,

---

१. इदित् करण से पक्ष में शप् ।
२. **इषुगमियमां छः** (अष्टा० ७।३।७७) सूत्र से छकारादेश ।
३. अष्टा० १।३।७५ सूत्र से कर्त्रभिप्राय में आ०, अन्यत्र प० ।
४. अष्टा० १।३।२८ सूत्र से अकर्मक से आ०, अन्यत्र प० ।

यस्यति) १ यत्न करना। आ—१ मेहनत करना, कष्ट करना। निर्—१ खोना।

या प्रापणे (२।४२, प०, याति) १ जाना. २ प्राप्त होना. ३ पहुंचना। **अनु**—१ अनुसरण करना, पीछे पीछे जाना। **अभि**—१ पहुंचना, पास जाना। **आ**—१ आना, प्रस्तुत होना। **उप**—१ छोड़ना, त्याग करना। **निर्**—१ बाहर जाना, आगे जाना. २ शीघ्रता से निकल जाना। **प्र**—१ जाना। **प्रति**—१ किसी ओर जाना। **प्रत्युत्**—१ सामने जाना। **समभि**—१ समीप जाना। **समा**—१ आना या पहुंचना।

याचृ याच्ञायाम् (१।६०५, उ०, याचति, ते) १ याचना करना, मांगना. २ देने की चाहना करना, देने के लिये निकालना।

यु मिश्रणे अमिश्रणे च (२।२६, प०, यौति) १ मिश्रित करना, मिलाप करना. २ पृथक पृथक् करना।

यु जुगुप्सायाम् (१०।१७६, आ०, यावयते) १ अपमान करना, दोष लगाना, निन्दा करना।

युगि (युङ्ग्) वर्जने (१।६१, प०, युङ्गति) १ छोड़ देना, त्याग करना।

युछ प्रमादे (१।१२६, प०, युच्छति) १ दुर्लक्ष्य करना, असावधान रहना, प्रमाद करना।

युज समाधौ (४।६६, आ०, युज्यते) १ चित्त स्थिर करना, मन को रोकना।

युज संयमने (१०।२३१, उ०, योजयति, ते, योजति[1]) १ संयत करना, बांधना, वश में रखना।

युजिर् (युज्) योगे (७।७, उ०, युनक्ति, युङ्क्ते) १ जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना। **अनु**—१ प्रश्न करना, पूछना. २ चौकस करना. ३ दोष लगाना। **अभि**—१ बोलना. २ दोष लगाना. ३ फरियाद करना. ४ अद्भुत प्रश्न करना। **उप**—१ खाना. २ उपयोग करना, काम में लाना. ३ जबरन लेना। **नि**—१ आज्ञा करना, हुक्म करना. २ मिलाप करना, एकत्र करना। **प्र**—१ योग्य होना, फबना. २ यत्न करना. ३ मिलाप करना. ४ ऋण देना, पैसा उधार देना। **वि**—१ अलग करना, पृथक् करना. २ प्रेरणा करना, भेजना। **विनि**—१ व्यय करना, खर्च करना, नियमित करना. ३ भेजना, प्रेरणा करना. ४ गूंथना, एकत्र करना। **विप्र**—१ अलग अलग करना, विभक्त करना। **सम्**—१ युक्त करना, मिलाप करना। **समा**—१ बहुत विचार करना।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) सूत्र से पक्ष में शप्।

युञ् बन्धने (९।७, उ०, युनाति, युनीते) १ बांधना, बन्धन करना, गूंथना।

युतृ भासने (१।२६, आ०, योतते) १ चमकना, प्रकाशित होना।

युध संप्रहारे (४।६२, आ०, युध्यते) १ युद्ध करना, लड़ाई करना, झगड़ना।

युप विमोहने (४।१२४, प०, युप्यति) १ चित्त वैक्लव्य होना, घबरा जाना।

यूष हिंसायाम् (१।४५७, प०, यूषति) १ मारना, दुःख देना, पीडा करना।

येषृ प्रयत्ने (१।४११ पाठा०, आ०, येषते) १ प्रयत्न करना. २ आग्रह करना, चिपक के रहना।

यौटृ बन्धने (१।१८८, प०, यौटति) १ बांधना, वश में रखना।

यौडृ बन्धने (१।१८८ पाठा०, प०, यौडति) १ बांधना, वश में रखना।

र

रक्ष पालने (१।४४०, प०, रक्षति) १ रक्षण करना. पालन करना। परि—१ रक्षण करना, पालन करना, बचाव करना।

रख रखि (रङ्ख्) गत्यर्थों (१।८८, प०, रखति, रङ्खति) १ जाना।

रग आस्वादने (१०।२०६, उ०, रागयति, ते) १ स्वाद लेना, रुचि लेना।

रग रगि (रङ्ग्) गत्यर्थों (१।८८, प०, रगति, रङ्गति) १ जाना, रेंगना।

रगे शङ्कायाम् (१।५३४, प०, रगति) १ शंका करना, संदिग्ध होना।

रघ आस्वादने (१०।२०५, उ०, राघयति, ते) १ स्वाद लेना, रुचि लेना।

रघि (रङ्घ्) गत्यर्थः (१।७४, आ०, रङ्घते) १ जाना।

रघि (रङ्घ्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, रङ्घयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना।

रच प्रतियत्ने (१०।२८९, उ०, रचयति, ते) १ रचना. २ शिल्प कर्य करना. ३ ग्रन्थ बनाना।

रञ्ज रागे (१।७२५. उ०, रजति, ते; ४।५६, उ०, रज्यति, ते) १ रंग देना, रंगना। अनु—१ किसी वस्तु में अनुरक्त होना, तत्पर होना, लवलीन होना, मोहित होना। अप—वि—१ विरक्त होना, तिरस्कार करना।

रट रठ परिभाषणे (१।१९३, २२६, प०, रटति, रठति) १ बोलना, सम्भाषण करना।

रण शब्दार्थः गत्यर्थः (१।३०३, ५३९, प०, रणति) १ शब्द करना, आवाज करना. २ जाना।

रद विलेखने (१।४३, प०, रदति) १ विदारण करना, चीरना. २ खोदना।

रध हिंसासंराध्योः (४।८२, प०, रध्यति) १ पूरा करना, समाप्त करना. २ अपकार करना, मार डालना या दुःख देना. ३ पक्व होना, पकना. ४ शुद्ध होना, निर्दोष होना, गलती न करना।

रप व्यक्तायां वाचि (१।२८५, प०, रपति) १ स्पष्ट बोलना।

रफ रफि(रम्फ्) गतौ (१।२८८, प०, रफति, रम्फति) १ जाना। हिंसायामेके—१ मार डालना या दुःख देना।

रबि (रम्ब्) शब्दे (१।२६२, आ०, रम्बते) १ शब्द करना।

रभ राभस्ये (१।७०१, आ०, रभते) १ आनन्दित होना, प्रसन्न होना। आ—१ प्रारम्भ करना, शुरू करना. २ आनन्दित होना, प्रसन्न होना।

रभि (रम्भ्) शब्दे (१।२७०, आ०, रम्भते) १ शब्द करना, आवाज करना। परि—१ आलिङ्गन करना, गले लगाना।

रमु क्रीडायाम् (१।५९२, आ०, रमते) १ रमना, क्रीडा करना, खेलना। आ—(प०[1]), उप—(उ०[2]), वि—(प०[1]) १ विराम करना, स्थिर रहना, आराम करना।

रय् गतौ (१।३२३, आ०, रयते) १ जाना. २ हिलना।

रवि (रण्व) गत्यर्थः (१।३९३, प०, रण्वति) १ जाना।

रस शब्दे (१।४७२, प०, रसति) १ शब्द करना, आवाज करना।

रस आस्वादनस्नेहनयोः (१०।३५८, उ०, रसयति, ते) १ स्वाद लेना, चखना. २ प्रीति करना. प्यार करना।

रह त्यागे (१।४८६, प०, रहति; १०।६४, उ०, राहयति, ते; १०।२८४ अदन्तः, उ०, रहयति, ते) १ छोड़ना, त्याग करना। वि—१ अलग होना, भिन्न होना।

रहि (रंह्) गतौ (१।४८७, प०, रंहति) १ वेग से जाना।

रहि (रंह) भासार्थः भाषार्थ वा (१०।२२४, उ०, रहयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना, संम्भाषण करना।

रा दाने (२।५०, प०, राति) १ देना. २ मिल जाना।

राखृ शोषणालमर्थयोः (१।८६, प०, राखति) १ सूखना, शुष्क होना.

---

१. अष्टा० १।३।८३ ॥ २. अष्टा० १।३।८५ ॥

२ संवारना, भूषित करना, अलंकृत करना. ३ कार्यक्षम होना, पूरा होना. ४ रोकना, निषेध करना, विघ्न करना ।

राधृ सामर्थ्ये (१।७८, आ०, राधते) १ समर्थ होना, शक्य होना, योग्य होना ।

राजृ दीप्तौ (१।५६६, आ०, राजते) १ चमकना, शोभित होना । **निर्**—(नी) १ आरती करना । **वि**—१ शोभित होना, प्रकाशित होना, चमकना. २ जीतना ।

राध वृद्धौ (४।६६, अकर्मकात् प०, राध्यति) १ सिद्ध होना २ बढ़ना ।

राध संसिद्धौ (५।१७, प०, राध्नोति) १ पूरा करना, सिद्ध करना । **अप**—१ अपराध करना । **आ**—१ आराधना करना, उपासना करना । **सम्**—१ सिद्ध करना ।

रासृ शब्दे (१।४१६, आ०, रासते) १ शब्द करना ।

रि हिंसायाम् (५।३०, प०, रिणोति) १ दुःख देना, पीडा करना ।

रि गतौ (६।११४, प०, रियति) १ जाना ।

रिख गत्यर्थः (१।८६, प०, रेखति) १ जाना ।

रिगि (रिङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, रिङ्गति) १ जाना ।

रिच वियोजनसंपर्चनयोः (१०।२४०, उ०, रेचयति, ते, रेचति) १ एकत्र करना, जोड़ना, बांधना. २ अलग अलग करना, फैलाना. ३ दस्त देना, पेट साफ करना, रेचक दवा देना ।

रिचिर् (रिच्) विरेचने (७।४, उ०, रिणक्ति, रिङ्क्ते) १ मल शुद्धि होना, दस्त खुलना, झाडा होना. २ गर्भपात कराना, गर्भ गिराना । **अति**—१ अतिरिक्त होना, अतिक्रमण करना । **वि**—१ मल शुद्धि होना, दस्त खुल कर होना, झाड़ा साफ होना ।

रिफ कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु (६।२३, प०, रिफति) १ बोलना, कहना. २ युद्ध करना, लड़ाई करना, झगड़ना. ३ दोष लगाना, निन्दा करना. ४ दुःख देना, पीडा करना. ५ देना, दान देना. ६ आत्मप्रशंसा या स्तुति करना ।

रिवि (रिण्व्) गत्यर्थः (१।३६३, प०, रिण्वति) १ जाना ।

रिश हिंसायाम् (६।१२६, प०, रिशति) १ मार डालना या दुःख देना. २ मारने का यत्न करना ।

रिष हिंसार्थः (१।४६२, प०, रेषति; ४।१२०, प०, रिष्यति) १ मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना ।

रिह कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु (६।२४, प०, रिहति) १ कहना, २ आत्मप्रशंसा करना. ३ लड़ाई करना ४ निन्दा करना. ५ मार डालना या दु.ख देना, मारने का यत्न करना. ६ देना।

री गतिरेषणयोः (६।३२, प०, रिणाति) १ जाना. २ अरण्य पशु के समान पुकारना. ३ पीडा करना, दुःख देना।

रीङ् स्रवणे (४।२८, आ०, रीयते) १ झरना, चूना, टपकना. २ गिरना, नीचे आना।

रु शब्दे (२।२८, प०, रौति) १ शब्द करना, आवाज करना।

रुङ् गतिरेषणयोः (१।६८६, आ०, रवते) १ जाना, चलना. २ मार डालना या दुःख देना. ३ बोलना, सम्भाषण करना. ४ क्रोध करना, गुस्सा करना।

रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (१।४६८, आ०, रोचते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ आनन्द करना, प्रसन्न होना, उत्साह करना. ३ रुचना।

रुज हिंसायाम् (१०।२२७, उ०, रोजयति, ते) १ मारना, दुःख देना।

रुजो भङ्गे (६।१२६, प०, रुजति) १ दुःख से या रोग से पीडित होना. २ वक्र होना, बांका होना, टेढा होना. ३ टूट जाना।

रुट उपघाते (१।५००, आ०, रोटते) १ प्रतिबन्ध करना, रोकना. २ झगड़ना ३ कामवेग से तड़फना, जमीन पर लेटना।

रुट रोषे (१०।१४१, उ०, रोटयति, ते) १ क्रोध करना, गुस्सा करना।

रुट भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, रोटयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना, भाषण करना।

रुटि (रुण्ट) स्तेये (१।२१६, प०, रुण्टति) १ चुराना, मूसना।

रुठ उपघाते (१।२८८, प०, रोठति) १ मारना, नीचे गिरना. (१, क्वाचित्कः, आ०, रोठते) १ रोकना, आड़े आना।

रुठि (रुण्ठ्) स्तेये (१।२२०, प०, रुण्ठति) १ चुराना, मूसना।

रुठि (रुण्ठ) गतौ (१।२३७, प०, रुण्ठति) १ जाना. २ आलस्य करना. ३ लगड़ाना।

रुदिर् (रुद्) अश्रुविमोचने (२।६०, प०, रोदिति) १ रोना. २ रोते रोते कहना.। उपा—१ रो रो कर शान्त करना. २ दूसरे के लिये रोना।

रुध कामे (४।६३, अनुपूर्वः, प०, अनुरुध्यते) १ कृपालु होना, दया करना. २ - अनुमोदन देना, सलाह

करना. ३ शोक करना, रोना. ४ चाहना।

रुधिर् (रुध्) आवरणे (७।१, उ०, रुणद्धि, रुन्धे) १ रोकना. २ घेर लेना, घेरना। **अभिसम्** १ प्रतिरोध करना, मना करना। **अव**—१ सावधान रहना, दक्षता से रहना। **उप**—१ घेरना, घेर लेना, सेना के द्वारा घेरना। **प्रति**—१ रोकना। **सन्नि**—१ बन्द करना, सैन्य आदि से बन्द करना।

रुप विमोहने (४।१२४, प०, रुप्यति) १ विकल चित्त होना, भ्रान्त होना, घबरा जाना।

रुश हिंसायाम् (६।१२६, प०, रुशति) १ मार डालना या दुःख देना।

रुशि (रुंश्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, रुंशयति, ते, रुंशति[1]) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना।

रुष हिंसार्थः (१।४६२, प०, रोषति; ४।१२०, प०, रुष्यति) १ मार डालना या दुःख देना, मार डालने का यत्न करना।

रुष रोषे (१०।१४०, उ०, रोषयति, ते) १ क्रोध करना, गुस्सा करना।

रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (१।५९८, प०, रोहति) १ बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना. २ उत्पन्न होना, पैदा होना, प्रकट होना. ३ जन्म होना, जन्म लेना। **अधि**—१ ऊपर चढ़ना, चढ़ना, आरोहण करना। **अव**—१ उतरना, नीचे आना। **आ**—१ आरूढ़ होना, ऊपर बैठना. २ ऊपर चढ़ना। **प्र**—१ उगना, अङ्कुर उत्पन्न होना।

रूक्ष पारुष्ये (१०।३३१, उ०, रूक्षयति, ते) १ कठिन होना, रूक्ष होना. २ कठोर वचन बोलना. ३ नीरस होना, शुष्क होना, सूखना।

रूप क्रियायाम् (१०।३६०, उ०, रूपयति, ते) १ बनाना, आकार बनाना, रचना करना. २ मन में रूपाकृति लाना। **नि**—१ स्पष्ट बोलना, समझा के कहना. २ वाद करना, वाद विवाद करना, बहस करना।

रूष भूषायाम् (१।४५५, प०, रूषति) १ संवारना, अलंकृत करना, शृंगार करना।

रेकृ शंकायाम् (१।६५, आ०, रेकते) १ शंका करना, संदिग्ध होना। **आ**—१ अधिक संदिग्ध होना।

रेखा श्लाघासादनयोः (११।३३, प०, रेखायति) १ स्तुति करना.

---

१. इदित् करण से पक्ष में शप्।

२ उत्कर्ष की सीमा बनना. ३ रेखा खींचना।

रेजृ दीप्तौ (१।१११, क्षीरत० पाठा०, ग्रा०, रेजते) १ चमकना, प्रकाशित होना।

रेटृ परिभाषणे (१।६०६, उ०, रेटति, ते) १ बोलना, सम्भाषण करना। **याञ्चायाम्**—१ याचना करना, मांगना।

रेपृ गतौ (१।२५८, ग्रा०, रेपते) १ जाना। **शब्देऽपि**—शब्द करना।

रेभृ शब्दे (१।२६६, ग्रा०, रेभते) १ शब्द करना।

रेवृ प्लवगतौ (१।३३६, ग्रा०, रेवते) १ उड़कर जाना. २ तैर कर पार जाना. ३ नदी के समान बहना।

रेषृ ग्रव्यक्ते शब्दे (१।४१३, ग्रा०, रेषते) १ ग्रस्पष्ट शब्द करना. २ हिनहिनाना. ३ जोर से चिल्लाना।

रै शब्दे (१।६४६, प०, रायति) १ शब्द करना।

रोड़ृ उन्मादे (१।२४६, प०, रोडति) १ उन्मत्त होना, पागल होना. २ ग्रपमान करना।

रौड़ृ ग्रनादरे (१।२४५, प०, रौडति) १ ग्रपमान करना, तिरस्कार करना।

ल

लक्ष दर्शनाङ्कनयोः (१०।५, उ०, लक्षयति, ते; **ग्रालोचने**—१०।१६४, ग्रा०, लक्षयते) १ देखना. २ चिह्न करना, संकेत लगाना. ३ तारतम्य देखना, विवेचन करना, निरूपण करना। **उप**—१ एक ग्रर्थ के कहने से दूसरे ग्रर्थ का बोध करना। **सम्**—१ ग्रच्छी तरह जानना।

लख लखि (**लङ्ख्**) **गत्यर्थौ** (१।८८, प०, लखति, लङ्खति) १ जाना, हिलना।

लग ग्रास्वादने (१०।१८७, क्षीरत०, उ०, लागयति, ते) १ स्वाद लेना. चखना। **क्वचिद् ग्राच्छादने**—१ ढ़कना, सम्पादित करना।

लगि (लङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, लङ्गति) १ जाना, लंगडाना।

लगे संगे (१।५३५, उ०, लगति) १ संयोग होना, मिलाप होना. २ स्पर्श होना, छूना।

लघि (लङ्घ्) गतौ भोजननिवृत्तौ च (१।७४, ७५, ग्रा०, लङ्घते) १ जाना. २ उपवास करना, भूखा रहना। **उत्**—१ लांघना, मर्यादा का ग्रतिक्रमण करना।

लघि (लङ्घ्) शोषणे (१।६४, प०, लङ्घति) १ कम होना, न्यून होना, ग्रल्प होना. २ शुष्क होना, सूखना।

लघि (लङ्घ्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, लङ्घयति, ते) चमकना. २ आगे बढ़ जाना. ३ बोलना ।

लछ लक्षणे (१।१२२, प०, लच्छति) १ चिह्न करना, निशान करना. २ ध्यान में रखना, दिल में धरना ।

लज अपवारणे (१०।११, उ०, लाजयति, ते) १ ढांकना, छिपाना. २ दूर करना ।

लज लजि(लञ्ज्)भर्जने (१।१४७, प०, लजति, लञ्जति) १ भूंजना, तलना, भूनना । **भर्त्सने**— १ अपमान करना, धिक्कारना ।

लज लजि (लञ्ज्) भासार्थः, भाषार्थो वा (१०।२२४, उ०, लाजयति, ते) १ चमकना. बोलना ।

लज लजि(लञ्ज्)प्रकाशने (१०।३४७, ३४८, उ०, लजयति,ते, लञ्जयति, ते) १ प्रकट होना, स्पष्ट होना ।

लजि(लञ्ज्)हिंसाबलादाननिकेतनेषु (१०।३५, उ०, लञ्जयति, लञ्जति[1] ते) १ दुःख देना, पीड़ा करना. २ दृढ होना, बलवान् होना. ३ देना. ४ रहना, वास करना ।

लजी व्रीडायाम् (६।१०, आ०, लजते) १ लज्जित होना, मुंह छिपाना ।

लट बाल्ये (१।१६४, प०, लटति) १ बालक के समान चेष्टा करना, बोलना. २ अल्प भाषण करना, थोड़ा बोलना ।

लड विलासे (१।२४८, प०, लडति) १ क्रीडा करना, मौज करना. २ जीभ बाहर निकालना ।

लड उपसेवायाम् (१०।७, उ०, लाडयति, ते) १ पालन करना. २ चाहना ।

लडि (लण्ड्) उत्क्षेपणे (१०।६, उ०, लण्डयति, ते, लण्डति[1]) १ ऊपर को फेंकना, ऊपर उड़ाना ।

लडि (लण्ड्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२५, उ०, लण्डयति, ते, लण्डति[1]) १ चमकना. २ बोलना, भाषण करना ।

लप व्यक्तायां वाचि (१।२८५, प०, लपति) १ स्पष्ट बोलना । **अनु**—१ दूसरे के समान बोलना, यथामति बोलना. २ प्रत्युत्तर देना । **अप**—१ स्वीकार नहीं करना, मान्य नहीं करना । **आ**—१ विचार करना, पूछना. २ आलाप करना । **प्र**—१ बकना, बकवास करना । **प्रति**—१ प्राप्त होना, मिलना । **वि**—१ रोना, शोक करना । **विप्र**—१ भाषण का खण्डन करना, प्रतिषेध करना । **सम**—१ बोलना, भाषण

---

१. इदित् करण से पक्ष में शप् ।

करना. २ कपट करना, वञ्चना करना।

लबि (लम्ब्) शब्दे, अवस्रंसने च (१।२६२, २६३, आ०, लम्बते) १ शब्द करना, आवाज करना. २ लटकना. ३ नीचे औंधा गिरना। अव—१ लटकना, आश्रय करना. २ टिकाना, आश्रय देना ३ टिकना. ४ नीचे शिर और ऊपर पांव करके लटकना। आ—१ विश्वास करना, भरोसा करना। वि—१ देर करना।

लभष् (लभ्) प्राप्तौ (१।७०२, आ०, लभते) १ प्राप्त होना, मिलना। आ—१ स्पर्श करना[1]।

लर्ब गतौ (१।२८८, प०, लर्बति) १ जाना।

लल विलासे (१।२४८ पाठा०[2], प०, ललति) १ क्रीडा करना, खेलना. २ जीभ बाहर निकाल के हिलाना।

लल ईप्सायाम् (१०।१५६, आ०, लालयते) १ इच्छा करना, चाहना. २ रखना, टिकाना, स्थापित करना. ३ रमण करना, खेलना, रति करना।

लश शिल्पयोगे (१०।१७४ पाठा०, क्षीरतर०[3], प०, लाशयति) १ चतुर होना, कला कौशल जानना।

लष कान्तौ (१।६२८, उ०, लषति, ते) १ इच्छा करना, चाहना। अभि—१ चाहना।

लष शिल्पयोगे (१०।१७४ पाठा, क्षीरतर०[3], प०, लाषयति) १ चतुर होना, कला कौशल जानना।

लस श्लेषणक्रीडनयोः (१।४७३, प०, लसति) १ आलिङ्गन करना, गले लगाना. २ क्रीडा करना, खेलना, रमण करना। उत्— १ चमकना, तेजोयुक्त होना. २ आनन्दित होना, प्रसन्न होना। वि—१ विलास करना, रमण करना।

लस शिल्पयोगे (१०।१६४, उ०, लासयति, ते) १ चतुर होना, कुशल होना, कला कौशल जानना।

लस्जी व्रीडायाम् (६।१०, आ०, लज्जते) १ लज्जित होना, शरमाना. घबरा जाना।

ला आदाने (२।५१, प०, लाति) १ लेना, ग्रहण करना. २ देना[4], दान देना।

लाखृ शोषणालमर्थयोः (१।८६,

---

१. हृदयमालभते, गृह्यसूत्रो में। २ डलयोरेकत्वस्मरणात्।

३. १७४ संख्या क्षीरतर०, की है। यह 'लस' (१०।१६४) का पाठान्तर है।

४. 'लादाने' ऐसे संहिता पाठ में 'आदाने' 'दाने' दोनों प्रकार से सन्धिच्छेद हो सकता है।

प०, लाखति) १ शुष्क होना, कार्य-क्षम होना, समर्थ होना. २ भूषित करना, संवारना. ४ मना करना, निषेध करना ।

लाघृ सामर्थ्ये (१।७८, ग्रा०, लाघते) १ लायक होना, कार्यक्षम होना, समर्थ होना ।

लाछि (लाञ्छ) लक्षणे (१।१२२, प०, लाञ्छति) १ चिह्न करना, निशान लगना ।

लाज लाजि (लाञ्ज्) भर्जने भर्त्सने च (१।१४८, प०, लाजति, लाञ्जति) १ भूनना. २ दोष लगाना, निन्दा करना ।

लाट जीवने (११।३०, प०, लाटयति) १ जीना ।

लाभ प्रेरणे (१०।३६३, प०, लाभयति) १ प्रेरणा करना, भेजना. २ उडाना, फेंकना ।

लिख अक्षरविन्यासे (६।७४, प०, लिखति) १ लिखना ।

लिगि (लिङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, लिङ्गति) १ जाना । आ—आलिङ्गन करना, गले लगाना ।

लिगि (लिङ्ग्) चित्रीकरणे (१०।२०८, उ०, लिङ्गयति ते, लिङ्गति[1]) १ अनेक तरह का रंग देना, रगाना ।

लिट अल्पकुत्सनयोः (११,३९, प०, लिटयति) १ अल्प होना, कम होना. २ दोष लगाना, निन्दा करना ।

लिप उपदेहे (६।१४२, उ०, लिम्पति, ते) १ लीपना, पोतना, विलेपन करना. २ बढाना, अधिक करना ।

लिश अल्पीभावे (४।६८, प०, लिश्यति) १ कम करना, न्यून करना ।

लिश गतौ (६।१३० प०, लिशति) १ जाना. २ आना ।

लिह आस्वादने (२।६, उ०, लेढि, लीढे) १ चाटना, चखना ।

ली लीङ् श्लेषणे (लीङ्—४।२६, आ०, लीयते; ली—९।३३, प० लीनाति) १ युक्त होना. प्राप्त होना, मिलना ।

ली द्रवीकरणे (१०।२३५, उ०, लाययति, ते, लयति[2]; लीनयति[3], ते) १ पतला करना, गलाना । आ — १ खर्च करना । प्रवि—१ प्राप्त करना, सम्पादित करना ।

---

१. इदित् करण से पक्ष में शप् ।

२. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप् ।

३. लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने (अष्टा० ७।३।३९) सूत्र से नुक् पक्ष में ।

लुजि (लुञ्ज्) हिंसाबलादाननिकेतनेषु (१०।३५, उ०, लुञ्जयति, ते) १ पीड़ा करना, दुःख देना. २ मोटा होना, बली होना. ३ देना. ४ रहना, वास करना।

लुञ्च अपनयने (१।११४, प०, लुञ्चति) १ कतरना चीरना, तोड़ना. २ छीलना, छाल निकालना. ३ बाल आदि को उखाड़ना।

लुट विलोडने (१।२०७, प०, लोटति) १ विलोडना, कांपना, हिलना।

लुट उपघाते (१।५००, आ०, लोटते) १ प्रतिबन्ध करना, रोकना. २ ढकेलना, धक्का मारना।

लुट संश्लेषणे (६।८९, प०, लुटति) १ संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना, २ आलिङ्गन करना।

लुट भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, लोटयति, ते) १ चमकना. २ बोलना, भाषण करना।

लुटि (लुण्ट्) स्तेये (१।२१६, प०, लुण्टति; १० क्वाचित्कः, प०, लुण्टयति) १ चुराना, मूसना, लूटना. २ अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना।

लुठ उपघाते (१।२२८, प०, लोठति; १।५०० क्वचित्, आ०, लोठते) १ नीचे गिराना।

लुठ संश्लेषणे (६।९०, प०, लुठति) १ भूमि का स्पर्श करना, जमीन पर लोटना. २ झरना, बहना।

लुठि (लुण्ठ्) स्तेये (१।२२०, प०, लुण्ठति) १ चुराना, मूसना।

लुठि (लुण्ठ्) आलस्ये प्रतिघाते च (१।२३५, प०, लुण्ठति) १ अलसाना. २ लंगडाना. ३ रोकना।

लुठि (लुण्ठ्) गतौ (१।२३७, प०, लुण्ठति) १ जाना, लुड़कना।

लुण्ठ स्तेये (१०।३२, उ०, लुण्ठयति, ते) १ चुराना, लूटना।

लुथि (लुन्थ्) हिंसासंक्लेशनयोः (१।३६, प०, लुन्थति) १ मार डालना, दुःख देना. २ क्लेशित करना, श्रान्त करना. ३ कष्ट करना, श्रम करना. ४ पीडा भोगना।

लुप विमोहने (४।१२४, प०, लुप्यति) १ मतिभ्रंश होना, चूकना. २ मतिभ्रंश कराना, चूक कराना।

लुप्लृ छेदने (६।१४०, उ०, लुम्पति, ते) १ कतरना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना, नष्ट करना. २ घिसना। वि—१ लुप्त करना।

लुबि (लुम्ब्) अर्दने (१।२६१, प०, लुम्बति; १०।१२५, उ०, लुम्बयति, ते,) १ मार डालना. २ दुःख देना, पीडा करना. ३ गोदना, नोचना। **अदर्शने**—१ नष्ट होना, गुप्त होना, अदृश्य होना।

लुभ गार्ध्ये (४।१२५, प०,

लुभ्यति) १ आशा करना, चाहना, लोभ करना। प्र—सम्—१ लुभाना, आकर्षण करना, खींच लेना।

लुभ विमोहने (६।२२, प०, लुभति) १ मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना।

लूञ् छेदने (९।१२, उ० लुनाति, लुनीते) १ कतरना, चीरना।

लूष भूषायाम् (१।४५५, प०, लूषति) १ संवारना, श्रृंगार करना, सुशोभित करना।

लूष हिंसायाम् (१०।७७, उ०, लूषयति, ते) १ दुःख देना, पीडा करना।

लेट पूर्वभावे स्वप्ने च (११।६, प०,लेटयति) १ पहिले होना. २ सोना। **धौर्त्ये च**—१ जुवा खेलना।

लेपृ गतौ (१।२५८, आ०, लेपते) १ नजदीक जाना, समीप आना। **शब्दे**—१ शब्द करना, आवाज करना।

लेला दीप्तौ (११।७, प०, लेलायति) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ शोभित होना, शोभा पाना।

लोकृ दर्शने (१।६२, आ०, लोकते) १ देखना।

लोकृ भासार्थः भाषार्थो वा (१०। २२३, उ० लोकयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ भाषण करना, बोलना।

लोचृ दर्शने(१।६८, आ०, लोचते) १ देखना।

लोचृ भासार्थः भाषार्थो वा(१०। २२३, उ०, लोचयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ भाषण करना, बोलना। आ—१ विचार करना, मनन करना।

लोट पूर्वभावे स्वप्ने च (११।६, प०. लोटयति) १ पहिले होना, सोना। **धौर्त्ये च**—जुवा खेलना।

लोडृ उन्माने (१।२४६, प०, लोडति) १ मूर्ख होना, पागल होना, उन्मत्त होना।

लोष्ट संघाते (१।१५८, आ०, लोष्टते) १ एकत्र करना, ढेर करना, राशि करना।

व

वकि (वङ्क्) कौटिल्ये गतौ च (१।६६, ७४, आ०, वङ्कते) १ वक्र होना, टेढ़ा होना, दुष्टता करना, नमना. २ वक्र करना, टेढ़ा करना, दुष्टता करना, नमाना. ३ टेढ़ा जाना।

वक्ष रोषे संघाते च (१।४४३, प०, वक्षति) १ क्रोध करना, गुस्सा होना. २ बटोरना, ढेर करना।

वख वखि (वङ्ख्) गत्यर्थाः (१।८८, प०, वखति, वङ्खति) १ जाना।

वगि (वङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, वङ्गति) १ जाना. २ लंगड़ाना।

वघि (वङ्घ्) गत्याक्षेपे (१।७६, आ०, वङ्घते) १ जाना. २ दोष लगाना, निन्दा करना. ३ प्रारम्भ करना, शुरु करना ।

वच परिभाषणे (२।५६, प०, वक्ति; १०।२६६, उ०, वाचयति, ते, वचति[1]) १ बोलना, कहना. २ समझाना, जनाना. ३ पढ़ना, अध्ययन करना । प्र—१ बोलने का प्रारम्भ करना ।

वज गतौ (१।१५४, प०, वजति) १ जाना ।

वज मार्गसंस्कारगत्योः (१०।६६ क्षीरतर०, उ०, वाजयति, ते) १ जाना. २ सिद्ध करना, तैयार करना. ३ बाण में पङ्ख लगा के तैयार करना ।

वञ्चु गत्यर्थः (१।११६, प०, वञ्चति) १ जाना ।

वञ्चु प्रलम्भने (१०।१७२, आ०, वञ्चयते, वञ्चते[2]) १ ठगना, फंसाना, प्रतारणा करना ।

वट वेष्टने (१।१९६, प०, वटति) १ घेरना, घेर लेना. बांधना, गूंथना, बटना, एकत्र करना ।

वट परिभाषणे (१।५२६, प०, वटति) १ बकना, बकवाद करना ।

वट ग्रन्थे (१०।२८३, उ०, वटयति, ते) बटना, गूंथना ।

वट विभाजने (१०।३४६, उ०, वटयति, ते) १ विभाग करना, अलग अलग करना ।

वटि (वण्ट्) प्रकाशने (१०।३४८, उ०, वण्टयति, ते) १ प्रकाशित होना, प्रकट होना ।

वटि (वण्ट्) विभाजने (१०।३४८, उ०, वण्टयति, ते, वण्टति[3]) १ पृथक् करना, अलग करना, हिस्सा करना, बांटना ।

वठ स्थौल्ये (१।२२३, प०, वठति) १ शक्तिवान् होना, स्थूल होना, मोटा होना ।

वठि (वण्ठ्) एकचर्यायाम् (१।१६२, आ०, वण्ठते) १ अकेला जाना ।

वठि (वण्ठ्) विभाजने (१०।५४, उ०, वण्ठयति, ते, वण्ठति[3]) १ विभाग करना, बांटना ।

वडि (वण्ड्) विभाजने (१।१७१, आ०, वण्डते; १०।५५, उ०, वण्डयति, ते, वण्डति[3]) १ विभक्त करना, बांटना, अलग अलग करना ।

वण शब्दार्थ (१।३०३, प०, वणति) १ शब्द करना ।

वद व्यक्तायां वाचि (१।७३५, वदति,[4] **सन्देशवचने**—१०।२६८,

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप् । २. द्र० सायणीया धातुवृत्तिः ।
३. इदित् होने से पक्ष में शप् । ४. अष्टा० १।३।४७-५०, ७३ से अर्थ विशेष में कहीं आत्मनेपद, कहीं उभयपद का विधान किया है ।

उ०, वादयति, ते, वदति) १ कहना, स्पष्ट कहना. २ समझाना। अनु—(आ०) १ अनन्तर बोलना, साथ बोलना, पीछे से बोलना। अप—(उ०) १ निन्दा करना, अपकार कारक भाषण करना। अभि—(प०) १ सत्कार पूर्वक अभिनन्दन करना, नमस्कार करना। उप—(आ०) १ समझा कर कहना। निर्—(प०) १ स्वच्छ बोलना, साफ कहना। परि—(प०) १ विरुद्ध बोलना। प्र—(प०) १ चार आदमियों के सामने बोलना, पट्कर्णी करना। प्रति—(प०) १ उत्तर देना, जवाब देना। वि—(आ०) १ वाद विवाद करना, विरुद्ध पक्ष की बात करना, बहस करना। विप्र—(उ०) १ विप्रलाप करना, बकवाद करना, निष्ठुर बोलना। विसम्—(प०) १ वचन भंग करना, कहने के अनुकूल न करना। सम्प्र—(आ०) १ एकत्र होकर स्पष्ट कहना। (प०) १ सभी का एक साथ स्पष्ट बोलना।

वदि (वन्द्) अभिवादन स्तुत्योः (१।१०, आ०, वन्दते) १ सत्कार पूर्वक कुशल प्रश्न पूछना. २ प्रशंसा करना, स्तुति करना. ३ वन्दना, वन्दन करना।

वन शब्दे संभक्तौ (१।३१२, ३१३, प०. वनति; १०, कत्राचित्कः, प०, वनयति) १ शब्द करना. २ सेवा करना, चाकरी करना. ३ सहायता करना. ४ आपद्ग्रस्त होना।

वनु याचने (८।८, उ०, वनुते, वनोति) १ याचना करना, मांगना। **णिच्**—(१।५४४ मित्, उ०, वनयति, ते) १ दुःख देना. २ कोई धन्धा करना, उद्योग करना।

वप बीजसन्ताने छेदने च (१।७२९, उ०, वपति, ते) १ बीज बोना, बोना. २ उत्पन्न करना, पैदा करना. ३ अन्नादि काटना. ४ हजामत करना।

वभ्र गत्यर्थः (१।३७५, प०, वभ्रति) १ जाना, स्थानान्तर करना।

वम उद्गिरणे (१।५८८, प०, वमति) १ कै होना, वमन होना।

वय गतौ (१।३२०, आ० वयते) १ जाना, स्थानान्तर करना।

वर ईप्सायाम् (१०।२८०, उ०, वरयति, ते) १ इच्छा करना, चाहना, आशा करना।

वरण गतौ (११।२१, प०, वरर्णति) १ जाना।

वर्च दीप्तौ (१।९६, आ०, वर्चते) १ प्रकाशित होना, चमकना।

वर्ण प्रेरणे वर्णने च (१०।१९, २०, उ०, वर्णयति, ते) १ आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना. २ रंग देना, रंगना।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप्।

वर्ण क्रियाविस्तारगुणवचनेषु (१०।३३५, उ०, वर्णयति, ते) १ वर्णन करना, बखानना. २ विस्तृत करना, फैलाना. ३ प्रशंसा करना. ४ चमकना, प्रकाशित होना।

वर्ध छेदनपूरणयोः (१०।१२२, उ०, वर्धयति, ते) १ काटना[1], चीरना. २ भरना, पूर्ण करना।

वर्ष स्नेहने (१।४०८, आ०, वर्षते) १ गीला होना, भीगना।

वर्ह परिभाषणहिंसाऽऽच्छादनेषु (१।४२६, आ०, वर्हते) १ बोलना, कहना. २ मार डालना या दुःख देना. ३ आच्छादित करना, ढकना।

वर्ह भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, वर्हयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना. ३ स्मरण करना, याद करना।

वल संवरणे संचलने च (१।३३१, आ०, वलते) १ आच्छादित करना, ढकना. २ घेरना. ३ जाना।

वल्क परिभाषणे (१०।३८, उ०, वल्कयति, ते) १ बोलना।

वल्गु गत्यर्थः (१।८८, प०, वल्गति) १ जाना, फुदकते हुए चलना।

वल्गु पूजामाधुर्ययोः (११।३, प०, वल्गूयति) १ पूजा करना, सम्मान करना. २ मीठा बोलना।

वल्भ भोजने (१।२७४, आ०, वल्भते) १ खाना, भक्षण करना।

वल्यूल लवनपवनयोः (१०।३०६, उ०, पाठा०[2], वल्यूलयति, ते) १ स्वच्छ करना. २ कतरना, चीरना, तोड़ना. पतने च—१ गिराना[2]।

वल्ल संवरणे संचलने च (१।३३१, आ०, वल्लते) १ आच्छादित करना, ढकना. २ जाना।

वल्ह परिभाषणहिंसाऽऽच्छादनेषु (१।४२६, आ०, वल्हते) १ बोलना, कहना. २ मार डालना या पीडा करना. ३ आच्छादित करना, ढकना।

वल्ह भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, वल्हयति, ते) १ प्रकाशित होना, चमकना. २ बोलना।

वश कान्तौ (२।७२, प०, वष्टि) १ इच्छा करना, चाहना।

वष हिंसार्थः (१।४६२, प०, वषति) १ मार डालना, पीडा करना।

वष्क दर्शने (१०।३४३, उ०, वष्कयति, ते) १ देखना।

वस आच्छादने (२।१३, आ०, वस्ते) १ वस्त्र पहिरना, ओढना, पोशाक धारण करना।

वस स्नेहच्छेदापहरणेषु (१०।२१३, उ०, वासयति, ते) १ दया करना, प्रीति करना. २ मार डालना.

---

१. प्राङ् नाभिवर्धनात् पुंसो जातकर्म विधीयते। मनु २।२९॥

२. द्र० क्षीरतर० १०।२६७॥

३ कतरना, चीरना. ४ नष्ट करना, ले लेना।

वस निवासे (१।७३१, प०, वसति करना, टिकना, निवास करना। **अधि**—१ ऊपर बैठना. २ उपभोग करना, काम में लगाना। **उप**—१ उपवास करना, भूखा रहना। **नि**—१ रहना, वास करना, बाहर जाना। **सम्**—१ सहवास करना, साथ रहना, एकत्र करना।

वसु स्तम्भे (४।१०४, प०, वस्पति) १ मन से या शरीर से सीधा होना. २ निश्चल होना.।

वस्क गत्यर्थः (१।७४, आ०, वस्कते) १ जाना।

वह प्रापणे (१।७३०, उ०, वहति, ते) १ बहना, झरना, २ ढोना, ढो ले जाना।

वहि (वंह्) वृद्धौ (१।४२२, आ०, वंहते) १ बढ़ना।

वा गतिगन्धनयोः (२।४३, प०, वाति) १ जाना, पवन सा चलना। **नि**—१ नष्ट होना, पवन से बुझना. पीडा करना, दुःख देना।

वाक्षि (वाङ्क्ष्) काङ्क्षायाम् (१।४४६, प०, वाङ्क्षति) १ इच्छा करना, चाहना।

वाक्षि (वाञ्छ्) इच्छायाम् (१।१२३, प०, वाञ्छति) १ इच्छा करना, चाहना।

वाडृ आप्लाव्ये (१।१८४, आ०, वाडते) १ स्नान करना, नहाना, अङ्ग धोना।

वात सुखसेवनयोः गतौ च (१०।३०७, उ०, वातयति, ते) १ सुखी होना, आनन्द करना. २ सेवा करना, ३ जाना।

वावृतु वरणे (४।४६, आ०, वावृत्यते) १ सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना. २ ढूंढ निकालना, पसन्द करना।

वाशृ शब्दे (४।५२, आ०, वाश्यते) १ शब्द करना, आवाज करना. २ पक्षी के समान शब्द करना. ३ बुलाना, पुकारना।

वास उपसेवायाम् (१०।३०६, उ०, वासयति, ते) १ वासित करना, सुगन्धित करना, धूपित करना, धूप देना।

विचिर् (विच्) पृथग्भावे (७।५, उ०, विनक्ति, विङ्क्ते) १ पृथक् करना, अलग करना. २ पृथक् होना, अलग होना. ३ छूटना, टूटना. ४ विवेक करना, तारतम्य देखना।

विछ गतौ (६।१३२, प०, विच्छति) १ समीप जाना या आना।

विछ भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ० विच्छयति, ते) १ प्रकाशित होना. चमकना. २ बोलना, भाषण करना।

विजिर् (विज्) पृथग्भावे (३।१२, प०, वेवेक्ति) १ अलग करना या होना. २ टूटना, छूटना. ३ विवेक करना, तारतम्य देखना।

विजी भयचलनयोः (६।६, आ०, विजते, उद्विजते; ७।२२, प०, विनक्ति) १ डरना. २ डर से कम्पित होना. ३ कांपना. ४ आपद्ग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना।

विट शब्दे (१।२१०, प०, वेटति) १ शब्द करना. २ शाप देना।

वित्त समुत्सर्गे (धात्वन्तरे—१०।३५९, प०, वित्तयति) १ देना दान करना, धर्म में व्यय करना।

विथृ याचने (१।२७, आ०, वेथते) १ याचना करना, मांगना।

विद ज्ञाने (२।५७, प०, वेत्ति, वेद) १ समझना, जानना। **निर्**—१ विपद्ग्रस्त होना, दुःखी होना। **सम्**—(संवित्ते) १ ध्यान करना, मनन करना, योगाभ्यास करना।

विद सत्तायाम् (४।६०, आ०, विद्यते) १ जीना, विद्यमान होना, रहना. **निर्**—१ विरक्त होना, निर्विण्ण होना।

विद विचारणे (७।१३, आ०, विन्ते) १ मनन करना, विचार करना।

विद चेतनाख्याननिवासेषु (१०।१७७, आ०, वेदयते) १ शरीर की सुध रखना. २ समझना, जानना. ३ समझा के कहना. ४ रहना, वास करना, वसना, ५ स्थिर रहना। **नि**— **वि**— **निर्**—१ समझा के कहना। **प्रति**—१ देना, अर्पण करना।

विद्लृ लाभे (६।१४१, आ०, विन्दते) १ प्राप्त करना, सम्पादित करना। **परि**—१ बड़े भाई का विवाह होने के पहिले छोटे भाई का विवाह करना।

विल संवरणे (६।६८, प०, विलति) १ वस्त्र पहिनना, ओढना. २ छिद्र करना, चीरना।

विल क्षेपे (१०।७२, उ०, वेलयति, ते) १ उड़ाना, फैंकना, प्रेरणा करना।

विश प्रवेशने (६।१३३, प०, विशति) १ घुसना, भीतर जाना, घंसना. २ चारों ओर फैलाना। **प्र**—१ प्रवेश करना, घुस जाना! **उप**—१ बैठना, पास जाना। **अभिनि** (आ०) १ समक्ष या सामने बैठना. २ आराम करना, थकना. ३ अभिमान करना, अभिनिवेश करना। **निर्**—१ मूर्च्छित होना. २ बाहर जाना. ३ उपभोग करना, भोगना। **परि**—१ सामने धरना, उपहार देना, भेंट देना। **सम्**—१ करवट लेना, आराम करना। **सन्नि**—१ पास जाना या रहना। **समा**—१ प्रचार में लाना, रुढि में

लाना. २ समाना । नि – (आ०) १ निवेश करना, वास करना ।

विष विप्रयोगे (९।५७, प०, विष्णाति) १ उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना ।

विषु सेचने (१।४६५, प०, वेषति) १ सींचना, प्रोक्षण करना ।

विष्लृ व्याप्तौ (३।१३, उ०, वेवेष्टि, वेविष्टे) १ व्यापना, फैलना, प्रसृत होना ।

विष्क हिंसायाम् (१०।१५३, आ०, विष्कयते) १ दुःख देना, मारना ।

विस प्रेरणे (४।१०७, प०, विस्यति) १ उड़ाना, फैंकना. २ सामने रखना, सामने धरना ।

वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (२।४१, प०, वेति) १ जाना. २ व्यापना, घेरना, आक्रमण करना. ३ गर्भवती होना, गाभिन होना. ४ इच्छा करना. ५ फैंकना, भेजना, दौड़ाना. ६ खाना, भक्षण करना । **सम**—१ घेरना घेर लेना, लपेटना ।

वीज व्यजने(१०।३६६, सूत्रोदा०[1] प०, वीजयति) १ पंखा करना, पंखे से हवा करना. २ धान्य को सूप आदि से फटकना ।

वीर विक्रान्तौ (१०।३२४, उ०. वीरयति, ते) १ शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना ।

वुगि (वुङ्ग्) वर्जने (१।९१ पाठा[2], प०, वुङ्गति) १ छोड़ना, त्याग करना, वर्जित करना ।

वृ संवरणे(१।६६८. प०, वरति) १ पसन्द करना. २ नियोजित करना. ३ आच्छादित करना ।

वृक आदाने (१।७२, आ०, वर्कते) १ लेना, मान्य करना, स्वीकार करना ।

वृक्ष वरणे (१।३९९, आ०, वृक्षते) १ योजित करना. २ पसन्द करना. ३ आच्छादन करना, ढकना ।

वृङ् संभक्तौ (९।४२, आ०, वृणीते[3]) १ सेवा करना, परिचर्या करना ।

वृजी वर्जने (२।२२, आ०, वृङ्क्ते; ७।२३, प०, वृणक्ति; १०।२३६, उ०, वर्जयति, ते, वर्जति[4]) १ छोड़ना, वर्जित करना ।

वृञ वरणे (५।८, उ०, वृणोति, वृणुते; **आवरणे**—१०।२३७, उ०, वारयति,ते, वरति[4]) १ पसन्द करना, नियोजित करना. ३ नियमित करना. ४ आच्छादित करना, ढकना । **अप**—

---

१. द्र० क्षीरतर० १०।३२५ । २. द्र० क्षीरतर० १।९३ ।

३. संभक्ति संसेवा । क्षीरतर० ९।४२ ।

४. आधृषाद्वा (१०।२३०) नियम से पक्ष में शप् ।

संरक्षण करना, आच्छादन करना। आ—१ घेरना, लपेटना। नि—निर्—१ पूरा करना, समाप्त करना. २ निवारण करना। परि १ घेरना, लपेटना, आच्छादन करना. २ भरोसा करना विश्वास करना। वि—१ स्पष्ट करना या होना। सम्—१ छिपाना। समा—१ लपेटना। अप—१ छोड़ना. २ दान देना।

वृण प्रीणने (६।४२, प०, वृणति) १ आनन्द करना, उत्साह करना।

वृतु वर्तने (१।५०८, आ०, वर्तते) १ वर्तन करना, वर्ताव करना. २ रहना, होना। अति—१ जीतना, मात करना. २ आज्ञा भंग करना. ३ अतिक्रमण करना, लांघना। अनु—१ अनुसरण करना, दूसरे के समान करना. २ पीछे पीछे जाना। अप—१ लौटना। आ—१ चक्राकार घूमना, प्रदक्षिणा करना, परिक्रमा करना. २ पुनः पुनः करना। नि—१ लौटना. २ कृत्रिम से करना। निर—१ थमना, पूरा करना। परि—१ घेरना, लपेटना, आवृत करना. २ बदलना. ३ वर्चस्व करना, वर्चस्वी होना. ४ चक्राकार घूमना. ५ बढ जाना, आगे जाना. ६ लौटना, पीछे लौटना। प्र—१ काम में लगना, उद्योग करने लगना, प्रवृत्त होना। प्रति—१ जाना। वि—१ लौटना. २ चक्राकार घूमना। विनि—१ पीछे लौटना। विपरि—१ मन में भ्रम होना। समभि—१ कूद के जाना, उड़ जाना।

वृतु[1] वरणे (४।४६, आ०, वृत्यते) १ पसन्द करना, ठहराना, मुकरंर करना. २ सेवा करना, चाकरी करना।

वृतु भासार्थः भाषार्थो वा (१०। २२३, उ०, वर्तयति, ते) १ चमकना. २ बोलना।

वृधु वृद्धौ (१।५०९, आ०, वर्धते) १ बढ़ना, अधिक होना।

वृधु भासार्थः भाषार्थो वा (१०। २३२, उ०, वर्धयति, ते) १ चमकना. २ बोलना।

वृश वरणे (४।११६, प०, वृश्यति) १ पसन्द करना. २ आच्छादन करना, बढ़ना।

वृष शक्तिबन्धे (१०।१७३, आ०, वर्षयते) १ गर्भवती होना, गाभीन होना. २ अमानवी पराक्रम विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना. ३ पराक्रमी होना. ४ प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना।

वृषु सेचने हिंसासंक्लेशनयोश्च (१।४६८, ४६९, प०, वर्षति)

---

१. 'तपोऽश्वर्येवावृतुवरणे' इस संहिता पाठ में 'वा' का सम्बन्ध पूर्व धातु (तप ऐश्वर्ये वा) से होने पर 'वृतु' धातु मानी जाती है।

१ बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना. २ मार डालना या पीडा करना. ३ दुःख देना, पीडित करना ।

वृहि (वृंह्) भासार्थः भाषार्थो वा (१०।२२३, उ०, वृंहयति, ते, वृंहति[1]) १ चमकना. २ बोलना ।

वृहू उद्यमने (६।५८, प०, वृहति) १ यत्न करना ।

वृ वरणे भरणे च (६।१६, उ०, वृणाति, वृणीते) १ पसन्द करना. २ आश्रय देना, सम्भालना. ३ पालन करना ।

वृञ् वरणे (६।१५, उ०, वृणाति[2], वृणीते[2]) १ पसन्द करना, स्वीकार करना ।

वेञ् तन्तुसन्ताने (१।७३२, उ०, वयति, ते) १ बुनना. २ बटना ।

वेणृ गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु (१।६१६, उ०, वेणति, ते) १ जाना. २ समझना, जानना. ३ स्मरण करना, याद करना. ४ सारासार विचार करना, तारतम्य देखना. ५ वाद्ययन्त्र बजाना. ६ वाद्य यन्त्र हाथ में लेना ।

वेथृ याचने (१।२७, आ०, वेथते) १ याचना करना, मांगना ।

वेद धौर्त्ये स्वप्ने च (११।१०, प०, वेदयति) १ धूर्तता करना, ठगना. २ सोना, सपना देखना, ख्वाब देखना ।

वेनृ गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु (१।६१७, उ०, वेनति, ते) १ जाना. २ समझना, जानना. ३ स्मरण करना, याद करना. ४ सारासार विचार करना, तारतम्य देखना. ५ वाद्य यन्त्र बजाना. ६ वाजा हाथ में लेना ।

वेल कालोपदेशे (१०।३०५, उ०, वेलयति, ते) १ काल गणना करना, समय की गिनती करना. २ उपदेश करना, समय पर समझाना ।

वेलृ वेल्ल चलने (१।३६३, प०, वेलति, वेल्लति) १ जाना, सरकना. २ कांपना, थरथराना ।

वेवीङ् वेतिना तुल्ये (=गति व्याप्ति प्रजनकान्त्यसनस्वादनेषु (२।७०, आ०, वेवीते) १ जाना, सरकना, चलना. २ व्याप्त होना, आक्रमण करना, फैलना. ३ गर्भवती होना. ४ इच्छा करना, चाहना. ५ भेजना, फेंकना, उड़ाना. ६ खाना ।

वेष्ट वेष्टने (१।१५६, आ०, वेष्टते) १ लपेटना, घेरना

वेह्ट प्रयत्ने (१।४२८, आ०,

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) सूत्र से पक्ष में शप् ।

२. प्वादीनां ह्रस्वः (अष्टा० ७।३।८०) से ह्रस्वत्व ।

वेहते) १ यत्न करना. २ निश्चय करना, ठहराना ।

वै शोषणे (१।६५५, प०, वायति) १ शुष्क होना, सूखना ।

व्यच व्याजीकरणे (६।१२, प०, विचति) १ ठगना, फसाना ।

व्यथ भयसंचलनयोः (१।५१५, आ०, व्यथते) १ डरना. २ क्षुब्ध होना, सन्तप्त होना, दुःख भोगना ।

व्यध ताड़ने (४।७०, प०, विध्यति) १ मारना, पीटना. २ दुःख देना, पीडा करना. ३ छेदना ।

व्यय गतौ (१।६२१, उ०, व्ययति, ते) १ जाना ।

व्यय वित्तसमुत्सर्गे (१०।३५६, उ०, व्याययति, ते) १ खर्च करना, व्यय करना ।

व्युष दाहे विभागे च (४।८, १०५, प०, व्युष्यति) १ जलाना, भूनना, दग्ध करना. २ अलग करना, पृथक् करना, विभाग करना ।

व्युस विभागे (४।१०५ पाठा०, प०, व्युस्यति) १ विभाग करना, पृथक् करना ।

व्येञ् संवरणे (१।७२३, उ०, व्ययति, ते) १ आच्छादन करना, ढकना. २ सीना ।

व्रज गतौ (१।१५४, प०, व्रजति) १ घूमना, जाना, भटकना । परि— १ सन्यासी के समान घूमना या भटकना, यात्रा करना ।

व्रज संस्कारगत्योः (१०।८३, उ०, व्राजयति, ते) १ पूर्ण करना, तैयार करना, सिद्ध करना. २ जाना. घूमना ।

व्रण शब्दार्थः (१।३०३, प०, व्रणति) १ शब्द करना, आवाज करना ।

व्रण गात्रविचूर्णने (१०।३६४, उ०, व्रणयति, ते) १ क्षत करना, घाव करना, जखमी करना ।

व्रश्चू छेदने (६।११, प०, वृश्चति) १ कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना ।

व्री वरणे (६।३१, प०, व्रिणाति, व्रीणाति[1]) १ ढूंढ के निकालना, पसन्द करना, बीनना. २ आच्छादन करना, ढकना ।

व्रीङ् वृणोत्यर्थे (४।३०, आ०, व्रीयते) 'व्री' के समान अर्थ ।

व्रीड चोदने लज्जायाञ्च (४।१८, प०, व्रीडयति) १ भेजना, प्रेरित करना. २ लज्जित होना, शरमाना ।

व्रुड संवरणे (६।१०२, प०, व्रुडति) १ डूबना. २ राशि करना, ढेर करना. ३ आच्छादन करना, ढकना ।

---

१. प्वादित्वे मतभेदात् ह्रस्वत्वेऽपि मतभेदः (अष्टा० ७।३।८०) ।

व्ली वरणे (९।३४, प०, व्लिनाति, व्लीनाति[1]) १ पसन्द करना, ढूंढ निकालना, बीनना. २ आच्छादन करना, उढ़ाना. ३ जाना, सरकना ।

श

शंसु स्तुतौ (१।४८३, प०, शंसति) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ अभिशंमन करना । **अभि**—१ मिथ्यापवाद लगाना । **आ**—१ चाहना. २ बोलना । **प्र**—१ प्रशंसा करना, स्तुति करना ।

शक मर्षणे (४।७६, उ०, शक्यति, ते) १ सहना, सहन करना ।

शकि(शङ्क्)शङ्कायाम् (१।६७, आ०, शङ्कते) १ शंका करना, संशय करना. २ डरना, घबराना । **आ**—१ डरना, घबराना ।

शक्लृ शक्तौ (५।१६, प०, शक्नोति) १ शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना ।

शच व्यक्तायां वाचि (१।६६, आ०, शचते) १ स्पष्ट बोलना ।

शट रुजोविशरणगत्यवसादनेषु (१।१९५, प०, शटति) १ रोगी होना, बीमार होना. २ छेद करना, छेदना ३ जाना, चलना. ४ थकना, श्रान्त होना, खिन्न होना, उदास होना ।

शठ कैतवे हिंसासंक्लेशनयोश्च (१।२३१, प०, शठति) १ ठगना. २ मार डालना या दुःख देना. ३ क्लेश, दुःख या पीड़ा सहन करना ।

शठ असंस्कारगत्योः (१०।३३, उ०, शाठयति, ते) १ ठीक न बनाना. २ पूरा न करना, समाप्त न करना, आधा ही छोड़ना. ३ जाना ।

शठ असम्यगवभाषणे (१०।२८२, शठयति, ते) १ दुर्भाषण करना, दुर्वचन कहना. २ कटुवचन कहना. ३ मौन धारण करना, नहीं बोलना, चुपके रहना, चुप होना ।

शठ श्लाघायाम् (१०।१६०, आ०, शाठयते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना ।

शडि (शण्ड्) रुजायां संघाते च (१।१७८, आ०, शण्डते) १ रोगी होना, बीमार होना. २ अपकार करना, दुःख देना. ३ बटोरना, एकत्र करना, ढेर करना ।

शण दाने गतौ च (१।५४०, प०, शणति) १ देना, दान करना. २ जाना ।

शद्लृ शातने (१।५६४; ६।१३७, आ०, शीयते[2]) १ जीर्ण होना, धीरे धीरे कम होना, मुरझाना. २ गिरना. ३ जाना. ४ नीचे फैंकना, नीचे गिराना ।

शप आक्रोशे (१।७२६, उ०, शपति, ते; ४।५७, उ०, शप्यति, ते) १ शपथ करना, सौगन्ध खाना,

---

१. प्वादित्वे मतभेदात, ह्रस्वत्वेऽपि मतभेदः (अष्टा० ७।३।८०) ।

२. पाघ्राध्मास्था० (अ० ७।३।७८) से शद् को शीय ।

प्रतिज्ञा करना. २ शाप देना, गाली देना।

शब्द आविष्कारे भाषणे च (१०।१८३, प०, शब्दयति) १ शब्द करना, भाषण करना. २ प्रकट करना। प्र—प्रति—वि—१ स्पष्ट बोलना. २ वचन देना।

शम आलोचने (१०।१६४, आ०, [1]शामयते) १ प्रसिद्ध करना, जाहिर करना, स्पष्टता से दिखाना।

शमु उपशमे (४।६१, प० शाम्यति) १ सान्त्वना करना, शमन करना. २ शान्त होना, ठण्डा होना. ३ मन स्वाधीन रखना, स्वस्थ होना, क्षुब्ध नहीं होना। णिच्—(शामयते) १ सूक्ष्मता से देखना, दर्शन से अन्यत्र—(शमयति) १ शान्त करना, ठण्डा करना। उप—१ शान्त करना, उपशमन करना। नि—१ सुनना. प्रतिबन्ध करना, रोकना। प्र—शान्त होना, स्थिर होना. २ नष्ट करना।

शम्ब संबन्धने (१०।२५, उ०, शम्बयति, ते) १ ढेर करना, राशि करना, बटोरना, एकत्र करना. २ जोड़ना।

शर्ब गतौ (१।२८८, प०, शर्बति) १ जाना।

शर्व हिंसायाम् (१।३८६, प०, शर्वति) १ क्षत करना, जखम करना, घाव करना. २ मार डालना।

शल चलनसंवरणयोः (१।३३०, आ०, शलते) १ जाना, चुभना, सलना. २ आच्छादित करना, ढकना।

शल गतौ (१।५८४, प०, शलति) १ जाना. २ जल्दी जाना।

शल श्लाघायाम् (१०।१६० पाठा०, उ०, शालयति, ते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना।

शल्भ कत्थने (१।२७३, आ०, शल्भते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ आत्मश्लाघा करना, शेखी मारना।

शव गतौ (१।४८०, प०, शवति) १ जाना. २ समीप जाना या आना. ३ बलना, फिरना. ४ बदले में देना।

शश प्लुतगतौ (१।४८१, प०, शशति) १ फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना।

शष हिंसायाम् (१।४६२, प०, शषति) १ मारना, दुःख देना, पीडा करना।

शसि इच्छायाम् (आङ्पूर्वः, १।४१६, आ०, आशंसते) १ चाहना, इच्छा करना। प्र—प्रशंसा करना।

---

१. नान्ये मितोऽहेतौ (१०।६७) वचन से इस 'शम' की मित्संज्ञा नहीं होती। शमु उपशमे (४।६४) की 'शमोऽदर्शने' (१।५६४) से दर्शन से अन्यत्र हेतुमण्णिच् में मित्संज्ञा होती है।

शसु हिंसायाम् (१।७८२, प०, शसति) १ मारना, दुःख देना। अभि — १ विनति करना, गिड़गिड़ाना।

शाखृ व्याप्तौ (१।८७, प०, शाखति) १ शाखा फैलना, डालें पैदा होना।

शाड़ृ श्लाघायाम् (१।११८६, आ०, शाडते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ शेखी बघारना. ३ तैरना, तिरना, पैरना।

शान तेजने (१।७२०, उ०, शीशांसति[1], ते) १ तेज करना, पैना करना।

शान्त्व सामप्रयोगे (१०।३७ पाठा०, प०, शान्त्वयति) १ सान्त्वना करना, समाधान करना।

शार दौर्बल्ये (१०।२९३ पाठा०, प०, शारयति) १ निर्बल होना या करना, असक्त होना या करना।

शासु अनुशिष्टौ (२।६८, प०, शास्ति) १ आज्ञा करना. २ कहना, बोध करना. ३ अधिकार करना, शासन करना, शासक होना, प्रभु होना।

शासु इच्छायाम् (आङ्पूर्वः २।१२, आ०, आशास्ते) १ आशीर्वाद देना, भला चाहना. २ आशा करना।

शिक्ष विद्योपादाने (१।४००, आ०, शिक्षते) १ अभ्यास करना, अध्ययन करना, सीखना।

शिखि (शिङ्ख्) गत्यर्थः (१।८६, प०, शिङ्खति) १ जाना।

शिघि (शिङ्घ्) आघ्राणे (१।९५, प०, शिङ्घति) १ सूंघना, आघ्राण करना।

शिजि (शिञ्ज्) अव्यक्ते शब्दे (२।१६, आ०, शिङ्क्ते) १ अस्पष्ट शब्द बोलना. २ भुनभुनाना, ठनठनाना, खनखन आदि आवाज होना।

शिञ् निशाने (५।३, उ०, शिनोति, शिनुते) १ तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना।

शिट अनादरे (१।१९८, प०, शेटति) १ अपमान करना, तिरस्कार करना।

शिल उञ्छे (६।७२, प०, शिलति) १ बीनना, उञ्छन करना, एक एक करके बीनना।

शिष् हिंसार्थः (१।४६२, प०, शेषति) १ दुःख देना, मारना।

शिष असर्वोपयोगे (१०।२४१, उ०, शेषयति, ते, शेषति[2]) १ शेष रखना, बचा रखना, पूरा खर्च न करना। वि—१ अधिक होना, ज्यादा होना।

१, मानवधदानशानभ्यो० (अष्टा० ३।१।६) से निशान=तीक्ष्ण करना अर्थ में सन्। २. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप्।

शिष्लृ विशेषणे (७।१४, प०, विशिनष्टि) १ पृथक् पृथक् करना, अलग करना. २ गुण दोष दिखाना, भिन्नता दिखाना, विशेषता बताना।

शीक आमर्षणे (१०।२५३, उ०, शीकयति, ते, शीकति[1]) १ छूना, स्पर्श करना. २ शान्त होना, सहना।

शीक भासार्थः भाषार्थो वा (१०। २२३, उ०, शीकयति, ते) १ चमकना, प्रकाशित होना. २ बोलना, भाषण करना।

शीकृ सेचने (१।६१, आ०, शीकते) १ गीला करना, छींटा मारना. २ भिगोना, सिंचाई करना।

शीङ् स्वप्ने (२।२५, आ०, शेते) १ सोना, शयन करना। **अति**— १ अतिशय होना, अधिक होना। **अधि**—१ निवास करना। **सम्**—**वि**—१ शंका करना, सन्देह करना।

शीभृ कत्थने (१।२६७, आ०, शीभते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ शेखी मारना, आत्म-स्तुति करना।

शील समाधौ (१।३५०, प०, शीलति) १ मनन करना, मन की एकाग्रता करना. २ अर्चा करना।

शील उपधारणे[2] (आधृषादौ - १० वात्तिकः, उ०, शीलयति, ते, शीलति[1]) १ अभ्यास करना, आदत होना।

शील उपधारणे[3] (१०।३०३, उ०, शीलयति, ते) १ धारण करना, पहिनना. २ रखना, पास रखना।

शुच शोके (१।१११, प०, शोचति) १ दुःख मानना, शोक करना।

शुचिर् (शुच्) पूतीभावे (४।५४, उ०, शुच्यति, ते) १ स्नान करना, शुद्ध होना. २ आर्द्र होना, गीला होना. ३ बदबू आना. ४ मर्दन करना, मथना. ५ क्षत करना, जखम करना, घाव करना।

शुच्य अभिषवे (१।३४३, प०, शुच्यति) १ स्नान करना. २ सार निकालना, अर्क खींचना. ३ मथना. ४ छानना. ५ पीडा करना, दुःख देना।

शुठ प्रतिघाते (१।२३२, प०, शोठति) १ रोकना, रोक रखना. २ गमन में विघ्न होना. ३ लंगड़ाना।

शुठ आलस्ये (१०।११३, उ०, शोठयति, ते) १ अलसाना, आलस्य करना।

शुठि (शुण्ठ्) प्रतिघाते शोषणे च (१।२३३, २३६, प०, शुण्ठति) १ रोकना, रोक रखना. २ जाने में विघ्न होना. ३ लंगड़ाना. ४ सूखना, सुखाना।

---

१. आधृषाद्वा (१०.२३०) से पक्ष में शप्।

२. उपधारणमभ्यासः, क्षीरत०। ३. उपधारणं परिचयः क्षीरत०।

शुंठ (शुण्ठ्) शोषणे (१०।११४, उ०, शुण्ठयति, ते) १ सूखना, सुखाना, शोषण करना।

शुध शौचे (४।८०, प०, शुध्यति) १ शुद्ध होना, पवित्र होना।

शुन गतौ (६।४८, प०, शुनति) १ जाना।

शुन्ध शुद्धौ (१।६०, प०, शुन्धति) १ शुद्ध होना, पवित्र होना. २ शुद्ध करना, पवित्र करना।

शुन्ध शौचकर्मणि (१०।२५६, उ०, शुन्धयति, ते; शुन्धति[1])१ शुद्ध होना. २ शुद्ध करना।

शुभ दीप्तौ (१।५०१, आ०, शोभते) १ चमकना, प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना. २ शोभा पाना।

शुभ शोभार्थे (६।३३, प०, शुभति) १ सुन्दर होना, शोभायमान होना, खूबसूरत होना।

शुभ शुम्भ भाषणे हिंसायाञ्च (१।२६५, प०, शोभति, शुम्भति) १ भाषण करना, बोलना. २ मार डालना या दुःख देना।

शुम्भ शोभार्थे (६।३३, प०, शुम्भति) १ चमकना, प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना. २ सुन्दर होना, खूबसूरत होना।

शुल्क अतिस्पर्शने (१०।८४, उ०, शुल्कयति, ते) १ शुल्क=कर लगाना, उत्पत्ति कर देना. २ उत्पन्न करना, पैदा करना. ३ कहना. ४ प्रीति करना, मिलाना. ५ छोड़ देना, मुक्त कर देना।

शुल्व माने (१०।७८, प०, शुल्वयति) १ नापना. २ गिनना. ३ तोलना. ४ उत्पन्न करना।

शुष शोषणे (४।७२, प०, शुष्यति) १ शुष्क होना, सूखना।

शूर विक्रान्तौ (१०।३२४, आ०, शूरयते; ११ क्वाचित्कः, आ०, शूर्यते) १ पराक्रमी होना, शूरवीर होना, बहादुरी दिखाना।

शूरी हिंसास्तम्भनयोः (४।४६, आ०, शूर्यते) १ मार डालना, दुःख देना, पीडा करना. २ मूर्ख होना, पागल होना. ३ निश्चल होना, स्तब्ध होना।

शूर्प माने (१०।७६, उ०, शूर्पयति, ते) १ नापना, तोल करना, गिनना।

शूल रुजायां संघाते[2] च (१।३५३, प०, शूलति) १ पेट दुःखना, पीडा होना, बीमार होना. २ शूल पर चढाना, शूली देना।

---

१. आधृषाद्वा (२।२३०) से पक्ष में शप्।

२. संघातशब्दोऽत्र सम्यग्घनने वर्तते।

शृध प्रसवे (१।४५६, प०, शृधति) १ जनना, उत्पन्न करना, प्रसूत होना।

शृधु शब्दकुत्सायाम् (१।५१०, प०, शर्धति) १ अधो वायु छोड़ना।

शृधु उन्दने (१।६१३, उ०, शर्धति, ते) १ गीला होना, आर्द्र होना।

शृधु प्रसहने (१०।२०२, उ०, शर्धयति, ते) १ सहना, सहन करना. २ पराभव करना, जीतना. ३ अपमान करना, अनादर करना।

शॄ हिंसायाम् (९।१७, प०, शृणाति) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना। वि—(विशीर्यते) १ दुःखी होना, पीडित होना. २ गलित होना, गिर पड़ना।

शेलृ गतौ (१।३६४, प०, शेलति) १ जाना, सरकना. २ कांपना, थरथराना।

शेवृ सेवने (१।३३८, आ०, शेवते) १ सेवा करना, नौकरी करना।

शै पाके (१।६५४, प०, शायति) १ पक्व होना, पकना. २ पक्व करना, पकाना।

शो तनूकरणे (४।३६, प०, श्यति) १ तीक्ष्ण करना, पैना करना, पैनाना, शान धरना, छील के पैना करना।

शोणृ वर्णगत्योः (१।३०६, प०, शोणति) १ लाल होना. २ जाना।

शौटृ गर्वे (१।१८७, प०, शौटति) १ गर्व करना, अभिमान करना, अहङ्कार करना, शेखी बघारना।

श्चुतिर् (श्चुत्) क्षरणे (१।३४ पाठा०, प०, श्चोतति) १ टपकना, झरना. २ सींचना, प्रोक्षण करना, छींटा देना।

श्मील निमेषणे (१।३४७, प०, श्मीलति) १ पलक लगाना, आंखें मींचना. २ नेत्र स्फुरण होना।

श्यैङ् गतौ (१।६६०, आ०, श्यायते) १ जाना।

श्रकि (श्रङ्क्) गत्यर्थः (१।६६, आ०, श्रङ्कते) १ जाना।

श्रगि (श्रङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, श्रङ्गति) १ जाना।

श्रण दाने (१।५४०, प०, श्रणति; १०।४७, उ०, श्राणयति, ते) १ देना, दान करना। वि–१ देना।

श्रथ हिंसार्थः (१।५४०, प०, श्रथति) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना।

श्रथ प्रयत्ने प्रस्थाने च (१०।१४, उ०, श्राथयति ते) १ प्रयत्न करना. २ जाना।

श्रथ मोक्षणे हिंसायाञ्च (१०।२४६, उ०, श्राथयति, ते; श्रथति[1])

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप्।

१ मुक्त करना, छोड़ना. २ मारना, पीडा देना. ३ बन्धन करना, बांधना, जकड़ना ।

श्रथ दौर्बल्ये (१०।२९३, अदन्तः उ०, श्रथयति, ते) १ निर्बल होना, शक्तिहीन होना ।

श्रथि (श्रन्थ्) शैथिल्ये (१।२८, आ०, श्रन्थते) १ शिथिल करना, ढीला करना. २ शिथिल होना, ढीला होना ।

श्रन्थ संदर्भे (९।४५, प०, श्रथ्नाति; १०, उ०, श्रन्थयति, ते, श्रन्थति[1]) १ रचना करना, क्रम से रखना. २ गूंथना, गुम्फित करना ।

श्रमु तपसि खेदे च (४।९४, प०, श्राम्यति) १ थकना, श्रान्त होना. २ पीडित होना, दुःखित होना. ३ तपश्चर्या करना, व्रत करना, चान्द्रायणादि प्रायश्चित्त करना ।

श्रम्भु प्रमादे (१।२७७, आ०, श्रम्भते) १ दुलक्ष्य करना, चूकना, गलती करना । वि–विश्वास करना ।

श्रा पाके (२।४९, प०, श्राति) १ पकाना, राधना, उबालना. २ पसीजना, पसीना निकालना ।

श्रिञ् सेवायाम् (१।६३८, उ०, श्रयति, ते) १ सेवा करना, चाकरी करना । आ—१ आश्रय करना. २ समीप जाना या रहना. ३ उपयोग करना, काम में लाना । अपा—१ छोड़ना । उत्—समुत्—१ ऊंचा होना । व्यपा—१ साष्टाङ्ग नमस्कार करना, जमीन पर गिरना. २ विश्वास करना, भरोसा रखना ।

श्रिषु दाहे (१।४६७, प०, श्रेषति) १ जलाना, भूनना, भूंजना ।

श्रीञ् पाके (९।३, उ०, श्रीणाति, श्रीणीते) १ पकाना, रांधना ।

श्रु श्रवणे (१।६७५, प०, श्रृणोति[2]; वेदे—श्रवति) १ सुनना, श्रवण करना. २ जाना । प्रतिसंशृणुते—१ कबूल करना, मान्य करना । विशृणोति—१ कीर्तिमान् होना, प्रख्यात होना ।

श्रै पाके (१।६५४, प०, श्रायति) १ पकाना, रांधना. २ पसीना निकालना. ३ पिघलाना, पतला करना, द्रव करना ।

श्रोणृ संघाते (१।३०७, प०, श्रोणति) १ एकत्र करना, सञ्चय करना, बटोरना, ढेर करना ।

श्लकि (श्लङ्क्) गत्यर्थः (१।९९, आ०, श्लङ्कते) १ जाना ।

श्लगि (श्लङ्ग्) गत्यर्थः (१।८८, प०, श्लङ्गति) १ जाना ।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप् ।

२. श्रुवः शृ च (अष्टा० ३।१।७४) से 'शृ' आदेश और 'श्नु' विकरण ।

श्लथ हिंसार्थ: (१।५४२, प०, श्लथति) १ शिथिल होना, ढ़ीला होना।

श्लाखृ व्याप्तौ (१।८७, प०, श्लाखति) १ व्याप्त होना, फैलना।

श्लाघृ कत्थने (१।८०, आ०, श्लाघते) १ प्रशंसा करना, आत्म-स्तुति करना. २ फुसलाना।

श्लिष आलिङ्गने श्लेषणे च (४ ७५, प०, श्लिष्यति; १०।४३, उ०, श्लेषयति, ते) १ आलिङ्गन करना, गले लगाना. २ सटे रहना, चिपके रहना. ३ एका करना, मिलाप करना। वि—विश्लेपण करना।

श्लिषु दाहे (१।४६७, प०, श्लेषति) १ दग्ध करना, जलाना।

श्लोकृ संघाते (१।६३, आ०, श्लोकते) १ श्लोक बनाना, कविता करना. २ रचना करना।

श्लोणृ संघाते (१।३०८, प०, श्लोणति) एकत्र करना, बटोरना, ढेर करना।

श्वकि (श्वङ्क्) गत्यर्थ: (१।७४, आ०, श्वङ्कते) १ जाना, सरकना।

श्वच श्वचि (श्वञ्च्) गतौ (१।१००, आ०, श्वचते, श्वञ्चते) १ जाना, सरकना।

श्वज गतौ (१ क्वाचित्क:, आ०, श्वजते) १ जाना, सरकना।

श्वठ सम्यगवभाषणे (अभाषणे) (१०।२८२, अदन्त:, उ०, श्वठयति, ते) १ आशीर्वाद देना, शुभ बोलना, वर देना २ अयोग्य वचन बोलना, अयथार्थ बोलना, अयथार्थ भाषण करना. ३ चुप रहना, नहीं बोलना।

श्वठ श्वठि (श्वण्ठ्) असंस्कार-गत्यो: (१०।३३, उ०, श्वाठयति. ते, श्वण्ठयति, ते) १ पूरा न करना, समाप्त न करना. २ असंस्कृत रखना. ३ जाना, सरकना, चलना।

श्वभ्र गत्याम् (१०।८६, उ०, श्वभ्रयति, ते) १ जाना, छेदना। कृच्छ्रजीवने—१ दरिद्र दशा में रहना, विपत्ति में रहना।

श्वर्त गत्याम् (१०।८८, उ०, श्वर्तयति. ते) १ जाना। **कृच्छ्र-जीवने**—१ दरिद्र दशा में रहना।

श्वल श्वल्ल आशुगमने (१।३७०, प०, श्वलति, श्वल्लति) १ दौड़ना, भागना. तेज चलना।

श्वल्क परिभाषणे (१०।३८, उ०, श्वल्कयति, ते) १ बोलना, भाषण करना।

श्वस प्राणने (२।६२, प०, श्वसिति) १ श्वांस लेना, श्वासो-च्छ्वास करना. २ जीना, जीते रहना। आ—१ समाधान करना, आश्वासन करना। उन्—१ विकसित होना,

प्रफुल्लित होना, खिलना. २ सान्त्वना करना, समाधान करना। निर्— १ मरना, दम छोड़ना. २ सांस भरना। वि –१ विश्वास करना, भरोसा रखना।

श्वि गतिवृद्धयो: (१।७३६, प०, श्वयति) १ जाना, समीप जाना. २ बढ़ना।

श्विता वर्णे (१।४६४, आ०, श्वेतते) १ सफेद होना, शुभ्र होना।

श्विदि (श्वन्द्) श्वैत्ये (१।६, आ०, श्विन्दते) १ सफेद होना, शुभ्र होना।

ष

ष्ठिवु निरसने (१।३७७, प०, ष्ठीवति; ४।४, प०, ष्ठीव्यति) १ थूकना, पानी आदि को मुंह से फैंकना।

ष्वष्क गत्यर्थ: (१।७४, आ०, ष्वष्कते) १ जाना, गमन करना।

कार्य विशेष के लिये पढ़ी गई षकारादि धातुओं को प्रयोग अवस्था में धात्वादे: ष: स: (अष्टा० ६।१।६२) से 'सकार' आदेश हो जाता है। अत: हमने प्रयोग की दृष्टि से षकारादि का निर्देश भी सकारादि धातुओं में किया है। पाठक षकारादि धातुओं को उन के सम्मुख निर्दिष्ट सकारादि धातुओं में देखें। षकारादि धातु ये है—

षगे	(भ्वा०)	द्र०	सगे	षर्ज	(भ्वा०)	द्र०	सर्ज
षघ	(स्वा०)	"	सघ	षर्ब	"	"	सर्ब
षच	(भ्वा०)	"	सच	षर्व	"	"	सर्व
षञ्ज	"	"	सञ्ज	षल	"	"	सल
षट्	"	"	सट	षस	(अ०)	"	सस
षट्ट	(चु०)	"	सट्ट	षस्ज	(भ्वा०)	"	सस्ज
षण	(भ्वा०)	"	सन	षस्ति	(अ०)	"	सस्ति
षणु	(त०)	"	सनु	षह	(भ्वा०)	"	सह
षद	(चु०)	"	सद	"	(दि०)	"	"
षद्लृ	(भ्वा०)	"	सद्लृ	"	(चु०)	"	"
"	(तु०)	"	"	षान्त्व	"	"	सान्त्व
षप	(भ्वा०)	"	सप	षिच	(तु०)	"	सिच
षम	"	"	सम	षिञ्	(स्वा०)	"	सिञ्
षम्ब	(चु०)	"	सम्ब	"	(क्र्या०)	"	"

षिट	(भ्वा०)	द्र०	सिट
षिधु	"	"	सिधु
"	(दि०)	"	"
षिधू	(भ्वा०)	"	सिधू
षिभु	"	"	सिभु
षिम्भु	"	"	सिम्भु
षिल	(तु०)	"	सिल
षिवु	(दि०)	"	सिवु
षु	(भ्वा०)	"	सु
षु	(अ०)	"	सु
षुञ्	(स्वा०)	"	सुञ्
षुट्ट	(चु०)	"	सुट्ट
षुर	(तु०)	"	सुर
षुह	(दि०)	"	सुह
षू	(तु०)	"	सू
षूङ्	(अ०)	"	सूङ्
"	(दि०)	"	"
षूद	(भ्वा०)	"	सूद
"	(चु०)	"	"
षृभु	(भ्वा०)	"	सृभु
षृम्भु	"	"	सृम्भु
षेलृ	"	"	सेलृ
षेवृ	"	"	सेवृ
षैं	"	"	सैं
षो	(दि०)	"	सो
ष्टक	(भ्वा०)	"	स्तक
ष्टगे	"	"	स्तगे
ष्टन	"	"	स्तन
ष्टभि	"	"	स्तभि
ष्टम	"	"	स्तम
ष्टिघ	(स्वा०)	"	स्तिघ

ष्टिपृ	(भ्वा०)	द्र०	स्तिपृ
ष्टिम	(दि०)	"	स्तिम
ष्टीम	"	"	स्तीम
ष्टुच	(भ्वा०)	"	स्तुच
ष्टुञ्	(अ०)	"	स्तुञ्
ष्टुप	(चु०)	"	स्तुप
ष्टुभु	(भ्वा०)	"	स्तुभु
ष्टृक्ष	"	"	स्तृक्ष
ष्टेपृ	"	"	स्तेपृ
ष्टैं	"	"	स्तैं
ष्ट्यैं	"	"	स्त्यैं
ष्ठल	"	"	स्थल
ष्ठा	"	"	स्था
ष्णसु	(दि०)	"	स्नसु
ष्णा	(अ०)	"	स्ना
ष्णिह	(दि०)	"	स्निह
"	(चु०)	"	"
ष्णु	(अ०)	"	स्नु
ष्णुसु	(दि०)	"	स्नुसु
ष्णुह	"	"	स्नुह
ष्णैं	(भ्वा०)	"	स्नैं
ष्मिङ्	"	"	स्मिङ्
"	(चु०)	"	"
ष्वञ्ज	(भ्वा०)	"	स्वञ्ज
ष्वद	"	"	स्वद
"	(चु०)	"	"
ष्वप	(अ०)	"	स्वप्
ष्विदा	(भ्वा०)	"	स्विदा
"	"	"	"
"	(दि०)	"	"

स

टिप्पणी—इस प्रकरण में उन मूर्धन्य षकारोपदेश धातुओं का भी निर्देश किया है, जिन्हें प्रयोग काल में सकार आदेश हो जाता है। ऐसी धातुओं का मूल रूप षकार के प्रकरण में देखें। वहां मूल षकारादि और प्रायोगिक सकारादि दोनों रूप दिये हैं।

सगे संवरणे (१।५३८, प०, सगति) १ आच्छादन करना।

सघ हिंसायाम् (५।२१. प०, सघ्नोति) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना।

सङ्केत आमन्त्रणे (१०।३१६, उ०, सङ्केतयति, ते) १ बुलाना, आमन्त्रण करना. २ बुद्धि से विचार कर कहना, सलाह देना. ३ समय नियत करना।

सङ्ग्राम युद्धे (१०।३५०, आ०, सङ्ग्रामयते) १ युद्ध करना, लड़ाई करना।

सच सेचने सेवने च (१।१६७, आ०, सचते) १ आर्द्र करना, गीला करना, छींटा मारना, सींचना. २ सेवा करना, सेवा करके सन्तुष्ट करना।

सच समवाये (१।७२३, उ०, सचति, ते) १ पूरा समझना, अच्छी तरह जानना. २ सम्बन्धी होना, संसर्गी होना।

सञ्ज सङ्गे (१।७१३, प०, सजति[1]) १ आलिङ्गन करना, गले लगाना. २ सटे रहना, चिपके रहना. ३ सम्बन्धी होना। **अव**—१ लटकना, हिलना, लटके रहना। **आ**—१ अनुरक्त होना, आसक्त होना। **व्या**—१ झगड़ना, हाथापाई करना।

सट अवयवे (१।२०६, प०, सटति) १ भाग होना, हिस्सा होना, अवयव होना. २ अवयव रूप से सटकर रहना।

सट्ट हिंसायाम् (१०।१०१, उ०, सट्टयति, ते) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना।

सत्र सन्तानक्रियायाम् (१०।३२७, आ०, सत्रयते) १ फैलाना, विस्तार करना. २ सम्बन्ध करना, संसर्गी होना।

सद पद्यर्थे — गतौ(१०।२५८,आङ्-पूर्वः, उ०, आसादयति, ते, आसदति[2], ते) १ चढ़ाई करना. २ जाना।

---

१. दंशसञ्जस्वञ्जां शपि (अष्टा० ६।४।२५) से शप्परे अनुनासिक का लोप।

२ आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप्। सायणक्षीरस्वाम्यादयः 'आसीदति' इत्येवं सीदादेशं ब्रुवते। सीदादेशविधायके पाघ्रा०(अष्टा० ७।३।७८)

सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (१।५६३; ६।१३६, सीदति) १ जाना, चलना. २ शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना. ३ सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना. ४ भग्न करना, नष्ट करना । **अव**—१ क्लान्त होना, थकना, बलहीन होना. २ पूर्ण करना, समाप्त करना । **समा**—१ प्राप्त होना, मिलना, इच्छितार्थ की प्राप्ति होना । **उत्**—१ ऊपर चढ़ना. २ नष्ट करना । **उप**—१ पास जाना । **नि** - १ ऊपर या भीतर बैठना. २ खड़ा रहना. ३ पालन करना, संभालना । **प्र**—१ आनन्दित होना, सुखी होना. २ प्रफुल्लित होना, खिलना. ३ उत्तम दशा को प्राप्त होना. ४ सुखी करना, सन्तुष्ट करना. ५ स्वच्छ करना, शुद्ध करना. ६ स्मित करना, मुस्कराना । **वि** - १ अशान्तचित्त होना, खिन्न होना, दुःखी होना, श्रान्त होना, थकना । **सम्** - १ इच्छितार्थ की प्राप्ति होना. २ मण्डली में रहना ।

सन संभक्तौ (१।३१३, प०, सनति) १ सेवा करना, चाकरी करना ।

सनु दाने (८।२, उ०, सनोति. सनुते) १ देना, दान करना. २ सेवा करना, पूजा करना. ३ सत्कार करना ।

सप समवाये (१।२८४, प०, सपति) १ पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना. २ संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना ।

सपर पूजायाम् (११।१६, प०, सपर्यति) १ पूजा करना, सेवा करना ।

सभाज प्रीतिसेवनयोः प्रीतिदर्शनयोः प्रीतिदर्शने वा (१०।३१२, प०, सभाजयति) १ प्रीति करना, स्नेह करना, तृप्त करना. २ सेवा करना. ३ देखना. ४ प्रीति या स्नेहपूर्वक देखना ।

सम अवैक्लव्ये (१।५७२, प०, समति) १ न घबराना, एक समान रहना । **णिच**[1]—(समयति) १ न घबराने देना, हिचकिचाने से रोकना ।

समी परिणामे (४।११२, प०, सम्यति) १ परिणाम होना, रूपान्तर होना ।

सम्ब संबन्धने च (१०।२४, उ०, सम्बयति, ते) १ संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना ।

'शदसदां' पाठे साहचर्यपरिभाषया शद्लृसहचरितयोः भ्वादिकतौदादिकयोः सद्लृ धातोरेव ग्रहणं भवति, तेन नेह सीदादेशः । अत एव आयुर्वेदिककाश्यपसंहितायाम् 'अभिसदेत्' (=अभ्यागच्छेदित्यर्थः) पदं प्रयुज्यते ।

१. हेतुमण्णिचि घटादित्वान्मित्वे मितां ह्रस्वः (अष्टा० ६।४।९२) इति ह्रस्वत्वम् ।

सम्बर संभरणे (११।४१, प०, सम्बर्यति) १ पालन करना. २ बटोरना, एकत्र करना।

सम्भूयस् प्रभूतभावे (११।४०, प०, सम्भूयस्यति) १ बहुत होना।

सर्ज अर्जने (१।१३४, प०, सर्जति) १ उपार्जन करना, मिलाना, पाना, प्राप्त करना. २ प्राप्त होना।

सर्ब गतौ (१।२८८, प०, सर्बति) १ जाना।

सर्व हिंसायाम् (१।३८६, प०, सर्वति) १ जाना. २ दुःख देना, पीड़ा करना।

सल गतौ (१।३६८, प०, सलति) १ जाना, सरकना. २ कांपना, थरथराना।

सस ससि (संस्) स्वप्ने (२।७१, प०, सस्ति, संस्ति) १ सोना।

सस्ज गतौ (१।११८, प०, सज्जति) १ जाना. २ तैयार होना, सिद्ध होना।

सह मर्षणे (१।५६१, आ०, सहते; १०।२३३, उ०, साहयति, ते, सहति[1]) १ सहना, सहन करना. २ शक्तिमान् होना. ३ सन्तुष्ट होना। **उत्**—१ उत्साहित होना, आनन्दित होना. २ उद्योग करना, यत्न करना। **प्र**—१ जुल्म करना, बलात्कार करना। **वि**—१ दृढ़ निश्चय करना, निर्णय करना, ठहराना।

सह चक्यर्थे[2] (४।२०, प०, सह्यति) १ तृप्त होना, प्रसन्न होना. २ सहन करना, प्रतिरोध करना।

साध संसिद्धौ (५।१७, प०, साध्नोति) १ पूर्ण करना, सिद्ध करना. २ जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, ३ साधना करना।

सान्त्व सामप्रयोगे (१०।३७, उ०, सान्त्वयति, ते) १ सान्त्वना देना, समाधान करना, विवेक की बातें कहना।

साम सान्त्वप्रयोगे (१०।३०४, प०, सामयति) १ सान्त्वना देना, समाधान करना, शान्त करना।

साम्ब संबन्धने (१०।२६, उ०, साम्बयति, ते) १ एकत्र होना, संयुक्त होना, संयोग करना, मिलाप करना।

सार दौर्बल्ये (१०।२६३, उ०, सारयति, ते) १ दुर्बल होना।

सिच क्षरणे (६।१४३, उ०, सिञ्चति[3], ते) १ प्रोक्षण करना, २ छींटा देना. ३ सींचना।

सिञ् बन्धने (५।२, उ०, सिनोति, सिनुते; ९।५ उ०, सिनाति, सिनीते) १ बांधना, गूंथना. २ फन्दे से पकड़ना।

---

१. आधृषाद्वा (१०।२३०) से पक्ष में शप्। २. तृप्तौ प्रतिघाते चेत्यर्थः।
१. शे मुचादीनाम् (अष्टा० ७।१।५९) से नुम्।

अध्यव—१ निश्चय करना. २ श्रम करना. ३ सिद्ध करना, हेतु पूर्ण करना । व्यव—१ उद्योग करना, धन्धा करना । वि—१ कारणीभूत होना ।

सिट अनादरे (१।१९८, प०, सेटति) १ अपमान करना, तिरस्कार करना ।

सिधु गत्याम् (१।३७, प०, सेधति) १ जाना । नि—१ रोकना ।

सिधु संराद्धौ (४।८१, प०, सिध्यति) १ सिद्ध होना, जीत होना. २ अमानवी पराक्रम की सिद्धि के लिए आरम्भ किए हुए कर्म की समाप्ति करना. ३ पूर्ण होना, समाप्त होना ।

सिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च (१।३८, प०, सेधति) १ आज्ञा करना, हुक्म करना. २ धर्माधिकार की दीक्षा देना, उपाध्याय करना. ४ मंगल कर्म करना । नि—प्रति—१ निषेध करना, मना करना । प्र—१ प्रसिद्ध होना, कीर्तिमान् होना ।

सिभु सिम्भु हिंसार्थः (१।२९४, प०, सेभति, सिम्भति) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना. २ प्रकाशित होना, चमकना, ३ भाषण करना, बोलना ।

सिल उञ्छे (६।७२, प०, सिलति) १ बीनना, एक एक दाना चुगना ।

सिवु तन्तुसन्ताने (४।२, प०, सीव्यति) १ सीना, सिलाई करना. २ बीजारोपण करना, बोना, रोपना ।

सु प्रसवैश्वर्ययोः (१।६७४, प०, सवति; २।३४, प०, सौति) १ उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना. २ गर्भ धारण करना. ३ अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना । प्र—१ उत्पन्न करना, प्रसूत होना, जनना. २ गर्भ धारण करना ।

सुञ् अभिषवे (५।१, उ०, सुनोति, सुनुते) १ यज्ञान्त स्नान करना. २ स्नान करना, नहाना. ३ यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना. ४ दबाना, हिलाना । अभि—१ प्रोक्षण करना, मार्जन करना, सींचना. २ स्नान करना, नहाना ।

सुख तत्क्रियायाम् (१०।३५७, उ०, सुखयति, ते; ११।१५, प०, सुख्यति) १ सुखी करना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना २ सुख का अनुभव करना, आनन्दानुभव करना ।

सुट्ट अनादरे (१०।३१, उ०, सुट्टयति, ते) १ अपमान करना, तिरस्कार करना. २ अल्प होना. ३ थाह लगाना ।

सुभ सुम्भ भाषणे हिंसायाञ्च

(१।२६५ पाठा०[1], प०, सोभति, सुम्भति; शोभार्थे –६।३३ पाठा०,प०, सुभति, सुम्भति) १ बोलना. २ दुःख देना, मारना. ३ सुन्दर होना, खूबसूरत होना ।

सुर ऐश्वर्यदीप्त्योः (६।५१, प०, सुरति) १ अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना. २ चमकना ।

सुह चक्यर्थे[2] (४।२०, प०. सुह्यति) १ तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना. २ सहना, सहन करना. पराक्रमी होना, शक्तिमान् होना, समर्थ होना ।

सू प्रेरणे (६।११७, प०, सुवति) १ भेजना, उड़ाना, कार्य में लगाना ।

सूङ् प्राणिगर्भविमोचने (प्राणिप्रसवे (२।२४, आ०, सूते; ४।२२, आ०, सूयते) १ गर्भ धारण करना, जनना. २ उत्पन्न करना ।

सूच पैशुन्ये (१०,२६६, उ०, सूचयति, ते) १ अपकार की इच्छा से कहना. २ सूचना करना, बात कहना, जताना. ३ दूसरे की न्यूनता दिखाना ।

सूत्र वेल्टने विमोचने च (१०।३२९, उ०, सूत्रयति, ते) १ सून से लपेटना, रस्मी बांटना. २ मुक्त करना ।

सूद क्षरणे (१।२०, आ०, सूदते; १०।१८६, उ०, सूदयति, ते) १ टपकना, झरना. २ रखना, अमानत रखना. ३ पवित्र करना, शुद्ध करना. ४ पीडा करना, दुःख देना. ५ क्षत करना, घाव करना.. ६ मार डालना या मारने का यत्न करना ।

सूर्क्ष आदरे (१।४४८, उ०, सूर्क्षति, ते) १ आदर सत्कार करना । **अनादरे च**[3]—१ आदर न करना ।

सूर्क्ष्य ईर्ष्यार्थः (१।३४१, प०, सूर्क्ष्यति) १ मत्सर करना, परोत्कर्ष न सहना. २ दूसरे का अपराध सहन नहीं करना ३ अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना ।

सूष प्रसवे (१।४५६ पाठा०[4], प०, सूषति) १ गर्भधारण करना, जनना ।

सृ गतौ (१।६६६, प०, सरति; ३।१६, प०, ससर्त्ति) १ जाना, सरकना । **अनु**—१ पश्चात गमन करना,

---

१. द्र० क्षीरतर० १।२१२ ।।

२. तृप्तौ प्रतिघाते चेत्यर्थः, चकेस्तदर्थत्वात् ।

३. विपरीत अर्थ के लिये तुलना करो—**यु मिश्रणे अमिश्रणे च** (२।२६) ।

४. द्र० क्षीरतर० १।४५२ ।।

पीछे पीछे जाना. २ दूसरे को देख के वैसा करना। **अप**—१ लौटना, पीछे जाना। **अभि** - १ चारों ओर फैलना. २ सहगमन करना, साथ जाना। **उप**—१ पास जाना। **प्र**—१ आगे जाना. २ आगे आना. ३ फैलना। **वि**—१ आना. २ अलग अलग जाना. ३ छोड़ के आगे जाना। **निस्**—१ निकलना।

सृज विसर्गे (४।६७, आ०, सृज्यति; ६।१२४, प०, सृजति) १ छोड़ना, त्याग करना. २ विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना। **उत्--वि - नि**—१ छोड़ देना। **सम्**—१ मिलाप करना या होना।

सृप्लृ गतौ (१।७०६, प०, सर्पति) १ जाना, सरकना। **अप**—१ बाजू में होना, हटना।

सृभु सृम्भु (१।२६३, प०, सर्भति, सृम्भति) १ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना।

सेकृ गत्यर्थः (१।६६, आ० सेकते) १ जाना।

सेलृ गतौ (१।३६४, प०, सेलति) १ जाना. २ गतिशील करना, गति देना. ३ प्राप्त करना, बिक्री द्वारा धन प्राप्त होना।

सेवृ सेवने (१।३३७, आ०, सेवते) १ सेवा करना, चाकरी करना, शुश्रूषा करना. २ विश्वास करना, भरोसा रखना. ३ पूजा करना. ४सेवन करना. ५ अनुसरण करना।

सै क्षये (१।६५२, प०, सायति) १ ह्रास होना, कम होना।

सो अन्तकर्मणि (४।३८, प०, स्यति) १ विध्वंस करना, नष्ट करना. २ नष्ट होना, भग्न होना।

स्कन्दिर् (स्कन्द्) गतिशोषणयोः (१।७०६, आ०, स्कन्दते) १ जाना. २ सूखना। **अव**—१ चढाई करना, हल्ला करना।

स्कभि (स्कम्भ्) प्रतिबन्धे (१।२७१, आ०, स्कम्भते; **सौत्र**[1]—स्कम्नोति, स्कम्नाति[1]) १ हरकत करना, रोकना, प्रतिबन्ध करना. २ मूर्ख होना, पागल होना, मतिमन्त होना।

स्कुञ् आप्रवणे (६।६, उ०, स्कुनाति, स्कुनीते) १ कूदना, फुदकना, उडाना. २ ऊपर उठाना. ३ आच्छादित करना, ढकना।

स्कुदि (स्कुन्द्) आप्रवणे (१।८, आ०, स्कुन्दते) १ चलना, कूदना. २ ऊपर उठाना।

स्कुम्भु प्रतिबन्धे (**सौत्र**[1]—स्कुभ्नाति[1], स्कुभ्नोति) १ प्रतिबन्ध

---

१. **स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भु०** (अष्टा० ३।१।८२) सूत्र से 'श्ना' और 'श्नु' विकरण।

करना, हरकत करना, रोकना. २ धारण करना ।

स्खद स्खदने (१।५१६, आ०, स्खदते) १ जीतना, पराजय करना, हटाना. २ कतरना, तोडना. ३ स्थिर करना, दृढ करना. ४ खाना, भक्षण करना. ५ श्रान्त करना, कष्ट देना, थकना. ६ मार डालना या दुःख देना, पीडा करना, भंग करना ।

स्खल संचलनें (१।३६५, प०, स्खलति) १ जाना. २ गिरना, च्युत होना. ३ ठोकर लगना ।

स्तक प्रतिघाते (१।५३१, प०, स्तकति) १ रोकना, हरकत करना ।

स्तगे संवरणे (१।५३६, प०, स्तगति) १ आच्छादित करना ।

स्तन शब्दे (१।३१२, प०, स्तनति) १ शब्द करना, आवाज करना ।

स्तन देवशब्दे (१०।२८५, उ०, स्तनयति,ते) १ मेघ की गर्जना होना ।

स्तभि (स्तम्भ) प्रतिबन्धे (१। २७१, आ०, स्तम्भते) १ बन्द करना, रोकना, अवरोध करना. २ जड़बुद्धि होना, मूर्ख होना. ३ दृढ़ होना, खम्भे के समान अचल होना. ४ चकित होना, विस्मय युक्त होना. ५ स्तब्ध होना, नष्टेन्द्रिय होना, जडीभूत होना ।

स्तम अवैक्लव्ये वैक्लव्ये वा (१। ५७२, प०, स्तमति) १ भ्रान्त नहीं होना. २ भ्रान्त होना, व्यग्रचित्त होना ।

स्तम्भु प्रतिबन्धे (सौत्र:[1], प०, स्तम्नोति[1], स्तम्नाति[1]) १ प्रतिबन्ध करना, रोकना. २ जड़बुद्धि होना, मूर्ख होना ।

स्तिघ आस्कन्दने (५।१९, आ०, स्तिघ्नुते) १ हल्ला करना, घेर लेना ।

स्तिपृ क्षरणार्थः (१।२५२, आ०, स्तेपते) १ टपकना, झरना, चूना. २ प्रोक्षण करना. सींचना ।

स्तिम स्तीम आर्द्रीभावे (४।१७, प०, स्तिम्यति, स्तीम्यति) १ गीला होना, भीगना, भाप बनना ।

स्तुच प्रसादे (१।१०६, आ०, स्तोचते) १ सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना. २ प्रकाशित होना, चमकना, तेजस्वी होना ।

स्तुञ् स्तुतौ (२।३६, उ०, स्तौति, स्तुते; वेदे—स्तवीति[2], स्तवीते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ पूजा करना, अर्चा करना. ३ सेवा करना, भजन करना ।

---

१. स्तम्भुस्तम्भु० (अष्टा० ३।१।८२) से 'श्ना' और 'श्नु' विकरण ।

२. द्र० तुरुस्तुशम्यमः० (अष्टा० ७।३।९५) ।

स्तुप समुच्छ्राये (४।१२५, क्षीरतर० पाठा०, प०, स्तुप्यति; १०।१४३, उ०, स्तोपयति, ते) १ ढेर करना, राशि करना।

स्तुभु स्तम्भे (१।२७८, प०, स्तोभति) १ अवरोध करना, रोकना. २ मूर्ख होना, मन्दमति होना।

स्तूप समुच्छ्राये (४।१२५ क्षीरतर० प०, स्तूप्यति; १०।१४३, पाठा०[1], उ०, स्तूपयति, ते) १ ढेर लगाना, राशि करना।

स्तृक्ष गतौ (१।४४२, प०, स्तृक्षति १ जाना।

स्तृञ् आच्छादने (५।६, उ०, स्तृणोति, स्तृणुते) १ वस्त्रादि से आच्छादित करना, ढकना। वि—१ फैलना, विस्तार होना या करना।

स्तृहू स्तृंहू[2] हिंसार्थः (६।६०, प०, स्तृहति, स्तृंहति) १ मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना।

स्तॄञ् आच्छादने (९।१३, उ०, स्तृणाति, स्तृणीते) १ वस्त्रादि से आच्छादित करना, वस्त्र ओढाना।

स्तेन चौर्ये (१०।३१८, उ०, स्तेनयति, ते) १ चुराना, मूसना, लूटना।

स्तेपृ क्षरणार्थः (१।२५२, आ०, स्तेपते) १ टपकना, चूना. २ सींचना।

स्तै वेष्टने (१।६५६, प०, स्तायति) १ घेरना, लपेटना, वेष्टित करना, रोक रखना।

स्तोम श्लाघायाम् (१०।३५१, उ०, स्तोमयति, ते) १ प्रशंसा करना, स्तुति करना. २ आत्मश्लाघा करना, शेखी बघारना. ३ मुंह देख के बोलना, खुशामद करना।

स्त्यै शब्दसंघातयोः (१।६५०, प०, स्त्यायति) १ शब्द करना, आवाज करना. २ भीड़ होना. ३ घेरना, फैलना।

स्थगे संवरणे (१।५३४ क्षीरतर०, प०, स्थगति; १० क्वाचित्कः, उ०, स्थगयति, ते) १ रोकना, कार्य को बीच में बन्द करना. २ ढांकना, छिपाना।

स्थल स्थाने (१।५७७, प०, स्थलति) १ स्थिर होना, थमना. २ स्तब्ध होना, खड़ा रहना।

स्था गतिनिवृत्तौ (१।६६२, प०, तिष्ठति) १ स्थित होना, ठहरना. २ वाट जोहना, मार्ग प्रतीक्षा करना। (आ०, तिष्ठते[3]) १ विनति करना, गिड़गिड़ाना. २ अपना अभिप्राय दूसरे

---

१. द्र० क्षीरतर० १०।१२२। २. द्र० क्षीरतर० ६।५७।

३. द्र० अष्टा० १।३।२३। उपसर्गों के योग के लिये अष्टा० १।३।२२—२६॥

को समझाना। **अधि**—१ पदारुढ होना, अधिकारारुढ होना. २ ऊपर रहना, ऊपर बैठना. ३ जीतना, बढ़ना, अधिक होना। **अनु**—१ यथा-शास्त्र बर्तना. २ काम में लाना, उपयोग करना. ३ सटे रहना, लटकना, चिपक रहना। **अव**—१ सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना, २ थमना, स्थिर रहना। **आ**—(आ०) १ निश्चय पूर्वक बुलाना. २ योजना बनाना, नियमित करना, (प०) अधिरुढ होना, ऊपर बैठना। **उत्**—१ खड़ा होना, आसन से उठना, (आ०) १ प्राप्ति के लिये ढूंढना, खोजना। **उप**—१ प्रशसा करना, स्तुति करना. २ पूजा करना, भजन करना. ३ देव को प्रसन्न करना. ४ मित्र की नई आदरातिथ्य करना, सम्भावना करना. ५ जाना या रहना. ६ पास से जाना, होकर जाना. ७ आलिङ्गन करना, गले लगाना, (आ०) प्राप्ति की इच्छा करना, मिलने का हेतु रखना। **नि**—१ रखना, स्थापित करना। **पर्यव**—१ अचल होना स्थिर होना। **प्र**—१ जाना. २ आगे जाना। **प्रोत्**—१ आसन पर से उठना, खड़ा रहना। **प्रति**—१ देव के समान हाथ जोड़ के खड़े रहना, परमेश्वरार्पित होना। **वि**—१ अलग खड़ा रहना, दूर खड़ा रहना. २ थकना, बाट जोहना। **व्यव**—१ आज्ञा करना, हुक्म करना। **सम्**—१ अच्छा होना, भला होना. २ पास होना. ३ पूर्ण होना, पूरा होना. ४ एक मत होना। **समा**—१ करना, आचरण करना, बर्तना। **समुत्**—१ उठ खडा रहना। **सम्प्र**—१ प्रवास करना, परदेश जाना. २ आगे जाना।

स्थुड संवरणे (६।९६, प०, स्थुडति) १ वस्त्र धारण करना, कपड़ा ओढना, पहिनना।

स्थूल परिबृंहणे (१०।३२५, आ०, स्थूलयते) १ मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना।

स्नसु निरसने (४।६, प०, स्नस्यति) १ थूकना।

स्ना शौचे (२।५४, प०, स्नाति) १ स्नान करना, नहाना, शुद्ध होना।

स्निह प्रीतौ (४।८९, प०, स्निह्यति; १०।३९, उ०, स्नेहयति, ते) १ प्रीति करना, स्नेह करना, मित्रता करना. २ स्निग्ध होना।

स्नु प्रस्रवणे (२।३१, प०, स्नौति) १ भाप से टपकना, झरना, चूना।

स्नुसु अदने, आदाने, अदर्शने च (४।५, प०, स्नुस्यति) १ खाना, निगलना. २ ग्रहण करना, लेना. ३ अदृश्य होना, नहीं दिखाई देना. ४ मुख से बाहर फैंकना, थूकना।

स्नुह उद्गिरणे (४।८८, प०, स्नुह्यति) १ कै करना, रद्द करना।

स्नै वेष्टने शोभायाञ्च (१।६५७, प०, स्नायति) १ घेरना, इकट्ठा करना. २ शोभित होना।

स्पदि (स्पन्द्) किञ्चिच्चलने (१।१३, आ० स्पन्दते) १ कांपना, थरथराना. २ सरकना, जाना।

स्पर्ध संघर्षे (१।२, आ०, स्पर्धते) १ प्रतिद्वन्द्वी से आगे बढ़ने का यत्न करना. २ मत्सर करना, दूसरे के अहित की इच्छा करना।

स्पर्श ग्रहणसंश्लेषणयोः (१०।१५० पाठा०, क्वचित्,आ०,स्पर्शयते) १ ग्रहण करना,लेना. २ छूना. ३संयुक्त करना, जोड़ना।

स्पश बाधनस्पर्शयोः (१।६२७, प०, स्पशति) १ अवरोध करना, रोकना. २ प्रसिद्ध करना. ३ एकत्र करना, गुम्फित करना. ४ स्पर्श करना, छूना।

स्पश ग्रहणसंश्लेषणयोः (१०।१५०, आ०, स्पाशयते) १ लेना. २ संयोग करना, जोड़ना।

स्पृ प्रीतिसेवनयोः, प्रीतिचलनयोर्वा (५।१३, प०, स्पृणोति) १ सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना. २ संरक्षण करना, पालना. ३ जाना।

स्पृश संस्पर्शने (६।१३१, प०, स्पृशति) १ स्पर्श करना, छूना. २ संयोग करना, हाथ से लेना। उप—१ स्नान करना, आचमन करना. २ पावों से कुचलना।

स्पृह ईप्सायाम् (१०।२६४, अदन्तः, उ०, स्पृहयति, ते) १ इच्छा करना, चाहना।

स्फट विशरणे (१।२२६ क्षीरतर०, उ०, स्फटति, ते) १ खुलना, खिलना. २ फटना।

स्फटि (स्फण्ट्) विशरणे (१।२२६, क्षीरतर०, प०, स्फण्टति) १ खुलना, खिलना. २ फटना।

स्फर स्फुरणे (६।१००, प०, स्फरति) १ कांपना, थरथराना, धकधकाना. २ प्रकट होना, प्रसिद्ध होना. ३ जाना, जाने लगना।

स्फायी वृद्धौ (१।३२८, आ०, स्फायते) १ मोटा होना, स्थूल होना।

स्फिट अनादरे (१०।४१ पाठा०, उ०, स्फेटयति, ते) १ अनादर करना. २ आच्छादित करना, ढकना।

स्फिट्ट हिंसायाम् (१०।१०१, उ०, स्फिट्टयति, ते) १ मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना।

स्फिठ स्नेहने (१०।४०, उ०, स्फेठयति, ते) १ स्नेह करना, प्रीति करना।

स्फुट विकसने (१।२६०, आ०, स्फोटते; ६।८२, प०, स्फुटति) १ खिलना, प्रफुल्लित होना।

स्फुट भेदने (१०।१६०, उ०, स्फोटयति, ते) १ कतरना, छेदना, तोड़ना, चीरना. २ विकसित करना. ३ मारना या दुःख देना।

स्फुटि (स्फुण्ट्) परिहासे (१०। ४ पाठा०, उ०, स्फुण्टयति, ते; स्फुण्टति[1]) १ ठट्ठा करना, विनोद करना।

स्फुटिर् (स्फुट्) विशरणे (१। २२१, प०, स्फोटति) १ हिंसा करना, नष्ट करना. २ नष्ट होना. ३ विखरना, अलगाव होना, विस्फोट होना।

स्फुड संवरणे (६।१०२, प०, स्फुडति) १ वस्त्रादि से वेष्टित करना, लपेटना, आच्छादित करना।

स्फुडि (स्फुण्ड्) परिहासे (१०। ४, उ०, स्फुण्डयति, ते, स्फुण्डति[1]) १ विनोद करना, ठट्ठा करना।

स्फुर स्फुरणे (६।९९, प०, स्फुरति) १ हिलना, स्फुरित होना. २ जाना. ३ फैलना. ४ सूझना।

स्फुर्च्छा विस्तृतौ (१।१२८, प०, स्फूर्च्छति) १ फैलना, विस्तृत होना। **विस्मृतौ**—१ स्मरण नहीं होना, भूलना।

स्फुर्जा वज्रनिर्घोषे (१।१४४ पाठा०, प०, स्फूर्जति) १ मेघ की गर्जना होना, गड़गड़ाना।

स्फुल संचलने (६।१०१, प०, स्फुलति) १ प्रकट होना, स्पष्ट होना. २ ढेर करना, संचय करना. ३ हिलना, कांपना. ४स्फुरित होना।

स्फूर्च्छा विस्तृतौ (१।१२८ पाठा०, प०, स्फूर्च्छति) १ फैलना, विस्तृत होना। **विस्मृतौ**—भूलना, याद नहीं होना।

स्फूर्जा वज्रनिर्घोषे (१।१४४. प०, स्फूर्जति) १ मेघ की गर्जना होना, गड़गड़ाना।

स्मिङ् ईषद्धसने (१।६७९, आ०, स्मयते) १ मुसकराना, मन्द हास्य करना। **णिच्**—(आ०, स्मापयते[2]) १ डराना। **वि**—१ आश्चर्य करना।

स्मिङ् अनादरे (१०।४२, आ०, स्मापयते) १ अनादर करना, तिरस्कार करना।

स्मिट् अनादरे (१०।४१, उ०, स्मेटयति, ते) १ अनादर करना, तिरस्कृत करना।

स्मील निमेषणे (१।३४७, प०, स्मीलति) १ पलक झपकना।

स्मृ आध्याने (१।५४७, प०, स्मरति) १ उत्सुकता से स्मरण करना. २ स्मरण करना, याद करना। **वि**—१ भूलना, विस्मृत होना।

---

१. इदित् होने से पक्ष में शप्।

२. **नित्यं स्मयतेः** (अष्टा० ६।१।५६) से आत्व, पुक्। **भीस्म्योर्हेतुभये** (अष्टा० १।३।६८) से हेतु से भय में नित्य आत्मनेपद।

स्मृ प्रीतिसेवनयो:, प्रीतिचलनयोर्वा (५।१४, प०, स्मृणोति) १ आनन्दित करना, प्रसन्न करना. २ पालन करना, संरक्षण करना. ३ जाना।

स्यन्दू प्रस्रवणे (१।५११, आ०, स्यन्दते) १ टपकना, झरना, चूना. २ सींचना, छींटा देना. २ जाना। अनु—१ टपकना, झरना, चूना। निस्—१ निकलना, झरना।

स्यम वितर्के (१०।१६२, आ०, स्यामयते) १ चिन्तन करना, मनन करना, विचार करना।

स्यमु शब्दे (१।५७१, प०, स्यमति) १ शब्द करना, आवाज करना।

स्रंसु अवस्रंसने (१।५०४, आ०, स्रंसते) १ गिरना, खिसकना।

स्रकि (स्रङ्क्) गत्यर्थः (१।६६, आ०, स्रङ्कते) १ जाना, सरकना।

स्रम्भु प्रमादे (१।२७६, आ०, स्रम्भते) १ प्रमाद करना. २ चूकना, भूलना।

स्रम्भु विश्वासे (१।५०७, आ०, प्रायेण विपूर्वः—विस्रम्भते) १ विश्वास करना, भरोसा रखना।

स्रिवु गतिशोषणयो: (४।३, प०, स्रीव्यति) १ शुष्क होना, सूखना. २ जाना, सरकना।

स्रु गतौ (१।६७३, प०, स्रवति) १ जाना, सरकना. २ टपकना, झरना, चूना. ३ बहना।

स्रेकृ गत्यर्थः (१।६६, आ०, स्रेकते) १ जाना।

स्रै पाके (१।६५३, क्षीरत० प०, स्रायति) १ पक्व करना, पकाना. २ पिघलाना।

स्वञ्ज परिष्वङ्गे (१।७०३, आ०, स्वञ्जते) १ आलिङ्गन करना, गले लगाना।

स्वद आस्वादने (१।१७, आ०, स्वदते; १०।२२८, उ०, स्वादयति, ते) १ स्वाद लेना, चखना. २ तुष्ट होना, प्रसन्न होना।

स्वन शब्दे (१।५७१, प०, स्वनति) १ शब्द करना, आवाज करना। वि—(विष्वणति[1])। अव—(अवष्वणति) १ सशब्द भोजन करना।

स्वन अवतंसने (१।५५८, प०, स्वनति) १ संवारना, सजाना, अलंकृत करना, सुशोभित करना।

स्वप् शये (२।६१, प०, स्वपिति) १ सोना, निद्रा लेना।

स्वर आक्षेपे (१०।२८८, उ०, स्वरयति, ते) १ शब्द करना, आवाज करना. २ दोष लगाना, निन्दा करना।

---

१. वेश्च स्वनो भोजने (अष्टा० ८।३।६९) चाद् अवाच्च।

स्वर्त गत्यां च[1] (१०।७४, क्षीरतर०, उ०,स्वर्तयति, ते) १ जाना. २ आपद्ग्रस्त होना।

स्वर्द आस्वादने (१।१७, आ०, स्वर्दते) १ स्वाद लेना, चखना. २ आनन्दित होना।

स्वाद आस्वादने (१।२३, आ०, स्वादते; १०।२२६, उ०, स्वादयति, ते) १ स्वाद लेना, चखना. २ मधुर होना, मीठा होना, सुखदायक होना।

ष्विदा स्नेहनमोचनयोः (१।४६६, आ०, स्वेदते) १ गीला करना, चिकना होना. २ छोड़ना, त्याग करना।

ष्विदा अव्यक्ते शब्दे (१।७०५, प०, स्वेदति) १ अस्पष्ट ध्वनि करना, गुनगुनाना।

ष्विदा गात्रप्रक्षरणे (४।७७, प०, स्विद्यति) १ पसीजना, पसीना छूटना।

स्वृ शब्दोपतापयोः (१।६६६, प०, स्वरति) १ शब्द करना, आवाज करना. २ रोगी होना, बीमार होना. ३ दु:ख देना, पीडा करना, सताना। सम् — १ अच्छा शब्द करना।

स्वॄ हिंसायाम् (९ क्वाचित्कः, उ०, स्वृणाति स्वृणीते) १ मार डालना या दुःख देना।

ह

हट दीप्तौ शब्दसंघातयोश्च (१।२०५, प०, हटति) १प्रकाशित होना, चमकना २ शब्द करना. ३ वस्तुओं को इकठ्ठा करना[2]।

हठ प्लुतिशठत्वयोः, बलात्कारे च (१।२२७, प०, हठति) १ फुदकना, फुदकते जाना. २ दुष्ट होना, घातकी होना. ३ जकड़ना, बांधना. ४ बलात्कार करना, जुल्म करना।

हद पुरीषोत्सर्गे (१।७०४, आ०, हदते) १ टट्टी करना, शौच करना।

हन हिंसागत्योः[3] (२।२, प०,

---

१. चात् कृच्छ्रजीवने। क्षीरतर० १० ७४॥

२. हिन्दी में प्रयुज्यमान हाट शब्द इसी धातु से निष्पन्न शुद्ध संस्कृत शब्द है—हट्यन्ते संहन्यन्ते विक्रयाय वस्तून्यत्र इति 'हाटः'।

३. 'गति' के ज्ञान गमन और प्राप्ति ये तीन अर्थ प्राचीन आचार्यों ने माने हैं। अनेक लोग अतिथिवाचक **गोघ्न** शब्द का अर्थ—'जिस के लिए गौ मारी जाती है' ऐसा करते हैं। यह अर्थ लोक-वेद दोनों से विपरीत है। अमर कोश में गौ का पर्यायवाची **माता** शब्द लिखा है। 'माता' सदा अवध्या होती हैं। गौ के लिए लोक-वेद में **अघ्न्या** शब्द प्रसिद्ध है। अघ्न्या का अर्थ है—हिंसा के अयोग्य। इतना ही नहीं, वेद में **'यदि नो गां हंसि···तं त्वा सीसेन बध्यामो'**······(अथर्व० १।१६।४) में गोघातक को गोली से उड़ा देने की

हन्ति) १ मार डालना. २ प्राप्त करना. ३ जाना. ४ किसी प्रकार समाप्त करना। **अभि**—१ मुख से बजाना। **नि—परि**—१ समूल नष्ट करना। **प्र**—१ ऊपर रखना. २ प्रहार करना, मारना, ठोकना। **प्रति**—१ विरुद्ध पक्ष का खण्डन करना। **व्या**—१ प्रतिबन्ध करना, रोकना। **सम्**—१ हिंसा करना, मारना. २ एकत्र करना, बटोरना। **आ**—(आहते) ठोकना, मारना।

हम्म गतौ (१।३१५, प०, हम्मति[1]) १ जाना।

हय गतौ (१।३४२, प०, हयति) १ जाना. २ पूजा करना, सेवा करना. ३ शब्द करना[2], आवाज करना।

हर्य गतिकान्त्योः (१।३४४, प०, हर्यति) १ जाना. २ इच्छा करना, चाहना. ३ प्रकाशित होना, चमकना।

हल विलेखने (१।५७८, प०, हलति) १ जोतना, हल चलाना।

हसे हसने (१।४७७, प०, हसति) १ हंसना. २ ठट्ठा करना।

हाक् त्यागे (३।८, प०, जहाति) १ छोड़ना, परित्याग करना।

हाङ् गतौ (३।७, आ०, जिहीते) १ जाना, चलना।

हि गतौ वृद्धौ परितापे च (५।११, प०, हिनोति) १ जाना. २ प्रेरणा करना, भेजना. ३ स्थूल होना, बढ़ना।

हिक्क अव्यक्ते शब्दे (१।६०१, उ०, हिक्कति, ते) १ अस्पष्ट शब्द करना. २ हिचकी आना, हिचकियें लेना।

हिट आक्रोशे (१।२११, प०, हेटति) १ गाली देना, निन्दा करना, आक्रोश करना।

आज्ञा है। **गोघ्न** के समान एक शब्द **हस्तघ्न** भी है। इसका अर्थ है—'दस्ताना'। इस शब्द में **'हस्तं हन्ति प्राप्नोति वेष्टयति यः स हस्तघ्नः'** व्युत्पत्त्यनुसार हन धातु प्राप्त्यर्थक ही है, यह निर्विवाद है। इसलिए **गोघ्न** शब्द का शुद्ध अर्थ है—जिस अतिथि के लिए गौ प्राप्त कराई जाये। गृह्य और धर्मसूत्रों के अनुसार छः प्रकार के अतिथि ही **अर्घ्य** (विशेष विधि से पूजनीय) होते हैं। इनमें भी **गौ ब्राह्मणस्य वरः** के नियमानुसार ब्राह्मण अतिथि ही 'गोघ्न' पदवाच्य है।

१. महाभाष्य अ० १ पा० १ आ० १ से जाना जाता है कि इस धातु का गत्यर्थ में प्रयोग प्राचीन काल में सौराष्ट्र में होता था—**हम्मतिः सुराष्ट्रेषु**। २. घोड़े का हिनहिनाना। हय=घोड़ा।

हिट कालात्यये (९ क्वाचित्कः, प०, हिट्णाति) १ नियत काल का उल्लंघन करना, योग्य काल के पश्चात् जन्म लेना।

हिडि (हिण्ड्) गत्यानादरयोः (१।१६७, आ०, हिण्डते) १ घूमना, भटकना. २ अपमान करना, अनादर करना, तिरस्कार करना।

हिल भावकरणे (६।७१, प०, हिलति) १ हाव भाव करना, नखरा करना. २ लीला करना, क्रीडा करना।

हिवि (हिन्व्) प्रीणनार्थः (१।३९२, प०, हिन्वति) १ तृप्त होना, शान्त होना. २ तृप्त करना, शान्त करना।

हिष्क हिंसायाम् (१०।१५४, आ०, हिष्कयते) १ मारना, दुःख देना।

हिसि (हिंस्) हिंसायाम् (७।१८, प०, हिनस्ति; (१०।२५६, उ०, हिंसयति, ते, हिंसति[1]) १ मारना, वध करना, दुःख देना, सताना।

हु दानादनयोः आदाने च (३।१, प०, जुहोति) १ देना, यज्ञ करना. २ खाना, भक्षण करना. ३ लेना, ग्रहण करना। वेदे—१ तृप्त करना[2]।

हुड संघाते (६।९८, प०, हुडति) १ बटोरना, एकत्र करना। **निमज्जने**[3]—१ डूबना, पानी में उतरना।

हुडि (हुण्ड्) संघाते वरणे च (१।१६८, १७६, आ०, हुण्डते) १ बटोरना, एकत्र करना. २ मान्य करना, कबूल करना. ३ लेना।

हुडृ गतौ (१।२४४, प०, होडति) १ जाना, होड लगाना।

हुर्च्छा कौटिल्ये (१।१२६, प०, हूर्च्छति) १ मन तथा आकृति वक्र होना. २ छिपना. ३ दबे पावों भाग जाना. ४ हटना. ५ ठमना।

हुल गतौ (१।५८४, प०, होलति) १ जाना. २ हिंसा करना, मार डालना. ३ आच्छादित करना, ढकना।

हूडृ गतौ (१।२४४, प०, हूडति) १ जाना, सरकना।

हृ प्रसह्य करणे (३।१५, प०, जिहर्ति) १ बलात्कार करना. २ जबर जस्ती करना।

हृञ् हरणे (१।६४०, उ०,

१. इदित् करण से पक्ष में शप्।

२. जुहोति चास्त्येव प्रक्षेपणे वर्तते, अस्तिप्रीणात्यर्थे वर्तते······यथा-स्वाऽग्निहोत्रं जुहोति—अग्निं प्रीणाति। महाभाष्य २।३।३॥

३. क्षीरत० ६।९०॥

हरति, ते) १ ले जाना, पहुंचाना. २ लेना, ग्रहण करना. ३ नष्ट करना. ४ चोरी करना, चुराना, मूसना। **अनु**—१ अनुसरण करना, अनुगमन करना, दूसरे का सा करना। **अप**—१ बलात् ले जाना. २ पीछे फैंकना, हटाना. ३ चोरी करना, चुराना। **अभि**—१ हल्ला करना, मार पीट करना। **अभ्या**—१ तर्क वितर्क करना, वाद करना, शुद्धाशुद्ध का विचार करना। **अभ्युत्**—१ देना, अर्पण करना। **अभिव्या**—१ उच्चारण करना। **अव**—१ पुनः सम्पादन करना, फिर प्राप्त करना. २ शासन करना, दण्ड देना। **उत्**—१ ऊपर लेना, उद्धार करना. २ देश से निकाल देना। **उदा**—१ कहना. २ दृष्टान्तपूर्वक स्पष्ट करना, उदाहरण पूर्वक कहना। **उप**—१ भेंट देना. २ समीप लाना। **उपसम्**—१ रखना, नहीं देना. २ सिकोड़ना, समेटना. ३ समाप्त करना, तमाम करना। **नि**—१ ठिठुरना, जमना। **निर्**—१ अपमान करना। **निरा**—१ उपवास करना, विना आहार के रहना, भूखा रहना। **परि**—१ गाली देना, सरापना, निन्दा करना. २ छोड़ना, त्याग करना. ३ रोकना. ४ सार या तत्व निकालना। **प्र**—१ प्रहार करना, मारना, ठोकना। **प्रति**—१ नजर रखना। **प्रत्या**—१ इन्द्रिय-दमनपूर्वक ध्यान करना। **प्रतिसम्**—१ छोड़ना, त्यागना. २ अप्रतिष्ठा करना। **वि**—१ क्रीडा करना, विलास करना, खेलना। **व्या**—१ बोलना, कहना। **व्यव**—१ उद्योग करना, धन्धा करना. २ वाद बखेड़ा आदि करना। **सम्**—१ मार डालना, जान से मारना. २ समेटना, सिकोड़ना. ३ नष्ट करना. ४ बटोरना। **समा**—१ एकत्र करना, बटोरना। **समभिव्या**—१ एक मत से या सम्मति से योजना करना या रचना, युक्ति निकालना, संयोजन करना। **समुदा**—१ कथन करना, कहना। **समुप**—१ एकत्र करना. २ देना। **सम्प्र**—(आ०) १ युद्ध करना, लडाई करना, लडना। **व्यति**—(आ०) १ एक मत से चोरी करना। **अनु**—(आ०) १ परम्परागत व्यवहार का सेवन करना।

हृणीङ् रोषणे लज्जायाञ्च (११। ३१, आ०, हृणीयते) १ शरमाना, लज्जित होना, क्रोध करना, गुस्सा करना।

हृष तुष्टौ (४।११९, प०, हृष्यति) १ हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना।

हृषु अलीके (१।४७१, प०, हर्षति) १ झूठ बोलना, मिथ्या बोलना।

हेट विबाधायाम् (१ क्वाचित्कः, आ०, हेटते) १ प्रतिरोध करना।

हेठ विबाधायाम् (१।१६५, प०,

हेठति) १ रोकना. २ निष्ठुर होना, क्रूर होना।

हेठ भूतप्रादुर्भावे (९।६३, प०, हेठ्नाति) १ जन्म देना, उत्पन्न करना. २ नियतकाल का अतिक्रमण करके पैदा होना।

हेड वेस्टने (१।५२८, प०, हेडति) १ लपेटना, घेरे में लेना।

हेडृ अनादरे (१।१८३, आ०, हेडते) १ अपमान करना, तिरस्कार करना।

हेपृ गतौ (१।२५९, आ०, हेपते) १ जाना।

हेषृ अव्यक्ते (१।४१३, आ०, हेषते) १ हिनहिनाना (घोड़े का शब्द)।

होडृ अनादरे (१।१८३, आ०, होडते) १ अपमान करना, तिरस्कार करना।

होडृ गतौ (१।२४४, प०, होडति) १ होना. २ होड करना।

ह्नुङ् अपनयने (२।७४, आ०, ह्नुते) १ छिपाना, लुकाना. २ चुराना, ले जाना, दबा लेना। **आ—नि—** १ छिपाना, लुकाना।

ह्मल संचलने (१।५४६, प०, ह्मलति) १ कांपना, थरथराना।

ह्लगे संवरणे (१।५३६, प०, ह्लगति) १ ढकना, आच्छादित करना, लपेटना।

ह्लप व्यक्तायां वाचि (१०।१२६ पाठा०, उ०, ह्लापयति, ते) १ स्पष्ट बोलना।

ह्लस शब्दे (१।४७२, प०, ह्लसति) १ शब्द करना, आवाज करना। **अल्पीभावेऽपि—** १ कम होना, अल्प होना।

ह्लाद अव्यक्ते शब्दे (१।२१, आ० ह्लादते) १ अस्पष्ट शब्द करना।

ह्री लज्जायाम् (३।३, प०, जिह्रेति) १ लज्जित होना, शरमाना।

ह्रीच्छ लज्जायाम् (१।१२५, प०, ह्रीच्छति) १ लज्जित होना, शरमाना।

हुड हूड संघाते (६ क्वाचित्कः, प०, हुडति, हूर्डा।) १ बटोरना. २ जाना, सरकना।

ह्लेषृ अव्यक्ते शब्दे (१।४१३, आ०, ह्लेषते) १ हिनहिनाना (घोड़े का शब्द)।

ह्लगे संवरणे (१।५३६, प०, ह्लगति) १ आच्छादित करना, ढकना, लपेटना।

ह्लप व्यक्तायां वाचि (१०।१२६, प०, ह्लापयति) १ स्पष्टोच्चारण करना. २ बोलना।

ह्लस शब्दे (१।४७२, प०, ह्लसति) १ शब्द करना, आवाज करना।

ह्लादी सुखे अव्यक्ते शब्दे च (१।२२, आ० ह्लादते) १ सुखी होना २ सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, ३ सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना ४ बाघ के जैसा शब्द करना।

ह्वल संचलने (१।५४६, प० ह्वलति; १०, प०, ह्वलयति) १ कांपना, थरथराना, २ भ्रान्त होना, मोहित होना घबराना।

ह्वृ कौटिल्ये (१।६६५, प०, ह्वरति १ वक्र होना, टेढा होना, बांका होना।

ह्वेञ् स्पर्धायाम् शब्दे च (१। ७३३ उ० ह्वयति ते) १ बुलाना, पुकारना, २ नाम लेना, नाम लेके पुकारना, हांक मारना, ३ मांगना, ४ युद्ध के लिये बुलाना, लड़ाई मांगना. ५ बराबरी करना, स्पर्धा करना, ६ लड़ाई करना. ७ शब्द करना, आवाज करना। उप— नि—वि—सम्—आ— (आ०[1]) १ युद्ध के लिये बुलाना।

इति 'अजयमेरु[2]' मण्डलान्तर्गत [3]विरञ्च्यावासाभिजनेन[4]

हरयाणान्तर्गत-'[5]स्वर्णप्रस्थ'-नगरनिवासिना

गौरीलालाचार्यशर्मण: पुत्रेण

युधिष्ठिर मीमांसकेन

सम्पादित:

संस्कृत-धातु-कोषः

पूर्तिमगात।

---

१. निसमुपविभ्यो ह्वः; स्पर्धायामाङः (अष्टा० १।३।३०, ३१)।

२. 'अजमेर' नाम से प्रसिद्ध।

३. 'विरकच्यावास' नाम से प्रसिद्ध।

४. अभिजन=पूर्वजों का स्थान।

५. 'सोनीपत' नाम से प्रसिद्ध।

संस्कृत-व्याकरण के अध्ययन
में
विशेष सहायक ग्रन्थ

१. **वर्णोच्चारण-शिक्षा-** ऋषि दयानन्द ३.००

२. **निघण्टु-निर्वचनम्-** देवराजयज्वाकृत १५०.००

३. **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः** १२.००

४. **अष्टाधयायीभाष्य-** (संस्कृत-हिन्दी) प्रथमभाग
१४०.००, द्वितीयभाग ७०.००, तृतीयभाग ९०.००

५. **माधवीया-धातुवृत्तिः-** आचार्य सायण रचित धातुपाठ
की प्रामाणिक व्याख्या-सं०-विजयपाल विद्यावारिधि यन्त्रस्थ

६. **पारिभाषिकः**-व्याख्याकार-आचार्य प्रद्युम्न। व्याकरण
की परिभाषाओं की प्रामाणिक व्याख्या- ६०.००

७. **काशिका**-वामनजयादित्य- ५००.००

८. **महाभाष्य**-यु०मी०कृत हिन्दीव्याख्यासहित
प्रथमभाग(१) ६५.००, (२) ६०.००,
द्वितीयभाग ८०.००, तृतीयभाग८०.००

९. **धातुपाठः** (धाातुसूचीसहित) १०.००

१०. **धातुप्रदीप-धातुपाठवृत्ति-** मैत्रेयरक्षित ६०.००

११. **संस्कृतपठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि-**
प्रथमभाग ३५.००, द्वितीयभाग ५०.००
प्रथमभाग का अंग्रेजी अनुवाद ८०.००

१२. **उणादिकोष**-ऋषि दयानन्द ४०.००

१३. **शब्दरूपावली**-बिना रटे स्मरण करने योग्य ८.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान-

१. रामलाल कपूर ट्रस्ट, ग्राम रेवली, पो० शाहपुरतुर्क, जि० सोनीपत-१३१००१(हरियाणा)

२. रामलाल कपूर एण्ड संस, पेपर मर्चेन्ट्स्, २५९६, नई सड़क, दिल्ली।

३. गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली

ट्रस्ट के उद्देश्य

प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण, रक्षा तथा प्रचार, एवं भारतीय संस्कृति,भारतीय शिक्षा, भारतीय विज्ञान और चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

१. राम लाल कपूर ट्रस्ट, ग्राम रेवली,
पो० शाहपुर तुर्क, जिला सोनीपत (हरियाणा)

२. राम लाल कपूर एंड संस पेपर मर्चेन्ट
२५६६, नई सड़क दिल्ली-११०००६

३. राम लाल कपूर एण्ड संस, पेपर मर्चेन्ट,
५८/५०, उजागर भवन, बिरहाना रोड़, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

-: वेदवाणी :-

वैदिक साहित्य, वैदिक धर्म और वैदिक सभ्यता का प्रचार करने वाली एकमात्र उत्कृष्ट मासिक-पत्रिका । प्रतिवर्ष वेदसम्बन्धी अनुसन्धानपूर्ण लेखों से युक्त विशालकाय विशेषाङ्क प्रकाशित होता है । वार्षिक चन्दा ५०.००, विदेश से १० अमेरिकन डालर ।